ईश्वर विहारि विलास

ईश्वर विहारि विलास

મહેતા કુંવરજી નાથાભાઈ કચ્છ-
માનકુવાવાળાએ તેમનાં સ્વ૦ પીતા નાથા-
ભાઈનાં સ્મરણ અર્થે રૂા. ૧૦૦) બુકમાં
આપેલ છે.

realpatidar.com



कच्छ वांढाय निवासी ब्रह्मनिष्ठ महाराजश्री
ओधवरामजी श्रीगुरु लालरामजी.
प्रणित.

श्रीईश्वर विहारी विलास;

जिसमें.

ब्रह्मनिष्ठ पूज्यपाद महात्माश्री विहारीसाहेब ओ. महाराज श्रीईश्वररामजीकी अनुभवी काव्य पद, भजन आर वांढाय द्वाराधीश सब संत महंतोंकी अत्युतम काव्य ओ. संक्षेप चरित्र वर्णित हे ॥

ताको छपाय प्रसिद्ध कर्ता.
मीस्त्री जीबराम पुंजाभाई सुत माधवजी त्रि जीवराम.
कच्छ—हाजापुर

आवृति पहेली

भावनगर,
श्री विद्याविजय प्रिन्टींग प्रेसमां शाह पुरूषोतम गीगाभाइए
मालिकने माटे छाप्युं

सने १९२६ प्रत ५०० संवत १९८३

शुद्धिपत्रक.

पृष्ठअंक.	छंदअंक.	शुद्ध.	अशुद्ध.
४०	—।—	देवासाहेबका	महाराजजीका
६२	—।—	आने	आय
७२	९	स्वामीजीनी	स्वामीश्री
७३	१५	छतां	छतो
७४	२२	क्षण	लक्षण
७५	११	भोगीयारे	भागीयारे
७६	१८	नंदनवन	नंदवन
१०८	९०	मिळके	निलके
१४१	१९५	महंत	म
१७९	२०	कर्म	कम
१८४	३०	दिल	दिज
१८६	१	प्रकाश	प्रलाश
१९१	१९	चित	चिम
२०९	५५	छप्यो	छपम्यो
२१०	५७	हरि	हिर
२१६	७८	नाभि	ताभि
२१७	८१	अति	अतिर

२२४	११०	ए उपदेश	एपदेश
२२९	१२८	ताड	सड
२३८	१६०	अनन्य	अनिन
२४०	१६९	यदुवंश	यदुवं
२४८	४	जब	अब
२६१	५	दाराविहरीकहे	दाराविहारीनां
२९१	४	राम	राक
२९१	७	प्रेमनी	जीननी
२९१	१	मेरम	मोरम
२९६	१	रुपे रमे	रुषे रमे
३०७	३	नात्म	नुत
३१२	६	अन्यव्यरक्ति	अन्मविरक्ति
३३६	४	घनइव	घनदेव
३६६	५	चित	मित
३५९	२	उपदेशात	उपददेशात
३६६	३	करछटके	शिषपटके
३९०	३	जग	जगन
३९५	१	अरुपि	रुपि
४२५	३	मसु	प्र
४३७	४	मया	थया



मीस्त्री जीवंराम पुंजा.

साखे परमार—स्थल हाजापुर.

गुरु ईश्वररामजीना शिष्य.

વિ. વિ. પ્રેસ—ભાવનગર.

realpatidar.com

कच्छ हाजापुर निवासी श्रीयुत मीस्त्रि जीवराम पुंजाभाई सुत माधवजी त्रि. जीवरामको धन्वाद.

गीयामालती छंद.

सुंदर सुजान सयान मन, पावन प्रमानीक पर्महे;
धरमी महा द्रढ धर्मधारी, सरस भारी सर्महे;
प्रति दिवस परउपकारहीके, करत उत्तम कामहे;
श्रीमान हाजापुरनीवासी, मीस्त्रिश्री जीवरामहे.
तनमनसे गुरु वचनमांहि, जाहिको विश्वासहे;
यह प्रगट कीनो प्रेमसे, इश्वर विहारी विलासहे;
अहोनिस हरिगुरु संतके, अनुकुल आठो जामहे;
श्रीमान हाजापुर निवासी, मीस्त्रि श्रीजीवरामहे.

दोहा.

सुत माधवजो सुझहे, सदगुनके भंडार,
प्रतिदिन करता प्रेमसें, पूरण परउपकार. ३

गुरु सेवामे सर्वदा, धारत स्नेह अपार;
आनंदी अविचल रहो, कायम सहपरिवार. ४

कर्ता,

ब्रह्मवेत्ता महाराज लालरामजी गुरु इश्वररामजी



વિ. વિ. પ્રેસ—ભાવનગર.

realpatidar.com

प्रस्तावना.

कच्छ वांढाय द्वाराके स्थापन कर्ता आदि पुरुष ब्रह्मनिष्ठ समदर्शि वचन सिद्ध काव्य-कोविद महात्मा श्रीविहारीसाहेबसें लेके आज-तक द्वाराधीस महंत पर्मप्रतापी प्रसिद्ध होते आये हें. तामेंसे वर्तमान समयमें महाराजश्री ईश्वररामजी महात्मा बडे भजनानंदी ओर सिद्धिवान समर्थ थें. उनोंके सुयश सर्वत्र प्रसिध्ध हे. लेकिन इनोंके यथार्थ चरीत्र और आपश्री-के बनाये हुवे उपदेशिक अनुभवी पद, भजन, आज पर्यंत प्रसिद्ध नहीं हुवे. जोकी वर्तमान समयानुसार विद्याका प्रचार विशेष होनेसे भजनानंदी काव्यके अनेक पुस्तको भारत भु-मोमें प्रगट भये है, तथापि जिसको जहांपर आस्था किंवा श्रद्धा होती हे. और जो सदा-

चारी संत पुरुषोंके समागमी याने शिष्य सेवक समाज है. उनको वे बानी अधिक असरकारक आनंदप्रद प्रीयतम होती हे ताते महाराजश्री ईश्वररामजीके शिष्य समाजमेंसे मुख्य अंजार-के श्रीमान मीस्त्री वलमजी,हीरजी, कल्याणजी. हाजापुरके मीस्त्री जीवराम पुंजाभाई तथा मावजीभाई. आदि ओर रैयाके मीस्त्री दायाभाइ करमसी, तथा जीवराम सुरजी. तथा खीमजी कानजीभाई, और चंडीगाके मीस्त्री, और मंज-लके श्रीमति साध्वी मैयाजी तथा भाटीया सेठ कल्याणजी विठलदास और सुमरी रोहाके प्रेमी पंचाणभाइ इत्यादि बहोतसे सुज्ञ सेवक सजनोंकी संमती ओर भावीक भक्तोंकी भाव-नासें पूर्वके प्रख्यात महात्माओंकी प्रसादीरूप यह अत्युतम काव्य आदी पद भजनका भंडार

रूप ग्रंथ "श्री ईश्वर विहारी विलाश" एसे नाम नियत करके उपरोक्त महान महात्माओकी सार रूप अनुभवी बानी छपायके प्रसिध्ध करनेकी पूर्वन्मे सर्व प्रेमीओकी प्रबल प्रेरणां आज सफल भइहै. क्योंको महान पुरुषोंकी नीती रीति और उनोंका आशय अत्युतम होनेसें अन्य सुज्ञ सजनोंको सुधरनेका साधन और सहायरूप होता है, तातें इस ग्रथमें महात्माश्री विहारीसाहेबका जीवनवृतांत और उनोंकी बनाईहुइ बोधिक रसिक काव्य श्रीकृष्णबाळविनोद, और हरिहर गणेश गिराओ गुरुस्तुति, कुडलीया, सुबोध कुंडलीया, उपदेसिक सवैया आदि चोविस अवतारकी कथा और अनुभवी पद राग है. तथा महाराजश्री क्षेमसागरके पद और संक्षेप वृतांत और महाराजश्री ईश्वरराम-

जीका यथार्थ जीवनचरित्र और उनोंके अत्यु-
तम पद भजन तथा लालरामजी और ओधव-
रामजीके पद भजन और अंतमें महात्माश्री
विहारीसाहेबके शिष्य नारायणदासजीके पद
और बावाश्रो देवासाहेबके शिष्य सेवारामजीके
पद और कव्वी काफी भजन और संध्या स्त-
वनमाला, नित्य नियम, सध्यापाठ और महारा-
जश्री ईश्वररामजीकी स्तुति महात्मा सामभ-
गवानकी बनाई हुई और आदिमें महात्मा हरि-
दासजी डींगरीयावालेकी बनाई हुई रास इत्या-
दि अनेक उपयोगी विषयोंसे भरपुर ज्ञान ध्यान
उज्वल भक्ति लक्षण सहीत सारग्राही सजनों-
को लाभदायक और सर्वत्र पूजनीय ग्रहमें
रखने लायक उत्तम सद विषयोंसे परिपूर्ण यह
पुस्तक प्रगट कीया है सो सर्व सुज्ञ संत महंत

और सेवक सजनों स्नेहमें वांच विचारके मनन करेंगे. विद्या और वाणीका पार नही हे तो बी अपनी मती अनुसार सब कोई प्रभु यश करके प्रसन्न होते हैं, तेसें हमनेंबी सब हरिजनोंके हितार्थ यह पुस्तक प्रसिद्ध कीया है सो आप महाश मान्य करना. एही विनती.

संवत् १९८३ विक्रमार्क.

ली कर्ता.

अथ श्रीईश्वरविहारी विलासकी विषयानुक्रमणिकाः

ॐ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥

अथ पूज्यपाद महात्मा बावाश्रीविहारीसाहेबका संक्षिप्त जीवनवृत्तांत ।

प्रिय सज्जनो !

पवित्र कच्छदेशमें वाढाय ग्राम वर्तमान समयमें सर्वत्र मशहूर और भगवद्भजनपरायण संत महात्मा और भाविक भक्तोंको भजनानंदी माननीय माना जाता है । क्योंकी अनुपम ईश्वर सागरके तीर पर बना हुवा उतम आश्रम आपकी पर्णकुटी बगीचा वन पर्वतादि प्रत्यक्ष प्रतीत

होनेसे मानो दूसरा रम्य ऋषिकेशही दिसता है एसा निवृत्तिपरायण पारमार्थिक धामके स्थापनकर्ता आदिपुरुष बावाश्री विहारीसाहेब कच्छ भाडीया नामक ग्रामके निवासी जातिके धल संज्ञक राजपुत थे, भाडीयामें इनोंका ग्रासवास पूर्ण था.औरअच्छी आमदानी थी । लेकीन इनोका पिता मेघराजजीकी सादी वाढायके सींधलोमेंसे हुइ थी । इन संबंधके लीये मेघराजजी वांढायमें आयके सहकुटंब स्थाई निवासकरके रहे । वे बडे धर्मात्मा और संतोके समागमी श्रद्धावान् थे । यहांपर इनोको बडीवयमें प्रभुकृपासे पूर्वके संस्कारी प्रतापी पुत्ररत्नकी प्राप्ति भई संवत् १८०४ की सालमें । पुत्रजन्म होनेसे मातापिताको परमानंद प्राप्त भया. और वेराजी एसा नाम नियत कीया गया.वे बालवयसे ही बडे प्रवीण और प्रभुप्रेमी थे.

क्योंकी "पूतईीके लच्छन सो पालने पिछानीयें" बाल्यावस्थासे ही मृत्तिकाके ठाकोरजी बनाय सेवा पूजा करते और खुस होय खेलते, बालपनसे ही एसी अलौकिकता देखके सर्व आश्चर्यचकित होतेथे पंच सप्त वर्षके भये तब खेतीवाडीका काम करने लगे। क्योंकी इनोके पिताका व्यवसाय खेतीकाथा और वांढाय बडा छोटा ग्राम होनेसे विद्या पढनेका कुछबी साधन नही था। त्यों आगे विद्याका प्रचार बी कुछ कमथा, केवल पहाडी प्रदेशके छोटे गांवोंमें खेतीवाडीका कार्य ही प्रधान माना जाता है। तातें वेराजी बालपनसे ही खेतीका कार्य करते थे लेकीन अंतरात्मा इश्वरसे ही अखंडित था. ए समय मातापंथ सर्वत्र फेल रहा था, और राजपुत जातिका आदि धर्म एही माना जाता है तातें वेराजी बी दिनका अपना कार्य करते और

रात्रिका जोत पाट और जाग आदिमें जाते और प्रभुभजन करते । इनोंके मित्रवर्गमें सामतरावाले होथी बापुजी और अन्य क्षत्रियो थे । एसे सत्संगमें समय व्यतीत होते एकदिन वेराजीको यह विचार उदय हुवा की यहां पर मोक्ष होना कठिन हे कछु और प्रयास करना चाहीये । एसे विचार करते एकदिन कोइ एक भक्तसे पुछा की जीवका कल्याण किस्में है, और एसा कोइ है की कल्याणका रस्ता बतावे । तब वे भक्तने कहा की एसे तो हमलामें महात्मा बावाश्री देवासाहेब है वे समर्थ आत्मवेत्ता और सर्वज्ञ है, उनोंकी कृपा होवे तो मोक्ष होना दुर्लभ नही है । ताते कोइ निवृत्तिका समय पाइ आप हमला गये वहां पर महात्मा देवाजीसाहेबका दर्शन करके परम प्रमोद पाये ओर धनभाग सराये देवासाहेबकी अ-

नुभवी बानी सुनके निश्चय मानलीया की यहां पर मेरा कल्याण है। तातें शिष्य होनेकी इच्छा दरसाई कंठी बंधवाई अरज सुनाई की सद्गुरू उपदेश सुनाओ । तातें देवासाहेबनें सत्पात्र समज महावाक्यका बोध सुनाया, तबसे हृदय पट खुला और आत्मानंद दरसाया पीछे पुनःपुनः प्रणाम हरिहर करके आयसु पाय वांढाय आये यहां पर आय पूर्वकी प्रथानुसार खेतीकार्य करने लगे। संध्यासमय बेलको जंगलमें छोड देवे और आप रोटी वस्त्रमें बांधके रस्तेमें खाते जावे और दोडते जावे एसे निरंतर जाया करे । वांढायसे हमला सात कोस अंतराय है तो बी रात्रिके नव बजे वहां पर पोंच जावे. ओर वहां सद्गुरुकी सेवा करे। शब्द साखी सीखे सुने । आधी राततक सत्संग भजन करे. फेर वहांसे चलके

सवेरमें वांढाय आय अपने कार्य करने लगे. एसे प्रतिदिन करते भये तब कितनेक लोगोंने इनके पिता मेघराजजीसे कहा की तुमारा पुत्र वेराजी हमेस रात्रिका हमले जाताहे ओर साधु हो जाय गा. तातें इनका संबंध करके लग्न कर ल्यो की जिससे वे गृहव्यवहार निभावे और वंसवृद्धि होय एसे सुनके मेघराजजी विचारा की अब ए पुत्रकी सादी करनी चाहीयें तातें शीघ्र ही संबंध कीया और विवाहकी तैयारी करने लगे। बावा वेराजी को यह बातकी मालम हुई बडे शोचको पाए. और रात्रिका सद्गुरु देवासाहेब पास जायके रोने लगे बावासाहेबने कहा की बच्चा क्या है. तब करजोरी कहने लगेकी सदगुरू मेरे पिताने मेरा सबंध करके फसाया मेरकुं साधु होना है और आपकी सेवा करनी हे संसारमें रहेना नही हे लेकीन मेरा सबंध कर दीया अब में

इस बंधनसें केसें छुटुंगा ए बडा शोच होता हे तब देवासाहेबने कहाकी बच्चा ! सोच मत-कर क्योंकी गृहस्थाश्रमका जो तीन ऋण हे सो उतार ओर एक पुत्र होनेसे संसार त्यागना.एसा वेदवाक्य हे, तातें शास्त्र आज्ञानुसार गृहस्थाश्रम भोगके एक पुत्र होने पीछे हमारे पास आवना. । ओर संसार छोड साधु होना एसा सद्गुरुका वाक्य सुनके कछु धीरज पाई. वांढाय आये और गृहकार्य करने लगे, कुछ समय बाद धल मेघराजजीनें बडी धामधुमसे अपने पुत्र वेराजीका विधिवत् विवाह कीया. पुनी प्रभुकृपासे एक पुत्र-जेठूजी तथा एक पुत्री बाश्रीहरिबा एसें दो संतान होये, कुंवर जेठुजी जब कछु कामकाज लायक भये तब गृहव्यवहार इनको देके अच्छी रीत उपदेश दीया ओर कहाकी देख बच्चा ! तेरा जो पुत्र होवे उसमेंसे एक पुत्र जगामें देना, एसें कही

के आप चलदीया ओर हमला आये बावाश्री देवासाहेबके पास दीक्षा लिया, कछुदिन गुरूसंग रहीके सेवा बंदगी बनाई, फेर विदेशमें संतसमागम ओर तीर्थाटन करनेको गये वे समय रेलगाडी आदि साधन नहि होनेसे पाउंप्यादे जाना पडता था। तातें बावाश्री विहारीसाहेब प्यादे चलके केदारनाथ, बद्रीनाथ, रामनाथ, जगन्नाथ वेजनाथ, पुष्पतीनाथ, कासी, अयोध्या, द्वारिका आदि चार धाम करके गंगाजीसे जलका लोटा भरके विचरते विचरते कच्छ हमलापुरि आये ओर सद्गुरु बावा देवासाहेबको गंगाजलसे अनुवाए कछु दिन रही टेलबंदगी बनाई, पुनी आज्ञा लेके वांढाय आये, तहां पर सींधल बापुजी तथा मानसिंहजी व वजाजी, ओर मेघजी, जुणाजी आदि सब बंधु वर्ग मिलीके बावाश्री विहारीसाहेबको कहाकी अबी आप यहां पर रहीके भगवद् भजन करो, हम

सब यथाविधि स्नेहसे सेवा करेंगे। एसे आग्रहसे सबने ठहरनेका कहा. ओर दो खेत श्रीकृष्णार्पण दीये, तब बाबासाहेबनें बीं विचार कीया की ए स्थल भव्य भजन लायकहे क्योंकि, दोहा

"रम्य प्रदेश रसाल घर, अरू सब विध एकंत।
जल पर्वतका योग जहां,तहां पर रहेवत संत॥

तातें एस्थल परमपवित्र हे एसें समजके जगा बनाइ आप रहने लगे आप बडे भाग्यवान्‌थे तातें परमात्माकी कृपासे प्रतिदिन परमानंद हो-वन लगा। अपरंच आप भजनके प्रतापसे बडे स-मर्थ याने वचनसिद्ध महाकवि थे, इनोंकी काव्य-शक्ति बडी अलौकिक हे क्योंकि आप भजनानंदी ओर पूर्वके संस्कारी ओर बडे बुद्धिमान्‌थे। एक-समय सुनाहूवा छंद की पद आप बोल देते। एसी स्मरणशक्ति भारी तेजथी त्यों आप पिंगल आदि

साहित्य पूर्ण पढे हुवे थे, कच्छ खाखरके जाडेजा उनडजी बडे प्रसिद्ध कवि थे, जिनोंने " भगवत-पिंगल" "खुसबो कुमारी" आदि नूतन काव्य निबंध किये हे। उनकी पासमें बावा श्रीविहारीसाहेब भी पढे हुवे थे, तातें बावासाहेबकी बनाई काव्य बडी छटादार ओर रसिक हे, ओर उत्तम काव्यमें गिनी जाती हे। कहाहेकी दोहा—

" सालंकारा रसवती, निर्दोषी पहीचान ।
अवरेवा लक्षणवती, सुकविराचित वर मान.१"

प्यारे काव्य तो दैवी शक्ति हे ओर वदको अंग हे। केवल दीया लीया,की आया पाया एसे प्रास मिलनेसे कविता नाहि होती। काव्यका काम तो बडा कठिन हे। ओर कविपद भी बडा दुर्लभ हे कहा हे की दोहाः—

"सुकवि सोइ जानो सुधर, काव्यसृष्टी करतार।
पालत पोषत लय करत,निजइच्छा अनुसार"

फिर काव्यके लिये कहा हे की, दोहा—

"अरी हुंसराहे बुध इव, सभा बीच सरसाय।
शव्द कहत सुंदर अरथ, कविता सो कहवाय."

कविता अमोल हे ताके लिये कहा हे की,दोहा.

"तीन लोकमें काव्यका,करि न सके को तोल।
भासे यह ब्रह्मांडमें, कविता वस्तु अमोल ॥"१

एसें विहारीसाहेबकी कविता भी अमूल्य ओर अतिमधुर हे। सो यह पुस्तकमें वांचके सब संत सज्जनो समज लेंगे। यहां विशेष कहनेसे ग्रंथविस्तार बढ जाय तातें अब में मेरे आदि विषय पर आता हुं,बावाश्री विहारीसाहेबके बंधु हरिदासजी थे सो प्रथम शिष्य होइ भेख लीया। पीछे

कानपुरके क्षेमदासजी भेख लेके संगमें रहने लगे पुनि पुनडीके नारयाणदासजी और राघवदासजी दीक्षा ले शिष्य भये। एसे बावाश्री विहारीसाहेब-के बडे चार शिष्य थे । इनमेंसे आदि शिष्य जो हरिदासजी थे तिनको वांढायकी जगा देके आप बंबई पधारे थे। पीछे भावीकी प्रबलता ओर शरीर क्षणभंगुर होनेसे सद्गुरु श्रीदेवासाहेबका शरीर शांत हो गया । ताका दुःखद समाचार आप बंबईमें सुनके बडे उदासीन होयके सोच करने लगे की अहोहो !! सद्गुरुके दर्शनकी अ-भिलाषा मनमें रहगई । अहो दैव ! अंतमें दर्शन भी नही दीया । एसे व्याकुल होयके आप हमला आवते भये । रस्तामें वियोगदर्शक नूतन लावनी बनाई "स्वामी आये तुम सरनं, गुरू तुम हो जगतारन तरनं" इत्यादि चार लावनी बनाई । जब वियोगमें व्याकुल होयके गद्गद

कंठसे सद्गुरुका स्मरण करके बोले तब सर्वत्र पूरण करुणरस छाइ रहा और साक्षात् स्वामी देवासाहेबने दर्शन देके दीलासा दीया। ओर मस्तक पर हस्त रखके कहा की, बच्चा ! तेरी भावना अतिउत्तम हे मैं तेरे पर प्रसन्न हूं। प्यारे ! खुश रहो प्रभुका भजन करते रेना। एसे कहीके आप अंतर्ध्यान हो गये ओर विहारी-साहेब संतोष पायके हमला आए। गुरुद्वारामें आयके आपके गुरूभाइयोंसे ओर संतसेवकोसें मिले। पीछे सर्व मिलके गुरुदेवका बडा भारी महोत्सव कीया। तहां पर सर्व संत महंत साधु समाज ओर भक्त सेवक सब एकत्र हुवे थे। ता समय सब हरिजन सेवक तथा सर्व संत महंत विचारने लगे की बावा श्रीदेवासाहेबके शिष्य तो अनेक हे परंतु बडे शिष्य चार हे। ताके नाम दोहाः—

जेष्ठ सु जेठीरामजी, विहारीसाहब जान ।
सुखप्रद सेवारामजी, कृष्णदास अनु मान ॥ १

एसे चार शिष्य हे । तामेंसे बडेको गादीपें बेठाना चाहीये । जब चदर औढानेका समय भया तब सब मिलके जेठीरामजीको गादी बेठने कहा तब जेठीरामजीने ना कही कि हमसे ए उपाधि नहीं बने,हम तो भजन करेंगे । कृष्णदासजीको कहा तो उसन तो कोटडीमें अपनी अलग जगा बांधी थी । सेवारामजीने सिंधमें बहुतसे द्वारा टिकाणा स्थापें थे । तातें जब तीनोंने ना कही तब बावा श्रीविहारीसाहेबको कहा. जो की बावाश्राने भी वांढायमें जगा बांधी थीं, लेकीन सब संत महंत और सेवकोंने आग्रह कीया कि आपका गुरुद्वारा हें,सो आप जब नही समालोगे तो बिगड जायगा । तब विहारीसाहेबने कहा कि

मेरी अवस्था वृद्ध हूइ हे तातें अब मेरा जिवन द्वादस मासका हे । तो बी जब आप सबका एसा वचन हे तो मे मान्य करता हूं । परंतु आप बी मेरा एक वचन मान्य किजे की बाबा-साहेबके वंसका छोटा लडका जो रामसिंहजी हे उसको में अंकमें बेठायके गादीये बेठुंगा तब सबनें कबुल कीया । और देबासाहेबका पौत्र रामसिंहजींको अंकमें लेकर बिहारीसाहेब गादी पें बेठे । पीछें अपना शिष्य जो क्षेमदासजी अ-च्छे पढे हूवे थे : तिनको आज्ञा करी की तुम रामसिंहजीको पढाओ । ताते वे पढाने लगे और आप एकांतमें बेठ भगवत भजन करते और न-नविन हरियश काव्य बनाते । एक " कृष्ण बाल-विनोद" नामका बडा रसिक छोटासा ग्रंथ बनाया हे और "गुरुस्तुति" तथा प्रस्ताविक कुंडलीया" और हरियश चोवीस अवतारकी कथा तथा पद

राग आदि अनेक अनेक उपयोगी बोधिक काव्य बनाइ हे। सो आजतक अप्रसिद्ध रही परंतु कितनेक भाविक भक्तोंकि भावनासें यह पुस्तक संपूर्ण शुद्ध करवायके प्रसिद्ध किया हे ताकी उत्तमता वांचनेसे ही विदीत होगी।

एक दिन बावा श्रीविहारीसाहेब वांढायसें हमलाको जाते थे संगमें वांढ ग्रामके पीर कमलशा बी थे सो राहमें चलते चलते वार्ता विनोंद हो रहा था। तब आगे चलते सब वृक्ष हरे और एक तरु सूका देखके कामलशा पीरने कहाकी बावा सब वनस्पति प्रफुलित और हरी हे परंतु ए एक वृक्ष सूका हो गया हे इसको बी आप हरा करो तो अच्छा तब वावाने कहा की पीरसाहेब आप उसको हरा सुतरु किजे। एसी आपसमें संवाद करते पीरसो वृक्ष हरा हुवा नहीं।

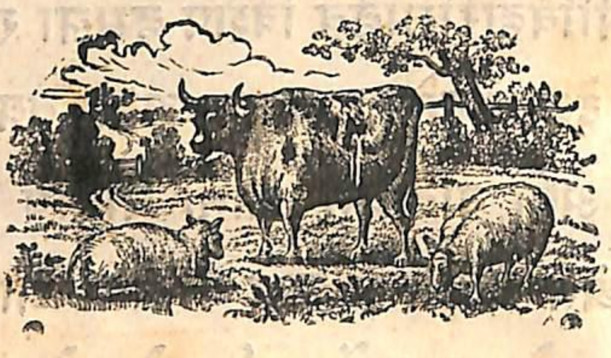
तब बावा श्रीविहारीसाहेबने इश्वर स्मरण करके ओही समय वे वृक्षको नवपल्लव कर दीया, एसें अनेक परचा पूरे हे। परंतु यहां स्थल संकोचसे विस्तार नही किया। एसे समर्थ प्रसिद्ध महात्माओंका जीवन चरित्र सर्वत्र प्रचलीत हे तथापी संक्षेपसें सर्व सेवक सज्जनोंके हितार्थ छपाय प्रसिद्ध किया हे सो आप सब सुज्ञ स्वीकार लेना एही विनती हे।

बावा श्रीविहारीसाहेब विशेष हमला रहते थे परंतु जब देह छोडनेका समय आया तब आपनें जाना कि अबी वांढायमें जाना चाहीयें क्योंकि आप तो अंतरजामी थे तातें वांढाय आये ओर दो दिन ठहरके सहजमें शरीरको छोड स्वधाम सिधाये।

दोहा.

जिनही अपनी जगतमें पूरण राखी टेक,
अवतारी एसे भये, आगे संत अनेक. ॥१॥
मानतहे जन सर्वदा, जानत सदगुन जेह,
अजहूं जाको जगतमें कायम किरतीदेह. ॥२॥

ली. कवी मेघराज हमीरजी.
कच्छ घणोई.



ब्रह्मनिष्ठ महात्मा महाराज ईश्वररामजी गुरु क्षेमसाहेब



जन्म सने १८९५	देहोत्सर्ग
आश्विन सुदी २ सोमवार	संवत १९५३ अशाड वदी १
नादरा–कच्छ.	**मु॰ वांढाइ.**

वि. वि. प्रेस–ભાવનગર.

realpatidar.com

सद्धर्म प्रवर्तक स्वामीश्री क्षेमसागरका संक्षिप्त जीवन चरीत्र।

बावाश्री विहारीसाहेबके सद्वर्तनशील शिष्य क्षेमसागर थे सो बी बडे प्रतापी और भजनानंदी थे. इनोका जन्म पवित्र देवजाती चारण कुलमें मंजल गावमें भया. वे प्रज्ञाचक्षु थे लेकीन बडे विद्वान और वचनसिद्ध थे, आदिमें अपने दीक्षा लेके गुरुकी सेवा बंदगी बनाई. फेर आप सेवकों में विचरने लगे. और सदुपदेशद्वारा अनेक आश्रित जीवोंको उधारने लगे और विशेषमें हमलामें गुरुकी आज्ञानुसार बावा श्रीराम-

सिंहजीको पढावते और अपने शिष्य सहीत ह-मलामें रहते.

स्वामीश्री क्षेमसागरके महान शिष्य महा-राजश्री ईश्वररामजी बडे पुरुषार्थी थे वे संगमें रहते और तनमनसे सेवा बजावते, इनोंका संपूर्ण यथार्थ जीवनचरीत्र आगे लिखाहे, सो देखनेसें विदीत होगा.

जब बावाश्री रामसिंहजीका अभ्यास परिपूर्ण हूवा और आप लायक वयके भये तब जगाका व्यवहार सब सुप्रत करके स्वामीश्री क्षेमसागर नागरेचाको पधारे. नागरेचा जागीरदार ठाकोरश्री चांदाजी बडे चतुर और उत्तम वैष्णव थे, वे समय ओर बी बडे हरिजन गृहस्थ थे, उ-नोंनें बहुत सेवा करी. और ठाकोरश्री ने एक खेत कृष्णार्पण दीया. और जगा बांधके अखंड रहनेका

अत्यंत आग्रह कीया. तथापी आपने जानाकी गुरुकी जगा सामने अपने जगा बांधनी नहीं. एसें विचारके एक वर्ष तक रहे परंतु जगा बांधी नहीं. फिर भीमपुरके जाडेजा मुरवाजी आदि भ्राता मिलके स्वामीजीको भीमपर लेगये. वहां बडे भावसे सेवने लगे, ए छोटेसे गांवमें आगे कोइ मंदिर नहीं था, जिससे जाडेजा मुरवाजी आदिकने कहाकी सर्वज्ञ स्वामीजी आप जेसे महात्मा पधारे ओर ए ग्राम पवित्र न हो, तब तो हमारे दुरभाग्य. शास्त्रकारोंने कहा है कि जो ग्राममें कथा कीर्तन नही है और देवदर्शन नही हे, सो गांव सून्य जैसा है । तातें आप महात्मा हो तो आपके पधारनेसे हमारा ग्राम पवित्र होना चाहीये. एसी अरज करी तब स्वामीश्रीने कहा की अच्छा जो आप सब भायोंका

भाव हे तो में जगा करुं लेकीन कायम निभाव होना चाहीये। तातें गांवधनी सब भाइयोंने मिलके पंच प्राजा जमी दीनीं। और उपजपें कलसी पर चतुर्थ पाटी लागा ओर दीवेल आदि सब लेख पत्र कर दीये. और यहांपर श्रीरघुनाथजीका सुंदर मंदिर बनाया। और जगा बांधी आप रहने लगे। कछु दिन रहे फिर आपतो विरक्त महात्मा थे तातें जगा अपने एक शिष्यको देके आप कानपुरमें माताजी देवलबाइके पास आयके रहने लगे। और यहांपर अच्छी रीत परमारथ करने लगे। क्योंकि माताजी देवलबाइके आप संसार संबंधमें काका होते थे और देवलबाई बडे दयालु ओर देवी अवतारी थे। और वे समय संपतीमें सबतें इनका घर अग्रेसर था।

नामदार खुदाविंद कच्छाधीपति महाराओश्रीके वोरे कहे जाते थे एसी असंख्य संपती

थी और ताका सदव्यय हो रहा था और बावा श्रीक्षेमसागर बी अपने शिष्य इश्वररामजी सह तहांही रहीके संत सेवा करते थे ।

एक समय आपको एसा स्फुरण होया की हमारे माता पिताकी क्या गती होइ सो हमारे जानना चाहीये, तातें आप कोटडी बंध करके बेठ गये । अखंड रामनामकी एसी धुन लगाइ की खाना पीना बी भूल गये और अपने शिष्य समाजको बी कही दीया था कि हमारे भजनमें भंग करना नहीं । एसें खटमास जब शुद्ध मन से एकाग्र चितसें प्रभु स्मरण किया, तब तो प्रभु प्रसन्न होयके स्वामीश्री क्षेमसागरके माता पिताको रात्रिके समय भेजा । ओर आइके कोटडी खुलाने लगे तब स्वामीश्रीने कहा की कोन है तब उनोने कहा की हम तुमारे माता पिता हे,

तब आपने माना नहीं, तब फेर उनोनें निसानी देकर निश्चय कराया की हमारे पेरनेके वस्त्र पाट पर पडे हैं । सो हमको देओ हम हीमालय जाते हैं. एसें सुनके आपको प्रतीत आई ओर द्वार खोला. ओर प्रणाम करके मिले तब उनोंने कहा की बचा ! तुमारे भजनके प्रभावसें अब हम उत्तम गतीको प्राप्त हुवे हैं, तुं सप्त गोत्रके तारनहार हे तातें धन्य हे । अब हमारा सोच नहीं करना ओर हमारे जो वस्त्र हे सो ब्राह्मनको देना एसे कहीके आप अंतर्ध्यान हो गये ।

अतएव आसंबीयाके बाश्री गंगाबाके आमंत्रणसे आप आसंबीया जाते थे रस्तेमें वेकरा रामपुर आता है, तहां आये. वो समय दैव इच्छासे एसा योग बना की वेकराकें भीमाणी गजणजी अच्छे हरिजन थे । घरमें संपति थी, लेकि

न संतती सुख नहीं था तातें निरास होइके जनाना सह हरिद्वार, कासी आदि तीर्थाटन करने को जाते थें। सो बावाजीको आये देख बडा आनंद पाया और आग्रहसे ठहराया तब स्वामीश्रीने तैयारी देखके पुछाकी भक्तराज अबी तीर्थ करनको क्यों जाते हो। तव ठाकोरने कहा की महाराजजी संसारमे कछु स्वारथ हे नहीं तातें अब तो जाते है कछु स्व करसें परमारथ करे और तीर्थ, वृत करी आवे तो एही अंतमें कामका हे। पीछे ए ग्रास चास कोइ कामका नहीं हे। संसारमें पुत्र बिना जीवन वृथा हे।

कविने कहा है कि

छंद त्रोटक।

बिन धर्मसु ज्यों वरराजनहे,
विधिके बिन ज्योंहि प्रजाजन हे;

बिन ज्ञानसु जानिय योगि जनो,
पुनि दान बिना वित व्यर्थ गिनो. १
तपके बिन ज्यों वृत व्यर्थ लिना,
अरु जानिय गीत सुकंठ बिना,
युध सूर बिना जिम नाहि लसे,
गज मंद गती बिन नां विलसे. २
बिन तेजसु व्यर्थ दिवाकर हे,
बिन रत्न वृथा रत्नाकर हे,
धन हीन वृथा जिमिही जन हे,
तिम पूत्र बिना धिक जीवन हे. ३

एसी रीत जब गजणजी बहुत दिलगीर हुवे तब स्वामीश्रीको दया आई और प्रभु स्मरण करके बोले की ठाकोर दिलगीर नहीं होना। ईश्वर सब अच्छा करेगा। सोच मत करो, तुमारे ग्रह पुत्र आयगा तुमारा मनोरथ सफल होयगा

सहज तुमको तीर्थाटनको जाना होय तो ठीक है । लेकीन तुमारी मनकामना परमात्मा यहांपरही परिपूर्ण करेगा । अर्थात् आपको पुत्र प्राप्ति होयगी परंतु पुत्रका नाम हमारे पास यहां आयके देना एसें आसीस दे अभय करके संवरे आप आसंबीया पधारे और कछु दिन बाश्रीके पास बिराजे पीछे आप कानपुर आये ।

यहांपर वेकरामें नव मास पूर्ण होते भीमाणी गजणजीके गृहे पुत्र रत्नकी प्राप्ति भई । वृद्धापनमें कुंवर जन्म होनेसें बधाई परी । बडा बडा आनंद पाया । कछु दिन पीछे भीमाणी गजणजी जनाना सह वर्तमान वेल करके कुमारको संग लेके कानपुर आये । स्वामीश्री क्षेमसागरके चरनोंमें शिर नमाये. आनंद पाई नाम देनेकी अरज सुनाई । तब स्वामीश्रीनें शिरपर

कर देके संतदास नाम दीया। तव भीमाणी गजणजीने कोरी एक सहस्त्र रोकडी स्वामीजीके चरनोंमें भेट धरी। स्वामीश्रीने सो कोरी वांढाय में अब जहां मानसरोवरसा मनोहर ईश्वरसागर तडाग हे। तहांपर प्रथम बावाश्री विहारी साहेबका कराया हूवा खडीया (नद) था। तामें उपरोक्त कोरी खरचके खागेत्रा कराया. ओषट अष्टमास पानी ठहरे एसा ठीक बनाया। पुनी आपका शरीर वृद्ध होनेसें देह त्यागनेका समय आया। तव माताजी देवलवाई रोने लगे। ओर कहने लगे की।

सोरठा.

हे मायला आधार, कथा कवण संभलावसे।
सदगुरु विण संसार, दीवस जासे दोहेला॥ ”

एसे जब विशेष व्याकुल होने लगे। तव

स्वामीश्री क्षेमसागरने देवलमाको दिलासा दे सदोपदेश दीया। आप जेसे आत्मवेताको नासवंत देहको शोक करनो योग्य नहीं। एसें समजायके अपने शिष्य ईश्वररामजीसें कहा की देख बचा, माताजी देवलबाईका शरीर हे तब तक तुमारे यहांहीं रहेना। ओर नियमीत कथा सुनाना। ए हमारा बचन पालन करना। एसी रीतसें घीरज दे शांती करवायके आप असार संसारको त्यागके स्वधाम सिधाये। इत्यादि स्वामीश्रीके अनेक सदचरीत्र है जाको पार नहीं परंतु यहां बुद्धि अनुसार यथार्थ संक्षेपमें जनाया है सो मान्य करना। किम्बहुना ?

ॐ

पूज्यपाद ब्रह्मनिष्ठ जगदवंद्य महान महात्मा महाराजश्री ईश्वररामजीका जीवन चरीत्र।

स्वामीश्री क्षेमसागरके सदगुनवर्य शिष्य ईश्वररामजीका जन्म भानुसाली कटारमल कुलमें कच्छ नादरा ग्राममें संवत् १८९५ का आश्विन सुदि २ सोमवार के रोज भया। इनके पिताका नाम हंसराज और माताका नाम कुंवरबाइ था। वे आदसे खेती वाडीका कार्य करते और रदयके बडे निरमल ओर दयावाले थे। साधु संतकी सुद्ध मनसे सेवा करते ओर अपने

पुत्र ईश्वर पर बडी प्रीती रखते । ईश्वररामजी बालवयसे ही बडे चमत्कारी व संस्कारी थे। जन्मसेही महाराजका शरीर बडा तेजवान और मोहक था. बानी बी बहुत मधुर थी । तातें सबको पर्म प्रीय लगते । और आप बालवयसे ही प्रभु भजन करते बेठते उठते और रस्तेमें चलते हरदम प्रभुका स्मरण लगा रहेता । रामनाम क्षण बेर बी छोडते नहीं जेसे कविने कहा है

कवित.

आवत हुं जातखात खेलत खुलतगात
छींकत छकात चुप चाप व्हेन रहीये,
कहे पदमाकर परेहू परभात प्रेम,
पागत परात परमातमा न जहीये,
बेठत उठत जात जागत जंभात पुनि,
सोवतहूं स्वपने न ओरे नाद नहीये,

रैंन दिन आठो जाम राम राम राम राम.
सीताराम सीताराम सीताराम कहीयें. १

एसे अहोनिस इश्वर नामका उचार करतें एक रुप होय जाते. जब चतुर्थ वर्षके भये तब कच्छमें दुस्काल होनेसें इनके माता पिताके साथ सिंधको गये वहां जुरडा नामक ग्राममें रहने लगे और खेती करते। दैव योगसें इनोके माता पिताका शरीर सिंधमेंही छुट गया। जिससे आप अकेलेही रहे ओर कोइ नहीं था। लेकीन तहांपर अपनी फुइ थी सो अपने साथमें रखके प्रेमसे पालन करने लगी। आप फुइके साथ सिंधमें जुरडामें रहते थे। तहांपर साधु अरजणदासजी थे उनोंके पासमें सत्संगके लिये फुइके साथ जाते तहांपर आप बाल वयसेही प्रभु परायण होनेसे शब्द, साखी सीखते ओर हिंदी अक्षर बी वे

महात्माने दया कर सीखाये । एक दिन आप हरला हांकते थे तब अचानक तामें पांउ आय गया तासें एक पाउमें खोट रह गई अरु चलनेमें कछुक शरीर परतंत्र हो गया. तातें उलटा आप आनंद पाया ओर मनमें विचार किया की परमात्माने बडी दया करी अच्छा किया की अबी सुखसें बेठे भजन होयगा । जैसें कया है किः—

॥ दोहा ॥

भक्त बीच पलटे नहीं, जो जुग जाय अनंत;
उंच नीज घर अवतरे, तोउ संतको संत. ॥१॥

तातें पूर्वका संस्कार होता है तब अचानक सकल अनुकुल संयोग आय मिलता है तेसे ईश्वररामजीको बी सुयोग प्राप्त भया. परंतु इनकी फुई ओर दूसरे सगा सबंधी मिलके महाराजश्रीका समंध करनेको प्रयत्न करने लगे. तब

इन बातकी साधु अरजणदासजीको मालम हुइ. तब आप विचार कीया कि ए कोइ महा चतुर ओर संस्कारी जीव है पूर्वका कोइं योगभ्रष्ट है, इनको भक्ति लगी हे. आगे पर वे बडा प्रतापी महात्मा होवेगा, इनकी रहेणी करणीसें जाना जाता है की ए कोइ ईस कोटीका अवतारी जीव है, ताको संसारमें फसायके दुःखी करेंगे. तातें इनको छोडाना चाहीयें, एसें समजके ईश्वर-रामजीको बुलवायके कहाकि देख बच्चा यहांपर तुमारी फुई आदि फसानेका फंद करते है- तातें संसारमे तुमको दुःख होगा । लेकीन जो सुख ईछते हो अर्थात् संसार सागरसें पार उतरने चाहते हो तो कच्छमे हमला देवासाहेबके द्वारे में जाओ । ओर तहां साधुबन जाना. तातें तुम पर प्रभु प्रसन्न होगा । एसें कहा तब तो ईश्वर-

रामजीको बी ए उपदेश बडा उत्तम लगा. ओ समय कच्छके साधु सिंध आए थे तातें अरजणदासजीने उनोंके संग करदीया, और उनोंको कहाकि ए लडकाकों कच्छमें लेजाना ओर समालके हमले छोडना. एसें इनको कर्म योगसे सुयोग प्राप्त भयो. तातें साधुओं के संगमें चल दीयाः । पीछे फुई बडे व्याकुल हूइ सोच करके बेठ रहे । और आप चलते चलते कछू दिनमें हमला आये । तहां ब्रह्मवेता स्वामीश्री क्षेमसागरके पास शिष्य होई भेख लीया । जबसें सद्गुरु स्वामीश्रीने गुरु दीक्षा दे महा वाक्यका बोध कीया तबसे आप संगमें रहेके सेवा करने लगें । स्वामीश्री क्षेमसागर हमलामें रहेके बावाश्री रामसिंहजीको पढावते ओर महाराजश्री ईश्वररामजी भंडार करते ओर अति भावसें संतोकी सेवा बंदगी

करते थे। पीछेसे महाराजश्रीने अपनी फुइको बी सिंधसें बुलवायके हमलामें रखे थे. उनकी पूर्ण पालना करी। अंतमें जब फुइका शरीर छुट गया तब आपने पीछे अच्छा महोत्सव कीया. और दान पुनसे फुईकी सद्गती करी। हमलामें वे समय बहूतसें संतजनो रहते थे ता सबकी रसोई करते आपको पडनेका एसा प्रेम था की दो तरफ दो दो चुला था ताके पर तई रखके रोटी करते जाय ओर सामने पुस्तक रखा होवे. तामेसें शब्द साखी सीखते जाय। फिर सर्व संतोको भोजन पिरसके सहसा जायके संतोकी पथारी (आसन) स्वच्छ करके हुका सुलफी भरके तैयार रखे. जब लग संतजनो हुकादि पीके. निवृत न होय, तबलग आप प्रसाद न ले वांसण मांझके भंडारा बंद करके चरण चंपी करनेको

हाजर हो जाय । संत महात्माओमें समभावनासें भगवतरुप जानके सेवा करते. एक रोज सब संतो को जिमाय आप न जिमे. और भंडारा बंद करके माहात्मा बावाश्री देवासाहेबकी चरनपादुका पास हस्त जौडके रोने लगे. और विनतीं करने लगे कि गुरुमहाराज, मेरे पाउं सीधे कर दीयो तो में संतोको पानी भरके पिलाउं, तबतक मेरे पाउं अपवित्र हे सो आप सीधे करके पवित्र करदीजे. एसें स्तुति करके पादुका पकडके रोने लगे । जब सारा दिन वितीत होया । तब दुसरे संतोने स्वामीश्री क्षेमसागरसें कहा की आपका चेला तो मंदिरमें रोता हैं तब स्वामीश्री आये और धीरज दे कहा किं बचा रोना नहीं । क्या सबब हे सो सुनाओ । तब महाराजजीनें करजोरी कहा की मेरे संतोको

पानी भरके पीलाना है। तातें देवा साहेब दयालु है सो मेरा पाउं सीधा करदेवे । तब स्वामीश्रीनें कहा की बचा, अपने गौ भेख साधु हे तो गुरूके आगे एसा हठ नही करना । जो ईश्वरका नेत हो सो बदलेगा नही । जा तेरी भावना सफल भई. तु जो सेवा करता हे सो बहूत हे, एसें गुरूके वाक्य सुनके आप शान्त होयके पीछे पूर्वकी प्रथा अनुसार सब सेवा करंने लगे. पुनी गुरूसाहेब जब सेवकोमें विचरनेको पधारते तब आपबी गुरूकी सेवामें साथही विचरते. एसे फिरके कानपुरमें आये. कानपुरमें कछु काल ठहरके आनंद कीया, फिर सदगुरु स्वामीश्री क्षेमसागरका शरीर शांत हुवा. तब पीछे सब क्रीया करी, आप कानपुरमें रहने लगे, क्योंकी आदमें गुरुकी आज्ञा हे. तातें माताजी देवलबाईको कथा सुनावते. और भजन करते,

माताजीनें अपने पुत्र मानसुर और देवकरण. ए दोनोसें कहाकी बेटा, अपने डेरे पासमें कोइबी आदमीके पसुपक्षी जास्ती शब्द करके महाराजजीके भजनमें भंग करें नही. ताके लीये खास अपना दास जो सीदी हे ताको महाराजश्री की सेवामें चोकी करनेके लींये रखना, माताजीके बचन अंगीकृत करके पुत्रोनें सीदी पठाइको द्वार बाहेर बेठाया था की वे काक आदी पक्षीयोंको कोलाहल करने नही देवे, महाराजश्री एसें भजनी थे की महाराजजीको काक आदि बोलते सो बी उपाधीरुप लगता,तातें सीदीको बेठाया थाः तहांपर रहीकें महाराजजीने वीस वरस भगवद् भजन किया और अनेकनके इच्छित कार्य कीये. वहां प्रथम एक परदेसी सरीर रामदासजीको शिष्य कीया. ओर

दुजा वांढायके घलवंसमें बावाश्री विहारी साहेबके पौत्र प्रीयादासजीको भेख दीया. और प्रीयादासजीको आप गुरुद्वारमें अपना काका गुरु बावाश्री हरिदासजीकी सेवामें वांढाय रखा और आपबी दो चार मासमें कानपुरसें दर्शन देनेको आवते जाते. ओर जो कछु वस्तु चैयें सो भेज देते, और एक बाई तेजबाईफुइ. मुंद्रावाले जो वृद्ध शरीर और बडी भावनावाले थे ताको बीं वांढाय द्वारेमें रसोई आदि टेल करनेके लीये रखे थे. आप कानपुरमें रहीके बहुत परमारथ करावते, और संत सेवा करते, संतमहात्माओंपर आपकी बडी दया थी तातें कितनीक मुरती पासमें रहती.

अतएव महाराजजीका शिष्य उकेडा भक्तथा. ताके शिष्य बावा हरिदासजी तिसके रणछोडदासजी थे । तामें बावा हरिदासजीके शिष्य

सामभगवान सो कानपुर महाराजश्रीके पास पडनेको आये. सो पासमें रहीके पडते थे. परंतु सामदासजीकी बुद्धि मंद थी, तातें विद्या पडनेमें बहुत परिश्रम करे तो बी पाठ होवे नहीं । एक दिन भाग्य वशात् एसा योग बनी आया कि सामदासजी बेठे पाठ याद करते थे लेकिन पाठ कंठस्थ होवे नही तब खेद करके भीतिमें मस्तक पछारने लगे. वोही वख्त अचानक महाराजश्री आप आयके देखा. और मस्तकपर हाथ रखा. ताके प्रभावसें तत्काल हृदयपट खूल गया. । ओर विद्या स्फुरने लगी. तब प्रथम ही सामभगवानने महाराजश्री ईश्वररामजीकी स्तुति के त्रयोदश नविन दोहा, छंद बनाये बोले। जो अद्यापि संध्या समय पाठसें पहेले बोले जाते है. वे अंतमें है। एसें कानपूरमें रहीके अनेक के

कार्य किये,फेर जब देवलमाका शरीर शांत भया तब आप गुरुका वाक्य पूरण करके कच्छमें विचरने लगे । तहांपर लालरामजी व बापुरामजी और लीलारामजी तथा प्रेमदासजी एसें चतुर्थ शिष्य किये. सो बी संगमें विचरते, हर वर्ष गोकुलअष्टमी पर हमला जाते । बावाश्री रामसिंहजी ओर महाराजश्रीका बडा गाढ स्नेह था तातें द्वादस मास सेवकोमें विचरना ओर श्रावण मासमें कृष्ण जन्माष्टमीके समैयेपर गुरुके दर्शन करनेके हेतु हमलामें आयके पंच अष्ट रोज ठहेरना. एसा नियम था । आप बडे भजनानंदी थे सेवकों को कथा किर्तनका अद्भुत लाभ देते । महाराजश्रीने अनेकोंके मनोरथ पूर्ण कीये है । और करते है, आपके पास रिद्धि सिद्धि हाजर थी । लेकिन एसे निरमानी थे कि कोइको लखावते नही.

एक समय आप कच्छ गुंदीयारीको पधारे थे तहांपर भाटीया ठा. हरिदासजीके गृह उतारा था ताकी पतनी सुंदरबाइ एक पथ्थरका कृतीम लडकाको सुंदर पालनेमें पोढायके जुलावते जुलावते रोने लगी । तब महाराजश्रीने सुनके कहा कि माताजी क्यों रोते हो, तब सुंदरबाइने कहा कि, महाराज पुत्र रहते नहीं हे. तातें आज ए कृतीम पुत्र देखके रोना आया कि सब कछु सुख संपति है परंतु एक पुत्र नही हे । ताका दुःख हे, कहा हे कि.

" प्यारा एक पुत्र बिन आजु,
दुःखप्रद लागत सकल समाजु"

तब महाराजश्रीने कृपा करी कहा की माताजी प्रभु समर्थ हे. सबकी ईच्छा पूरनहार हे. तो तुमको बी दो पुत्र होयगा. ओर वे जीवेंगे । तातें

सुंदरबाइको दो पुत्ररत्न प्राप्त भये । वे अद्यापी विद्यमान है. एसें अनेक बनाव बने है लेकीन स्थल संकोचसें नहीं लिखे ।

एक समय कच्छ सुथरीमें राजगोर ब्राह्मन भक्त पुरुषोत्तमने बडा उत्सव कीया तापर अनेक साधु संत महंत और भक्त हरिजन आदि सज-नोंको आमंत्रणसें बुलाये थे. बडा समाज एकठा भया था, भजनानंदसें सर्वत्र आनंद छवाय रहा था. जब समाप्तिका दिन आया और आज जिमा-यके सबको विदाय करनेका था । ता समय पुरुषोतम भक्तका पूत्र अपनी तेजदार घोडीपर स्वार होयके पानी पिलानेको गया, जब पानी पिलायके पीछे लोटा तब घोडी दोडनेसें गिर पडा, पांउ पागडामें आय गया, निकला नही, जासें घोडी चमकके भागी. ओर लडका घसडाने

लगा. ताते मस्तक छुंदायके मरण पाया. घोडी घरको आई, लडकाकों उतार लीया. ओर एक कपडामें वींटके डेलामें रख दीया, भक्त पुरुषोतमनें जानाकी अरे प्रभु, हरिहरि, बडा जुलम भया. दैव्यइच्छा जो होनहार हे सो होता है, लेकीन आज मेरे घर संत मिजमान हे ओर अबी रसोइ तैयार हे. जिमनेका समयें हे. जो ए बनावकी बातमी पावेगे तो कोइ जिमेंगे नही. एसे धोखा करके फीर धीरज रखके प्रभुका स्मरण करके आप जायके जिमनेका कहवाया, उत्सवमें नरेडावाले कल्याणबाई तथा गढसिसाके पंडित पितांबर ओर सामभगवान, शंकरानंदस्वामी, बावाश्री रामसिंहजी आदी ओर बहूतसे भक्त महात्मा थे इन सबको बोलाये, सब आये ओर महाराजश्री ईश्वररामजीके संगमें पंगत कर बेठे.

महाराजश्री तो अंतरजामी थे, तब पुरुषोतम भक्तसे कहाकी भक्त प्रथम पिरसना तुमारा पुत्र करेगा. बोलाइयें हमारा चेला कहां है. एसें जब महाराजजीनें कहा तब तो सबका मुख पड गया. कोईने उत्तर नही दीया, तब फेर महाराजश्रीनें कहाकी हे भक्त, जाओ बालके को बोलाओ, वे नही आवेगा तबलग हम जीमेंगे नही, तब पुरुषोत्तमने कहा के महाराज वे तो लडका हे, सो कहीं खेलता होगा, अबी आवेगा. बोलाते हे. लेकीन तबतक आप सर्व संत प्रसाद लीजे. तब ओर एक भक्त था उनने सब यथार्थ हाल दीया की महाराज, ए ता बालक बिचारा होता नहोता होगया, याने मर गया. उसका मृतक सब पडा सो कहासें आवेगा. बालक घोडीसें गिरपडा तातें अचानक ए

भक्तको बडा संकट आय पडा हे. एसे वाक्य सुनके महाराज आदी सर्व समाज सोकातुर होये, ओर महाराजश्रीने कहा की हरिहरि, अब सब संतो चलो, प्रभुका स्मरण करो.भेखकी टेक प्रभु रखेगा. सर्व एक चितसे स्मरण करों, आप सबको श्रीमद् भगवद्गीताका आधा कलाक पाठ कराया. आपबी नेत्र बंद करके प्रभुका ध्यान धरी स्मरण करी अंतःकरणसें स्तुति करी की. हे हरि- दीनबंधु पतीत पावन कृपाळु, आपने अनेको भक्त संतोकी टेक रखी है तो ए समय बी बा- नाकी टेक रखनी ए आपका ही काम है, हे सर्वेश्वर एसे संकट समय सहायता करनी ए आ- पकी शोभा हे. एसें स्तुति करी तब अंतरमें प्रभु का आवीर्भाव हूवा. तब सब संतोको साथमें लेके जहां लडकाका सब पडा था तहां गये । सुथरी

बडा पुर हे तातें ओर बी अनेक आदमी देखने-को एकत्र हो गये, तामें कितनेक नास्तिक खल लोक थे। वे निंदा ओर चेष्टा करने लगे. कच्छी भाषामें कहने लगे किं "मासां मरीव्यो तेके जीयरो कंधा वडा पीरजा पुतर" तब कोइ एसें बी कहने लगे कि–"भइ साधु अइं महात्माऐं आगड़; घणें मुवेंके जीयरा केयों अंयों तीं हिनीमें पण कोक महात्मा हुंधो तथींधो भाकीं भतखाउं एनुं तांकी भने जो नायें" तब दुसरा भाविक था सो एसें बी भाखने लगा की "वांढाय वारा ईश्वररामजी एडाज महात्मा अइं, ई जीयरो करीं तेंमें कुरो न्यारीयुं कुरो थीयेतो" एसें प्रेक्षकजन आपसमें प्रश्नोत्तर करते थे, और यहांपर महाराजश्रीने आयके देखा तो छीनभीन होया मृतक सब पडा हे. तब सब संतोका चरणामृत लेके छांटा, ओर

माताजी कल्याणबाईका हस्त पकडके कच्छी भाषामें कहा की, " माताजी, छोकरे तें हथ्र फेर्यों अइंमा अयो असांजी लज रखो " एसें कहींके माताजीका कर बालका के मस्तकपर रखाया. और आपबी मस्तकपर कर देके बोले. की हे बालका, उठ. सब संत महात्मा भूखे बेठेहै ताको पिरसके जीमाव. एसें कहा तब ओही बख्त लडकाने आंख खोली बेठा भया. और महाराजश्रीको नमस्कार किया, तब सर्व सभामें और गांवमें आश्चर्य पाय धन्यवाद देने लगे, और नरनारी सब कहने लगे कीं "ईश्वरा परमेश्वरा" एसें प्रभुनें भेखकी टेक राखी. पीछे भक्त पुरु-षोत्तम आनंद पाया, पुत्रको मस्तकपें पाटा बांध के पंगत कराई और महाराजश्रीके थालमें पुत्र-के हाथसें पिरसाया. सब समाज प्रेमसें प्रसाद

लेके पर्मानंद पाया. एसें यहां उत्सव पूर्ण करी आप कच्छ अबडासा औकंठी आदि प्रांतोमें विचरते.

एक समय आप बिद्डामें बिराजते थे तब बावाश्री रामसिंहजीबी बिद्डा बिराजते थे, परंतु बावाश्रीका शरीर अस्वस्थ होनेसें बिद्डामेंही शांत होगया. तब महाराजश्रीनें बहूत सोक कीया. क्योंकी महान पुरुषोंका सोक अल्प हेतु के लीये नही होता, लेकीन एसें बावासाहेब जेसें ब्रह्मवेताके देहका पात होनेसें अधिक हे. स्नेहजामें एसे संत पुरुषोकोंभी सोक होना स्वाभावीक है. ताते आपश्री अत्यंत सोकातुर होये. ओर पीछे वहांसें हमला पधारे, तहांपर बावासाहेबके शिष्य संतदासजी ओर माधवदासजी, ओर रुपदासजी, रामदासजी, हरिदासजी

तथा मोहनदासजी आदि शिष्य थे. सब संत-सेवको मि.लके बावासाहेबका उत्सव कीया. तब एसा कोइ नही था की जाको गादीपें बेठावे. तातें सर्व हरिजन सेवको मिलके महाराजश्रीको गादीपें बेठनेका आग्रह कीया. परंतु महाराज-श्रीने ना करीकी ए पांगली गौको उपाधीमें मत डालो. मेरेसें गादीपें बेठना बनेगा नही. तब सब सेवको ओर शिष्योनें कहाकी, महाराजजी एतो बनेगा नही. गादीपें तो आपकोही बेठनां पडेगा. क्योंकी गुरूका आश्रम है. आप जो नही बेठोगे तो बीगड जायगा. ताते ए आपकोही समालना पडेगा, एसे अतिशय आग्रह करके महाराजश्री को सबने मिलके गादीपें बेठाये. लेकीन आप मनमें बहूत उदासीन थे. उपाधी तो आपको रंचकबी प्रीय नही थी तोंबी एक वर्ष तक आ-

पने व्यवहार चलाया. परंतु हरिजन बहुतसे आने लगे, और उपाधी होने लगी. एकांतमें भजन करनां बन सकता नहीं, फेर आपने विचार करके बावाश्री रामसिंहजीके शिष्य मोहनरामजी जो गादी चलाने योग्य थे, परंतु सो राजकोट रहतेथे, ताको बोलाया, ओर सब सेवकोकों समजाया, ओर उनको गादीपें बेठाया, सर्व वस्तु सुप्रत करके आप अपने शिष्य सहवर्तमान अंगपर पेरेहुवे वस्त्रसेंही गाडा भाडे करके अंजारमें मीस्त्री हीरजी कल्याणजीके यहां जानेको तैयार हूवे, यहांपर वांढायमें खबर हूइ की महाराजजी अंजार जाते है, तातें यहांसें हरिदासजी ओर प्रीयादासजी तथा तेजबाईमा सींधल केसरजी तथा सामतजी ओर जीयाजीं, व नोंघणजी आदिक रस्तेमें जायके महाराज-

श्रीके चरनोमें पडके अरज करीके अबी तो प्रभु वांढाय पधारो, महाराजश्रीने ना कही, अंजार जानेकी जरुर जनाई, तब सबने अतिशय आग्रह कीयाकि अबी तो यहांसें जाने नही देंगे, अंतमें आडे सोनेकी ओर रामदोहाइ देनेकी कही, तब महाराजश्री गाडाको पीछे वारके वांढाय पधारे, यहां वांढायमें बहूत दिनोसें पधारे तातें जेसे श्रीराम अयोध्यामें पधारे,ओर आनंद भया, एसा आनंद उत्सव भया. सामैया कीया, तबसें महाराज आप हमेश वांढायमें बिराजके निवृती परायण होयके एकांतमें भजन करते, सती सेवक आवते जाते, आठोपोर अखंड आनंद बना रहेता, यहांपर ओरबो कीतनेक शिष्य किये. मुळदासजी, प्रेमदासजी, ओर दयारामजी, ओर नारायणदासजी. एसे बहूत शिष्य कीये, आप

अहोनिश ईश्वरचिंत्वन करते. एकही मकान में बेठके रात्रदिन भजनपरायण रहते. सूर्य काहां उदय होता है और कहां अस्त होता है. ताकी बी जाको सुद्धि रहती नहीं। एसें अहोनिस एक तार प्रभु स्मरणमें लीन रहते. फक्त संज्याको जब चार बजते तब द्वार खोलते. एक कलाक कथा किर्तन करते। तब सबको दर्शन होते, और वार्तांचेत होती पीछे फेर द्वार बंध करके भगवत भजन करते, प्रतिदिन पंच सप्त सकट सुज्ञ सेवकोंके दर्शनार्थ आवते. और सब अंतरमें मनंच्छीत आनंद सुख पावते. प्रतिदिन पंगत हो रही थी. स्वानादिक पशुओं बी अन्नसें तृप्त रहते थे। जहांपर आपोआप अन्नपूर्णा देवीकाही निवास था। फिर तहांपर क्या कमतीं होवे.

एक समय एक बालानंद ब्रह्मचारी, महा-

राजश्रीकी बहोत प्रशंसा सुनके परिक्षा लेनेको आये थे । तातें रात्रिको दस बजे आइ द्वार खोलायके कहने लगे कि. ईश्वरदासजी कहां रहते है, तब साधुओंने सत्कार कर बेठाया. और महाराजश्रीको सब वृतांत सुनाया । तब द्वार खुलाया. और ब्रह्मचारी अंदर आया. महाराजश्रीने नमस्कार करी अपनी गादीपर बेठायके बडी नम्रताके बचन कहीके । श्रेष्ट सन्मान किया. फेर प्रसाद लेनेको कहा तब बालनंद बोले की हम भोजन करेंगे नहीं. हमने वृत रखा है। तब महाराजश्रीनें शिष्यसे कहाकी दुध लेआओं, तब शिष्यनें कहा कि बापु दुध तो जमाया गया है. फेर आपश्रींने कहा कि गौ दोहके लेआओ. तब उनोंने कहा कि गौवाभी अबी दोही गइ है तो अबी दुसरी बेर केसें दुध देगी, तबतो महा

राजश्रीने कहा कि चलो, में चलता हूं, एसें कहीं के आप उठे एक गौकेपर कर रखके कहा कि " मायां जे घरे संत मिजमान आया अई तेंके खीर खपे तो सेडयो " एसें कच्छी भाषामें कहा तब गौने छांगास किया और पयका पात्र पूर्ण भर दिया । वोही वख्त दुध ल्यायके बालानंदको पिलाया । तातें स्वामी बडा संतोष पाया । ओर मनमें आश्चर्य पाय निश्चय किया कि कच्छ धरामें ईश्वरदास ईश्वरका अवतार कहाता हैं सो सत्य हे । एसें कहीके रात्रको ठहर गये, ओर सवेरे उठके चलते भये । एसें कितनेंक लोकोंको संशय होता कि. सब दुनियां उलट पडी है । उसका क्या सबब हे, क्या कछु पाखंड तो नही है । एसें समजके परिक्षा लेनेको आवते, लेकिन यहां तो सत्यही था, और ईश्वररामजी ईश्वररुप थे ।

तातें अनेक भावीक भक्तों के जिननें मनोरथ पूरण किये है। और अलभ्य लाभ दीया है।

कच्छ मंजलके निवासी भाटीया शेठ वालजी पारप्या धमाणी. बहुत श्रद्धावान भावीक भक्त थे। सो महाराजश्रीके कंठीबंध सेवक होनेसे एकदिन आयके अरज करी कि. गुरुमहाराज कछु सेवा टेल फुरमाइयें, तब महाराजश्रीनें कहा कि. प्यारे सब बातका परम आनंद है.। लेकिन ए गुरुका कराया हूवा खडीया हे, ताका घाट नही है तातें बीचारी गौवां पंकमें पडजाती है। और दुःख पाती है. तातें पावडी ओर घाट बांध्या जाय तो अच्छा। एसें बचन सुनके वालजीभाने अपना धंधा रोजगार छोडके बंबइमें पेले अपना रुपीया पांचसो भरके खरडा चालु किया. और एक मासमें तो रुपीया पंद्रहसहस्त्र एकत्र

किया. वे समय कच्छमें रुपीयेका भाव, रुपीया १ की कौरी पंच थी। जब रुपीया वटायके कोरी करी तो कोरी पौनालाख हूइ एसी बडी रकम गाडा भरके ले आये. महाराजश्रीके पास चरनो-मे भेट धरी, और कहा कि. गुरु महाराज ल्यो ए तलावके लिये रकम करी हे, सो आप इच्छानु-सार अच्छा सरोवर बनाओ। महाराजश्री तो कोरीयोंका गंज देखके जेसें कोइको सीतज्वर आया होय और कंपने लगे वेसे कंपने लगे। और कहने लगे कि. बापला, ए उपाड. मेरेसें ए व्याधी बनेगी नही. लेकिन तुम अपने पास रखो. और अपना आदमी रखके काम पूर्ण कराओ। तब शेठ वालजीभाने लोहाना ठ. विसनजी केस वजी भोरा ब्रह्मको एकाम दिया। क्योंकि वे बी बडे भक्त और ब्रह्मवेता थे. उनने सरोवरका कार्य

शरु किया. सुंदर पावडीबंध जबरजस्त तीन घाट ओगन आव आदि एसा सुशोभित बनाया कि मानो मानसरोवर सा सुहाया. संवत् १९४८ में पूर्ण करके ईश्वरसागर एसा नाम धराया. ताके पर मनोहर बगीचा बनाया. नानाप्रकारकी वनस्पती और फलफुलके वृक्ष रोपाया. मानो नंदन वन सा दिखाया. ईश्वरसागर बडा भारी सरोवर होनेसें पूर्ण भराता नही.तातें सेठ वालजीभा विनंती करके महाराजश्रीको तलावपर ले आये। महाराजश्री आय घाटपर बेठकें देखा तो स्थल बहूत सुंदर लगा। तातें बोले कि में यहांही बेठके भजन करूं तो केसा उत्तम. एसें अंतर आसय जनाय पीछे आप द्वारामें पधारे. तबसें तलाव पूर्ण भराने लगा. एसे सेठ वालजीभाने शुभ पुरुषार्थ करी अमर नाम

रखा है, और अद्यापी वे सरोवर बडा सुंदर शोभा देता है. ओर अनेक जीव जाको लाभ लेते है, वे वालजीभा शेठके तीन संतान भये, एक पुत्र, ओर दो पुत्री, तामें पुत्रका नाम खटाउभा. वे परम भक्त ओर खेतीकार्यमें बडे प्रवीण ओर प्रेमी याने खेडुतोंपर पूर्ण रहेमी थे. आप सत्य सात्वीक स्वभावधारीपर उपकारी और हरिगुरु संतके हितकारी थे. गुरुनिष्ठामें नेकी ओर टेकीवाले योगी व विवेकी थे, ओर शेठ वालजीभाके पुत्रीरत्नमेंसें सदगत जेवांबाई और बाइ, रुकमणीबाई है सोवी बडे निपुण ओर निष्टावान; भजनानंदी ज्ञान व गनके निधान है, महाराजश्रीके पाससें कंठीका वृतमान धरायके साध्वी मैयाजी के नामसें महीमें मशहूर है. ओर जिनने गुरुके नामसें

अनेक सदकार्य कीये है. और करते है. जेसेंकी कन्याशाला, अंत्यजशाला, लायब्रेरी (वांचनालय) ईश्वर आश्रम आदि सदैव सत्य संकल्पी है, आप शुद्ध सात्विक स्वदेशी स्वहस्तसें कांत और वणायके खादीवस्त्र धारण करतें हें, गुरुआश्रम कें आधाररुप ओर संतसेवामें सहायकहै, प्रतिमासकी एकादशीका गुरुआश्रममें दर्शनका जाका नियम हे. सो अद्यापी आप प्रेमसें पालन कर रहे है, एसें सद्वृतवाले संयमी दयालु दीव्य मूर्तीको दैव दीर्घायु रखो. अस्तु.

एसें महाराजश्रीकी दयासें वालजीभाइका कुटुंब परोपकारी ओर सदाचारी भया हे, क्योंकी महान पुरुषो सत्य संकल्पी होते हें, एसें ओरबी अनेक हरिजनोके शुभकार्य कीये है. ओर अनेक साधु संतोको ब्रह्मविद्याका दान दीया

है, स्वामीश्री ज्ञानानंदजीनेंबी कितनाक अभ्यास महाराजश्रीके पाससे कीया है, एसी निर्मल मूर्ती यह समयमें होनी बडी दुर्लभ है. क्योंकी जिननें सारी जिंदगी प्रभुभजन ओर परमार्थमें व्यतीत करी. अपनी टेक कायम रखी के संवत १९५३ का आषाड कृष्णपक्ष द्वितीयाके दिन यह असार संसारको सदाके लीये त्यागके परम कैवल्यपदको प्राप्त भये, जब आपने शरीर छोडा तब आसपासके ओर दुजे अनेक आदमी एकत्र होगये. देशविदेशमें हाहाकार होगया. क्योंकी एसे महान पुरुषोंका वियोग असह्य होता है, ताते ए समय अनेक जन आयलागे; श्रीफलका तो गंज होगया, सब एकत्र मिलके पवित्र पालखी बनाई, तामें बेठायके विधीवत् सब क्रिया करी धुपदीपसे गाजतें वाजते ईश्वर-

सागरपर ल्याये, ओर प्रथम जहां आपका बेठनेका संकल्प था तहांपर अग्निसंस्कार कीया, पीछेसें महाराजश्रीके शिष्योंने तीन महीनाके अंदर बडा अपूर्व महोत्सव किया, जहांपर अनेक संत महंतो और सेवक सतीआये. और सब परमानंद सुख पाये, महाराजश्रीके देहका जहांपर संस्कार किया था। तहांपर एक देरी बनाई और भजनकरने लायक चतुर्थ कोटडी बनाई थी. पीछें महाराजजीके शिष्य समाजका आपसमें अंतराय पडनेसे अलग होगये। दो शिष्य गामके द्वारामें रहे और नव शिष्यनें सरोवर किनारे, नूतन आश्रम जमाया. ओर गुरुमहाराजका शिखरबंध सुंदर मंदीर बनाया. तामें महाराजश्रीके कृपापात्र सद्वर्तनशील शिष्य लालरामजी मुख्य थे। सो सात्वीक स्वभावके बडे

विद्वान और ज्ञानवान थे. उनोंने जगाको जमाई और लीलारामजी ओर बापुरामजीका अच्छा उत्सव किया, जामें बहूतसें संतमहात्मा पधारे थे। और अत्यंत आनंद भया वे समय सब संत और हरिजनोंके कहनेसें आप गुरुकी गादीपर बेठे. महाराज लालरामजी बी आठों पहोर भजन परायण रहते, अपनी कोटडीमें बेठके एकांतीक भजन करते, आप सतोगुणी, शांत-मूर्ति ओर दयालु थे, आप विशेष देशांत्तरमें विचरते नही तोबी आप जगाका अधिक खरच बी आनंदसें चलावते, आपको सद्गुरु महाराजश्रीका वचन था, तातें जितना खरच करते ईतना ईच्छावत आयजाता, आपने जगाको सुधारी सद्व्यय करके विख्याती विसतारी. आपके चमत्कार प्रसिद्ध हे. तातें यहा ग्रंथ बढ

जानेके भयसें नही लिखा. आपश्रीके विद्यमान चतुर्थ शिष्य है, तामें बडे गरीबदासजी, जो अबी कुकमामें जगा करके रहते हें, ओर अपने मनमें मनसें महाराजश्री ईश्वररामजीको गुरु मानते हें. अस्तु । दुसरे केसवदासजी भये सो केरामें ईसमाल भक्तकी जगाके मालेक होय जगा जमायके बेठे हे. त्रतीय जुगलरामजी वे फकड दिसामें रमताराम रहते हे, मोज आवे तब ज-गामें ठहेर जाते हें, ओर बाहेर भी विचरते हें. ओर चतुर्थ शिष्य ओधवरामजी विद्यमान गादी-पति हे. सो समदर्शी शांतमूर्ती ओर उदारात्मा हें. उननें सद्गुरु लालरामजीका महोत्सव कीया. जहांपर बहुतसे संत महंत ओर सेवक सजनो सब मिलके महाराजश्री ओधवरामजीको गादीपें

बेठाये तबसें वे अछी रीतसें जगाका व्यवहार चला रहा हे. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मान आदि विकारोसें जो विरक्त हे, हृदयके रहेमी ओर स्वदेंशप्रेमी होनेसे शुद्ध स्वदेशी वस्त्र धारण करते हैं. जिनोंका अंतर आशय अति उतम हैं, समुद्र जेसें गंभीर हैं. समुद्रमें जेसें वीर आती हे, तेसें ओरको सुख देनेमें जो उमंग मानते हे. आप बडे आनंदरुप परउपकारी ओर स्वार्थ रहीत सदाचारी होनेसें सर्वत्र सराहनीय है. आपश्रीकी वकत्रुत्व-शक्ति, कथा ओर आनंदमें अवधि है, वैराग्य विकासीत आराधी भजनपद आपको विशेष प्रीय है, और एसे प्रेमावेशसें गाते है की अंतरमें तीव्र वैराग्य उपजावनारें व मनको वेधनारे एसें भजन हम अबतक कहीं नहि सुने, क्योंकी वैराग्यवा-

नकी बानी सबको वैराग्य उत्पन करनेमें समर्थ होती हें, जिनकेपर गुरुदेवकी पूर्ण कृपा है, तातें जगाका बडा भारी खरच बी स्वतः निःचिंतपनेसें चलावते. जगा ओर ईश्वरसागरमें बहुतसें सुधारा नविनता करके सुखसाधनमें वृद्धि करी है, औ करते हैं. अरू अनेक अतिथी आते जातेको दा मान दे, आनंद करावते हें. किंवा सब जीव जहां-पर संतोष पावते हैं, इत्यादि आपश्रीकी अधिक सराहना करनी सो दिवाकरको दीपमालिकासें दीपावने समान है. तातें हमवे अत्यंत संक्षेपमें यथार्थ रंच दिगदर्शन कीया है, सो सब सुज्ञ सजनो कृपा करके मान्य करना. महान् पुरु-षोंकी नीती रीती ओर सद्चरीत्र संसारमें सर्व जीवोंको सुधरनेमें सहायक ओर अनुकरण करने

योग्य होते हैं, तानें उक्त महात्माओकें सद्चरीत्र सब मुमुक्षु सजनो वांच विचारके सारग्राही होये मनन करेंगें, तातें हमारा श्रम सफल हुवा समजेंगे. सुज्ञेषु किम्बहुना !

ली. कृपाभिलाषी,

कवि मेघराज हमीरजीके

हरिहर जयश्री सच्चिदानंद.

निवास धणोई, वर्तमान खेडोई–कच्छ.

कुंडलीया.

समतामें संतत रहे, हये संतनमें हेत,
नेक किसे निंदे नही, लाभ भजनको लेत.
लाभ भजनको लेत, अन्यको यहि उपदेशे,
श्रीगुरु ओधवराम, आप समदर्शी एसे.
अचलदासमें सत्य, कहों संदेहन यामे,
हये संतनमें हेत, रहे संतत समतामें. १

(२)

सुत्रमणीसम ए कहे, प्रभु सबमें भरपूर,
एसो अंतर जानके, द्वेस कीयो सब दूर.
द्वेस कीयो सब दूर, राग नहि रंचक मनमें,
श्रीगुरु ओधवराम, एक देखे सब जनमें.
अचलदास असजान, भयो जिनको मन उपसम,
प्रभु सबमें भरपूर, एक हे सुत्रमणी सम. २
सम्राधन सुखमें रहे, ओधव गुरु मम इष्ट,

अभीव्यंजक आनंदके, वर वरीयान वरीष्ट.
वर वरीयान वरीष्ट, आप अंतरमुख एसें,
निजानंदमें लीन, रहे सनकादिक जेसें.
अचलदास अहंब्रह्म, वचन हे जिनके मुखमें,
ओधवगुरु मम इष्ट, रहे संम्राधन सुखमें. ३

ईश्वर आराधन करों. जपो अजंपा जाप,
अंतर जानो आतमा, एसो भाषत आप.
एसो भाषत आप, देव अंतर दरसावे,
श्रीगुरु ओधवराम, मोह जंजाल मिटावे,
अचलदास कैवल्य, मुक्तिको विद्यासाधन्न,
जपो अजंपा जाप, करो ईश्वर आराधन. ४

जीवनमुक्ति जो चहे, देख्यो चाहे देव,
अचलदास आनंद सो, सदूगुरुके पद सेव.
सदगुरुके पद सेव, लाव अनुदिन सो लीजे.
श्रीगुरु ओधवराम, इष्टको ध्यान धरीजे,

निश्चे कीयो निबंध, अन्य नही एसी युक्ति,
सदगुरुके पद सेव, चहे जो जीवन मुक्ति. ५

अथ कच्छ डींगरीयाना महात्मा हरिदासजी कृत रास.

धन्य धन्य ईश्वररामनेरे,
पावन कीधुं छे वांढाय गामनेरे. धन्यः टोढ
धन्य धन्य भौमी जिहां बिराजहीरे,
ते भोमी तिर्थोमां सिरताजहीरे. २
ऋषिमुनी तहां चली आवहीरे,
दर्शन करी महासुख पावहीरे. २
जेनुं दर्शन माहासुख सीरछेरे,
स्वामीनो आशय अति गंभीरछेरे ३
ईश्वर सरमा ते जे नित नायेछेरे,
तेनां पाप ते परले थायेछेरे. ४

धन्य धन्य शिष्यो ते शरणे रयारे,
तेनां पुरवनां पुन्य उदय थयारे. ५
रिधि सिधि ते जेहने हजुरछेरे.
स्वामी ब्रह्मानंद भरपूरछेरे. धन्य धन्य. ६
जेनुं वरतन तें गुणातीतछेरे,
स्वामीजी शास्त्र अनुसार रीतछेरे. ७
स्वामी ज्ञान विज्ञान भंडारछेरे,
स्वामी अभयदान दातारछेरे. ८
जेनें रायरंक सर्वें एकछेरे,
स्वामीश्री सहेज समाधीमां टेकछेरे. ९
स्वामी कल्पतरु सुख धामछेरे,
जिज्ञासुनें ठरवानो ठामछेरे. १०
जेना नेनोमांथी अमृत जरेरे,
स्वामीनीवाणी संशय सोकने हरेरे. ११
स्वामीनां हृदयानुं हेत सुं वखाणीयेरे,

स्वामीनें संगे महासुख माणीयेरे. १२
स्वामी हस्तकमल जेने शिर धरेरे,
तेनां ताप संताप शोकने हरेरे. १३
स्वामीना पाद पदम धोइ पीजियेरे,
लाभ मनुषा जनमनो लीजीयेंरे. १४
स्वामी देह छतों ते विदेहछेरे,
रहित ध्याता ध्याननें धेयछेरे, १५
धन्य धन्य जननी धन तातनेरे,
मुक्त कीधा छे देवलबाई मातनेरे. १६
धन्य धन्य कुल परिवारनेरे,
स्वामीनां पीतर पाम्या ओधारनेरे. १७
इ वात ते वेद परमाणहीरे,
ज्ञानीनी महिमा श्रीमुखे वखाणहिरे, १८
ब्रह्मदरसी ते ब्रह्म स्वरुपछेरे,
उपमा रहित ते परम अनूपछेरे. १९

भोरा ब्रह्मतणो अति भावछेरे,
वालजीरामनी सेवामां बहू चावछेरे. २०
स्वामीनां चरण शरण चित दीजियेरे,
तन मन धन कुलवान कीजियेरे. २१
स्वामीनी मनोहर छबि चित धारीयेरे,
हरिदास कहे लक्षण न विसारीयेरे. २२

(२)

रास

हालो हालो तो वांढाय हालीयेरे,
मली संतोंथी महा सुख मालीयेरे. टेक.
एक गिरिवर उपर गामछेरे,
तेनुं निश्चय वांढाय रुडुं नामछेरे. १
प्रथम विहारी स्वामीतणो वासछेरे,
तेना बंधव ते बावो हरिदासछेरे. २
तेतो सेवक भावे शरने रयारे.
एतो देखतां ब्रह्ममां भली गयारे. ३

स्वामी क्षेमतणी अति ख्यातछेरे,
तेतो संत शिरोमणी विख्यातछेरे. ४
गुरु ईश्वरते आनंद रुपछेरे,
सर्वे संत सभामां अनूपछेरे. ५
अमे पूरण पुन्य थकी पामेयारे,
स्वामीना शरने सर्वे दुःख वामीयारे. ६
अति निर्गुण स्वामीजीनो हालछेरे,
गुरुने नवेनिधि निरमालछेरे, ७
अष्ट सिद्धि गुरुजीनी दासछेरे,
तेनो संत चरणमां वासछेरे. ८
स्वामीना दर्शनथी देह भाव जायछेरे,
गुरु कृपाथी ब्रह्मरुप थायछेरे, ९
स्वामी देखतां दीनदयालछेरे,
गुरुनो सोहं शबदमां ख्यालछेरे. १०
ब्रह्मानंद ते ब्रह्मरस भागीयारे,

स्वामी शरने कारज सौनां थयारे. ११
धन्य सेवक स्वामीजीनां संगमारे,
घोर आठों आनंद तेना अंगमारे. १२
धन्य धन्य भोमीतणा भागछेरे,
जेमां उत्तम स्वामीनी जागछेरे. १३
तियां सिंधुल्लुनो सतभावछेंरे,
तेने दर्शननो नित्य नित्य लावछेरे. १४
वृंदावन भोमी ते वांढायछेरे,
तियां सेवा संतोनी नित्य थायछेरे. १५
तियां ईश्वरसागर गंभीर छेरें,
तेनुं गंगा सरीखु नीरछेरे. १६
तिया हरिजन दर्शने जायछेरे,
तेतो नित्य तीरथमां नायछेरे. १७
तियां नंद वन जेवुं बागछेरे,
तेमां भोरा ब्रह्मनो अनुरागछेरे. १८

वैष्णव वालजीतणुं गणुं हेतछेरे,
जेणे बांध्युं धरमनो खेतछेरे. १९

हरिदासनो डीगरीये वासछेरे,
तेतो नरेडी मोथालाने पासछेरे. २०

गुरु ईश्वर ते ज्ञान गंभीरछेरे,
हरिदासजीने सुखनी सीरछेरे. २१



अथश्री इश्वरविहारी विलाश

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥

॥ इश्वरविहारी विलास प्रारंभ ॥

याने

॥ श्रीकृष्ण बाल विनोद भाषा प्रारंभ ॥

बावाश्री विहारीसाहेब विरचित.

दोहा.

सरस्वति सुभ गुन दायनी,
वाहनी श्वेत मराल ।
स्वेत वसन सोभित सदा,
कटत कठिनक्रम काल ॥ १ ॥

अज तनया आनंदमय,
प्रणमो जोरी पान ॥
मंगल अक्षर मातु मम,
दीजें यह वरदान ॥ २ ॥
गौरी नंदन गज वदन,
सदन सुभग गुन साम ॥
एक रदन आनंदघन,
विघन विनासन नाम ॥ ३ ॥
कृपा करन असरन सरन,
हरन जक्त जंजाल ।
अमर मरन अजरा जरन,
शरन सुखद प्रतिपाल ॥ ४ ॥
सुधबुध नायक रिद्धिसिद्धि
दायक सुखप्रद संत ।
सेवको सन्मुख सदा,

ज्ञान विज्ञान महंत ॥ ५ ॥
परापार परब्रह्म पद,
सदचिद आनंद कंद ।
हरिहर अज सुमरत सदा,
इंद्रही चंद दुडंद[1] ॥ ६ ॥

सोरठा.

सो गनपति गूरूरुप,
बनिआए करुना करन ।
देवा देव अनूप,
परम पुरुष असरन सरन ॥७॥
अधम जंत उद्धार,
करन आए साश्वत जगत ।
निजजन सरन सुधार,
लीन दीन निरमल भगत[2] ॥८॥

---

१ गनेश. २ भक्ति.

आनंद कंद अमाप,
ताप पाप लागत नही ।
गुरु सचिदानंद आप,
विस्वव्यापी साहेब सही ॥ ९ ॥

सुरनर मुनीजन एव,
करत सेव सारद सदा ।
नारद जानत भेव,
सो आतम मम मनमुदा ॥ १० ॥

दोहा.

तं नमामि निज आतमा,
अज अनाम अविनास ।
जो व्यापक जलथल विषे,
परं जोति परकास ॥ ११ ॥

जो परब्रह्म परातपर,
असिपद अगम अनंत ।

सो प्रगट्यो वसुदेव ग्रह,
सुखदायक सब संत ॥ १२ ॥
गोवरधन कर धरनको,
हरन भोमीको भार ।
पावन लीला करनको,
आप धर्यो अवतार ॥ १३ ॥
जिनहीकर वृज जननको,
नित चित मंगल मोद ।
जन विहारी सो मतिज था,
वरनत बाल विनोद ॥ १४ ॥

छंद उधोर.

प्रथमसु भयो जब तें प्रात,
मोहन सो यसोदा मात ।
लागी कहन जागो कान,
बल बल जाउं जीवन प्रान ॥ १५ ॥

गोकुलके सकल मिल ग्वाल,
बाहिर खडेहे वृजबाल ।
उदयोसूर उडगन लीन,
दीपक भई जोति मलीन ॥ १६ ॥

सीतल पवन मंद सुगंध,
उठीये कान आनंद कंद ।
सब मिल करत पंछी [1]सोर,
बोलत मधुर सुरकर मोर ॥ १७ ॥

तलफत गाय जमुना तीर,
करही शब्दको किलकीर[2] ।
प्रफुलीत कमलकी कलियान,
भमरा करत सुंदर गान ॥ १८ ॥

माता वचन सुनत मुरार,
दुकुला दीयो मुखतें डार ।

---

१ शब्द. २ पोपट.

माता लीयो कंठ लगाय,
आनंद परम उर न समाय ॥ १९ ॥
मुखपर करत चुंबन मात,
वारंवार बलबल जात ।
गोकुलकी सकल मिल ग्वाल,
पहोची तहां सो ततकाल ॥ २० ॥
तब गोपाल अपनी गोद,
लीनो मात मनधर मोद ।
निरखत सकल भरभर नेंन,
उपज्यो अति अतुल चितचेंन ॥२१॥
तब जल आन मुख सुचकीन,
कज्जल रेख नेंनन दीन ।
भूषन वसन विविध प्रकार,
लागी सजन मात श्रंगार ॥ २२ ॥
कटिपट[१] पीत नील सुरंग,
अंबर सकल सोभित अंग ।

पगरी पेच सकल सुधार,
माथे धर्यो मुकुट मुरार ॥ २३ ॥
तुररा कलंगी छबि लेत,
ताके बीच नगछब देत ।
केसर तिलक सोभित भाल,
कुंकम कर अलंकृत गाल ॥ २४ ॥
सुंदर नासिका इन भात,
देखत जिनही [२]कीरलजात ।
भ्रकुटी कुटिल धनुषाकार,
दमकत दसन अधुर अनार ॥ २५ ॥
चलकत चपल कुंडल कान,
मानो किरन फेली भान ।
निरमल अमल अंबुज[३] नैंन,
लावन ललित अमृत बैंन ॥ २६ ॥

१ वस्त्र. २ सुवा. ३ कमलः

लहकत गले मुक्तालाल,
तापर बनी जुग बनमाल ।
कोमल मृदुल मंजुल गात,
लंछन हृदे भ्रगुकीलात[१] ॥ ॥ २७ ॥

भारी भुजा पीन प्रचंड,
पावे दुष्ट जिनतें दंड ।
बाजुबंध ओपत बाहि,
अंगुली मुद्रीका दसमाहि ॥ २८ ॥

कंचन कटक पहोंची हाथ,
सोभित राखडी तिन साथ ।
कछनी कसी किनहीक भात,
कटी मेखला कही नवजात ॥ २९ ॥

जंघा जुगल कदली खंभ,
मानो कनकके दो थंभ ।

१ छातीमां श्रीवत्सनुं चिन्ह.

कोमल कमल कलितुल चरन,
परम उदार भवभय हरन ॥ ३० ॥
पहिरे कनक नेपुर पाय,
करही पेजुनी धुनमाय ।
पगतल उरध रेखा अंक[1],
जवतिल ध्वजा धनुष मयंक ॥३१॥
गउपद जंबुफल मछरुप,
अंकुस अंबरकुलीस[2] अनूप ।
पुनीपद कमल कलस उदार,
वंदत वेद वारंवार ॥ ३२ ॥
स्वस्तिक अष्टखट त्रय कोंन,
प्रभुपद सकल सुखके भोंन !
इन जुग चरनमें लखवार,
वारों मदन कोटी हजार ॥ ३३ ॥

---

१ चिन्ह. २ वज्र.

सोरठा.

परम इष्टप्रिय जान,
इन चरनकों चित विषे।
धरे निरंतर ध्यान,
शिव सनकादिक सकल मुनि ॥३४॥
नागर नवलकिशोर,
अंग अंगथा विधी बने।
जन बिहारी कर जोर।
वार वार वंदन करे ॥ ३५ ॥
बने कृष्ण बलराम,
राजिव लोचनरूप निध।
अंग वसन अभिराम,
नख सिख भूषन विविध विध ॥३६॥
भली बनी इन भात,
सुभग सलोनी जोरि जुग।

अब जोबनकी बात,
सो आगे बरनन करो ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

भइ भीर भट नटनकी, नंदरायके द्वार ।
बंदीजन वंदन करे, वचन वेद अनुसार ॥३८॥

छंदजात बेताल ॥

भइ भीर तहां भट नटनकी,
गुन बंदीजन वंदन करे ।
अद्भुत चरीत उदार सो,
यदुवंसके यश विस्तरे ।
जयकृष्ण जय बलराम,
जय यदुवंस भूषन दिनमनी ।
जगदीस ईस न ईस,
विसवा वीस तुम त्रिभोवनधनी ॥३९॥
नभवत् निराकृत जो निरंजन,
परंजोति परात्परं ।

अद्वैत एक अखंड पूरन,
सर्वगत सचराचरं ।
निजरुप सो तुम आप निरगुन,
सगुन रूप सोहावने ।
सनकादि सेस महेस नारद,
सकल मुनीमन भावने ॥ ४० ॥
नट भेख ज्यौं भिन भिन देखावत,
भेख नट भिन है नही ।
त्रैलोक पिंड ब्रह्मंड इह,
चर अचर त्यौं तुमरे मही ।
तुम तेजु भिन कछु ओरसो,
नहि नहि निगम एसें कहे ।
जगदीस तुमको जान,
भिन भिन भूरनर भ्रमतें रहे ॥४१॥
करुनार नव करुना निधे,
करुणांसु हमपर कीजीयें ।

तुम नंदलाल दयाल हमको,
दरस नित नित दीजीयें।
मृदु बानी सो मंगन सबे,
मिल जन बिहारीयों कहे।
जुग जुग जसोदानंदके सुत,
चीरंजीव सदा रहे ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

सुमरि सुमरि हरि सबनिको,
दीये दान सनमान।
तब ग्रह अपनेको गए,
विविध सु करत वखान ॥ ४३ ॥
तब तिनके हरि वचन सुनी,
मंद मंद मुसकात।
मैया सो मागत भये,
भोजन दोनों भ्रात ॥ ४४ ॥

॥ छंद जात बेताल. ॥

भोजन सुनाना भातके,
धन मात हरिआगे धरे ।
मिलके परस्पर प्रेमसो,
दोउ भ्रात भोजनको करें ।
तब ग्वाल गोकुल ग्रामके,
ततकाल सो आए तबे ।
तिन संग हरि हिलमिल चले,
सुरभी चरावन वन सबे ॥ ४५ ॥
प्रभु चलत चाल मराल गजगत,
लटक अटपटी लावने ।
जुगजोरि नवलकिसोर नगधर,
सुभग परम सुहावने ।
गोकुल नगरके ग्वाल हरि,
एसें ललित गत ल्यायहे ।

मनहोंन सारस हंस सिसुमध,
गरुड बालक आय हे ॥ ४६ ॥
सब ग्वाल मंडल बाल बिच,
वृजलाल छब एसें लिये ।
मनहों सुधाकर सहित सुरज,
उदय उडगन मध कीये ।
सुंदर सुभाल विशाल बिच,
रुच तिलक रेखा राजही ।
मनहों मदन धनु मुसकतकितन,
कनक सरजुग साजही ॥ ४७ ॥
चंचल चपल लोचन भ्रकुटी भ्रुह,
चटक मटकन मन हरे ।
मनहोंन कोमल कमल कलिपर,
भ्रमर पंखसु सज करे ।
पुंनकान कुंडल अलक जलकत,
जन बिहारी सो सही ।

मनहोंन मयुर मयंक प्रतितक,
गहन चाहत जुग अही ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

कौतकमय छबि कृष्णकी, रुपनिधी बलराम ।
वारों याके वदनपर, कोटि कोटि छत्रि काम ॥४९॥
बिथिबजार चोहट बिचे, कीन बंसरी टेर ।
नरनारी सब नगरके, गिरधर लीने घेर ॥ ५० ॥

॥ छंदजात बेताल ॥

तिन बंसुरीकी टेर सुन,
तज काम कामातुर भई ।
तनतें सुतन धय त्याग कर,
तनभूल तनमय होगई ।
सब नगर नारि अटारी चढ चढ,
कुंवर निरखत कामनी ।
मनहोंन गगन घटनके मध,
लसत सुंदर दामनी ॥ ५१ ॥

निरखतसु भरभर नेंन सब,
छब देख जहांतहा छक रही ।
मनहों चितेरे चतुर नर,
करकीन चित्रामन सही ।
जांखत जरोखन चंद वदनी,
प्रान प्रीय हरिहीय धरे ।
जुक जुक बलैया लेत जहांतहा,
कुस्मकी वरषा करे ॥ ५२ ॥
तब करत सीख सयानि सखिसब,
मिलि परस्पर प्रेमसो ।
हिय धार इह सुकुमार मूरत,
सेवियें नित नेमसो ।
जरजाहु लाज कुटुंबकी,
मरयादपर पाहन परो ।
इन काम जीवन प्रानसों,
किन बात जिन अंतर करो ॥ ५३ ॥

तज मान तनमन प्रान धन,
कुरबान इनपर कीजियें ।
सुनरी सयानी सुघर सजनी,
लाहु इनविध लीजियें ।
एसें सकल मिल नारिनर,
हरिके चरन हिरदे धरे ।
करजोरि पुन पुन जन बिहारी,
विनय सो वंदन करे ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

हरिमुख चंद चकोर द्रग,
करत पानरस प्रेम ।
चतुर नारिके चित विषे,
नित नित एही नेम ॥ ५५ ॥
छबि देखी सब छक रहे,
धर अखंड हरि ध्यान ।

ठोर ठोर वृजवासि मिल,
करत हरिगुन गान ॥ ५६ ॥
जब एसे नरनारि मिल,
पुजे पूरन काम ।
तब आए प्रभु बन विषे,
ग्वाल सहित घनश्याम ॥ ५७ ॥
जलचर थलचर जंतके,
भिन भिन देखी भाव ।
कहत वचन तब कृष्णजू,
अपनी उक्त उपाव ॥ ५८ ॥

॥ छंदजात वेताल ॥

बरननसु कर बलदेवको,
श्रीकृष्णजु समजाव हे ।
वनवेलि खगमृग भ्रमर दादुर,
इन विपे इह भाव हे ।

बोलत विहंगम वन विषे,
तिनके जु शब्द सुहावही ।
मनहोंन मुनीजन सकल मिल,
गोविंद तव गुन गावही ॥ ५९ ॥

नाचतसु बन बन मयुरगन,
एसी अजब छब लाय हे ।
मनहोंन नटवा भेखधर,
तुमको रिजावन आय हे ।
मकरंद कुस्म सुगंधपर,
इह भमर गुंजारव करे ।
मनहोंन तव गुन गायके,
गंधर्व सुंदर सुरभरे ॥ ६० ॥

इन गायके ढिग आय मृग,
मुख फेर सनमुख कर रहे ।
मनहोंन मुनीमुख मौन लेकर,

ध्यान तुमरो धर रहे ।
लीने लतान लपेट बन,
पल एक तिनहीन परहरे ।
मनहोंन प्यारी पीयको,
उरलाय आलिंगन करे ॥ ६१ ॥
अत फावही फलफूल दलसो,
जूम इह वन जुक रहे ।
मनहोंन तरु तव चरनपर,
फल भेट धर पुन पद गहे ।
करही सरन तट सोर दादुर,
जन बिहारी मनहरे ।
मनहोंन तव गुन वेदकी,
दुज बाल मिलकर धुन करे ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

एसें भिन भिन भाव इह,
वलप्रति कहत बनाय ।

तब यमुनाके तीरपर,
बेंठे बनतल आय ॥ ६३ ॥

बनतल बहुत प्रकारके,
खेलत नाना खेल ।
ग्वाल बाल व्रजलाल मिल,
करत कुतोहल केल ॥६४॥

जुग जुग जोरी परसपर,
मिली करत मलजुध ।
लरत फिरत गिरपरत घर,
आनंदित अविरुध ॥ ६५ ॥

तवउत मोहन मिलनकों,
अति आतुर वृजनार ।
रुचरुच भूषन वसन तन,
सकल धरत श्रंगार ॥ ६६ ॥

॥ अथश्री गोपिकातन श्रंगार वरनन ॥

॥ छंदजात त्रोटक ॥

जल मंजनसो तिन कीन तबे,
सुच अंग उवेट किये जु सबे ।
पस चंदन अंग चुवा चरचे,
अपने अपने तनको अरचे ॥ ६७ ॥

कुच केसर कुंकम रंग दिये,
इन भांति अलंकृत अंग किये ।
तब संपुट हाथ लिये हसके,
शिर गुंथन केस किए कसके ॥६८॥

शिरमें फिर चंपक फूल धरे,
तिनके मध्य मोतिनकी जुलरे ।
पुन कोमल याद तले तिनमें,
रुच रंग तरंग भले जिनमें ॥ ६९ ॥

नख पंकत मंजुमनी गनसी,
पग सोभत सो मुगता कनसी ।
पहिरे पद नेपुरपे जुनियां,
तिनमें विछुवा करही धुनियां ॥७०॥
जुग जंघन कांचन थ्रंभनसी,
कदलीदल कोमल षंभनसी ।
पटपीत निलांबर अंग धरे,
अत सोभत रंग सुरंग भरे ॥ ७१ ॥
कटि सूक्षम हे अतिसे करके,
मनु कोमल द्रुम लता लरके ।
कटिके तट सुंदर नाभनली,
विकसी मनु कोमल कंजकली ॥७२॥
कुचपीन नवीन लघु सगरे,
मनु तालनतें फल तोरि धरे ।
अतसे उर मंडलमें जुलसे,
तिनकेपर कंचु कियां जुकसे ॥७३॥

मुगताफलकी जुगमाल बनी,
उर सोभत सो अतिसे जुघनी ।
मृदु मंजुल गात गलें जिनके,
पुन कंबुक कंठ भले तिनके ॥ ७४ ॥
पहिरे तिनमें गहने सुघने,
उर सोभत सो कहनेंन बने ।
तिनमांज अमोल जरी मनीयां,
तिनके बिच हीरनकी कनियां ॥७५॥
पुन सोभत सुंदर पीठ घनो,
कदली बीच कोमलपातमनो ।
नव अंग भुयंग भुजा जिनकी,
मुख बात न जात कही तिनकी ॥७६॥
कर कोमल कंज मनोकलियां,
तिनमें दल दीरघ अंगुलियां ।
करमें अत शोभत कींकनिया,
तिनमें नगनील जरी मनीयां ॥७७॥

मुखकी मुखबात कहाजु भनो,
मुख सीतल पूरन चंद मनो ।
मुखमें छब जो मुख तुंड दिये,
न मिले जग मूंडन मूंड किये ॥७८॥

दमके अत बींब अधोरनकी,
चमके छब दंत मधोरनकी ।
पुन पंगत जो मुख दंतनकी ।
जगहो तनसो पुनवंतनकी ॥७९॥

इक दीप सिखासमनाक छबी,
मुख मंडलमें अतसेजु फबी ।
तिनमें नकबेसर राजत हे,
अतिसें तीनकी छबी छाजत हे ॥८०॥

पुन जो मुखमें छबिनाक दिये,
किनको न मिले तप जोग किये ।
इक जो छबी लोल कपोलनकी,
न बने विधसो मुख बोलनकी ॥८१॥

सुभ कानन जाल अति जलके ।
नग भाल विशाल भले भलके ।
मृगसें द्रग दीरघ नेह भरे,
मुख मंदिर दीपक जोर धरे ॥ ८२ ॥
मुखमें इक जोछबि नेंन दिये,
न मिले जग कोटिक पून किये ।
भ्रकुटी तट जो इक भोंह रचे,
न मिले जग जो सत जन्म पचे ॥८३॥
चित चोरत चुंनरियां जिनकी,
शिर सोभत भांत भली तिनकी ।
फिर कांचनके शिर फूल बने,
शिर सोभत सो अतिसेजुघने ॥८४॥
पुनहाटक संपुट हाथ लई,
भ्रकुटी बिच सुंदर बींददई ।
पुन अंकित लोल कपोल किये,
द्रग खंजन अंजन रेख दिये ॥ ८५ ॥

व्रजनार कुमार भलीजु फबी.
सब एकनएक अधीक छबी ।
व्रज भामनी दामनिसी जुलसे,
अपनी अपनी छब देखहसे ॥ ८६ ॥

मनु हेमलता फलफूल धरी,
अत आनंद अंग उमंग भरी ।
कर जोर जबे शिरमाट धरे,
कटि कोमल द्रुमलनासि लरे ॥८७॥

पट अंबर भूषन पेर सबे,
मिल जूथ चली ततकाल तबे ।
जननं पग नेपुरसो जनके,
ठननं पग पेजुनियां ठनके ॥ ८८ ॥

छननं छननं विछुवा छनके,
खननं खननं चुरिया खनके ।
इनभांत चली मग आवत हे,
गजकी गतकोसु लजावत हे ॥ ८९ ॥

मधुरी मधुरी मुख बोलत हे,
अपनी अपनी गत खोलत हे ।
जिनके जिनके मन भावज था,
करही निलके बलकृष्ण कथा ॥९०॥
जितमोहन धेन चरावत हे,
मिलके तिनही मग आवत हे ।
इनभातसु आवत भेट भई,
यमुना तट मोहन रोक दई ॥९१॥
अत नेह सनेह सबे भरीयां,
मनु कांचनकी पूतली खरिया ।
भ्रकुटी तट भ्रोंहक बान करी,
मृगसें द्रगतीक्षन तीर भरी ॥ ९२ ॥
मुख मोहनके सर मारत हे,
मधुरी छबि अंतर धारत हे ।
दुख मोचन लोचन नेह भरे,
लबि मोहनकी द्रगपान करे ॥ ९३ ॥

चितकी वृतिसो तदरुप भई,
रसरुप अनूप सरुप मई ।
अतिसे अदभूत दिसा इनकी,
कविको विद कोनकहे तिनकी ॥९४॥
अतसे करजो यह गूढगती,
जन जानत कोइक माहमती !
गमहे सुक सारद नारदको,
हरि जानत हे इन हारदको ॥ ९५ ॥

॥ दोहा ॥

रेंन गोपिका चरनकी, सदा हमारे सीस ।
जनवेरा कर जोरि जुग, वंदे विसवावीस ॥९६॥

सोरठा.

नागर निकट बोलाय,
कृष्ण वचन एसे कहे ।
उभी सनमुख आय,
प्यारेंको परनाम कर ॥ ९७ ॥

सुनो सकल दे कान,
वर मुखवारी वचन मम ।
मृगनैंनी तज मान,
दान हमारो दीजिये ॥ ९८ ॥
मागत होंत जमान,
दया करी सो दीजिये ।
कर अपने कल्यान,
लाहु इन विध लीजिये ॥ ९९ ॥
मेरे मुखसो माग,
हे ललनामें लेतहो ।
भले तुमारे भाग,
हमको दीजे हेतकर ॥ १०० ॥
दे चाखन चितलाय,
गोरस तेरो ग्वालनी ।
जीभ न बरन्यो जाय,
खायो तिनको खबरहे ॥ १०१ ॥

सदा सवेरी सांज,
  खायो दुध हम खुब कर ।
मैं एसो उनमांज,
  स्वाद न देख्यो सुंदरी ॥ १०२ ॥
आनंद उर उपजाय,
  हे प्यारी कछु प्रेमकर ।
खांखत करजो खाय,
  दधि सोताको दीजीये ॥ १०३ ॥
कहो कहा तुम कौन,
  मेरे मनको मोहनी ।
पीनस्तनी प्रबीन,
  जीय मेरेकी जानीयें ॥ १०४ ॥
निजकर पकरी नाथ,
  तोरी देखाये ताल फल ।
कहे कृष्ण सब साथ,
  ईनतक माखन दीजीये ॥ १०५ ॥

समज गई इह सान,
सुनी वचन रस रीतके ।
मुख पर करही मान,
अंतर आतुर मिलनको ॥ १०६ ॥

॥ कुंडलीया. ॥

हरि हमारे हेतकी,
भली कही व्रजलाल ।
चंचल नैंन चढाय कर,
बोली मुगधा बाल ।
बोली मुगधा बाल,
सुनो सजन सुखदायक ।
एसें वचन अजोग,
लाल तुमको नहि लायक ।
घर घरको दधि खाय,
भये मोहन मतवारे ॥

भली कही व्रजलाल,
    हेतकी हरि हमारे ॥ १०७ ॥

वचन विचारी बोलीयें,
    करीयें नहि कुरीत ।
गिरधर गोकुल नगरमें,
    नई चलाई नीत ।
नई चलाई नीत,
    बडो जगमें यश लीनो ।
दधि मांखनको दान,
    कदी हम सुन्योन दीनो ।
मुख छोटे सो बात,
    बडी कीजें न मुरारी ।
करीयें नही कुरीत,
    बोलीयें वचन विचारी ॥ १०८ ॥

दोहा.

मान देखावत मदभरी, रसिक बढावन रीत ।
बाहिर व्यंग वचन कहे, अंतर पूरन प्रीत १०९॥

छंदजात नाराच ॥

सुनोजु नंद नंदन,
कछू विचार कीजियें ॥
उचीष्ट दुग्ध आजको,
प्रवीन सो न पीजियें ।
ललाजु लोक वेदकी,
कछूक रीत राखियें ।
अजोग जूठ ओरकी,
चतूर सो न चाखिये ॥ ११० ॥
दधी सु आज ओरसो,
मुरार मांग लीजियें ।
सखा समेत हेतसो,

पियासु दुग्ध पीजियें ।
विना पिछान प्रेमसो,
दया करी सुदेतहे ।
अती उदार आपसें,
लबार सोइ लेत हे ॥ १११ ॥
सबे सरुप सुंदरी,
अधीक एक एक तें ।
अनंग रंगसो भरी,
विनोदके विवेक तें ।
बडे धनाढ्य बापकी,
बडीजु लाडली लली ।
कुमार कंज लोचनी,
सुता सुभानकी भली ॥ ११२ ॥
पिया रसीक रीतमें,
बडी चतूर बाल हे ।

मनोज गर्व मर्दनी,
मनोज कोइ काल हे ।
कठोर उर्ज कन्यका,
किसोर कंजकी कली ।
पियासु प्रीय प्रानतें,
अधीक आपको अली ॥ ११३ ॥
दयाल सोइ बालको,
भलीजु भांत भेटियें ।
महा विनोद मोदसो,
मनोज ताप मेटियें ।
करे प्रसिध कीरती,
अनेक लोक आपकी ।
बढाइ लाज लोकमें,
बढीजु नंद बापकी ॥ ११४ ॥
भलेजु भाग नंदके,
सपूत आपसें भए ।

कमी रही न काहुकी,
प्रताप आपके नए ।
अहीर गाम ओरकी,
सुठोर ठोर जो ठगी ।
अधीक लोच आपको,
ललाजु ताहितें लगी ॥ ११५ ॥
ठगी अनेक ठाम ठाम,
आपको ठगायके ।
गई लबार ग्वालनी,
सुलोचको लगायके ।
बडी चतुर बालसों,
प्रवीन प्रान लेगई ।
लगाय लोच आपको,
दुरंत प्यास देगई ॥ ११६ ॥
पर्यो सुभाव जो पिया,
सुभाव सो न जातहे ।

अजोग जोग ओर ओर,
खाय खाय खातहे ।
कदी न प्यास भीखसो,
कही न काहुकी गई ।
अत्यंत लोच आपको,
भलीजु भीखसों भई ॥ ११७ ॥

॥ दोहा ॥

पिकबेनी बेनी अही खंजननेंनी नार ।
ससिवदनी सदनी सुधा,रदनी ओप अनार॥११८॥

॥ सोरठा. ॥

प्यारी तुमरे प्रान,
तुम प्यारीके प्रान प्रभु ।
पर्मप्रीत पहिचान,
प्यारीको दधि पीजीयें ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥

यों कही गोपीजन सबे,
ठाढी अपने ठोर ।
तबे सुबल बोलत वचन,
सब रसिकन शिर मोर ॥ १२० ॥

॥ छपय ॥

सुबल सुदामा संग,
सखा सेवक सुखदायक,
चँचल चपल प्रवीन,
लीन पद सेवा लायक.
हरिसन हास विलास,
रासलीला वर ल्यावत,
अस प्रभुको आनंद,
अधिक पलपल उपजावत.
पुन सुघर सयाने सब सखा,

रामकृष्ण संगे रहत.
तब सब सखीयनके साथसों,
सुबल वचन साचे कहत ॥ १२१ ॥

॥ दोहा ॥

सुबल कहत साचे वचन, सुनत सख्यनके वृंद ।
सोकवि कछु अब कहतहे, मुक्तदाम यह छंद॥ १२२॥

सुबलोवाचः ॥ छंद मोतीदाम ॥

सुनो प्रिय सुंदरनार सुजान,
मिली हमकोहि दिखावत मान ।
जनावत जोबनको अत जोर,
इछा मन एक दिखावत ओर ॥ १२३ ॥

बनावत बाहिर ओरहि बात,
अती मनमांज रही अकुलात ।
रहे इह बाल रदे रस रीत,
पटावत बाहिर अंतर प्रीत ॥ १२४ ॥

तुमे तुमरो कर आपहि तोल,
बतायदयो अपने मुख बोल ।
मती अपनी अपने मुखद्वार,
लखावत आपहि तेहि लबार ॥ १२५ ॥
अनेक सखी इनके पद आज,
तलासतहे तुमरी शिरताज ।
मयंकमुखी तुमरे शिर मोर,
भरे जल भूधरके घर भोर ॥ १२६ ॥
चतूर महा उपजावत चेंन,
रमापति संग रहे दिनरेंन ।
जुरी जुग जूथधु आवत जात,
सखी ग्रहनंद खरी न समात ॥ १२७ ॥
हरीहिय धारन कारन हेत,
न छांडत नीलज नंदनिकेत ।
उमंग भरी मिल आवत ओर,
ठली तुमसी नहि पावत ठोर ॥ १२८ ॥

हरी जियकी गत जाननहार,
नही नटियें तिनसो व्रजनार ।
कहा मुख मोरत मांखन काज,
लली तुमको नहि आवत लाज ॥ १२९॥
हरी कछु मांगतहे कर हेत,
दुरावतसो अब क्यों नहि देत ।
कहा कछु हे किनकी अब कान,
मृषा करियें न अकारन मान ॥ १३० ॥
सखी किनकी मतमानहुसंक,
अली इनसो मिलियें भर अंक ।
पुनी करियें अधरामृत पान,
जदूवरको जियतें प्रियजान ॥ १३१ ॥
भली विधसो भुज अंकनभीर,
सदा करियें कुळचान सरीर ।
जदूकुलको इह भूषन जान,
सखी मत मानहु आप समान ॥ १३२ ॥

रहे जिनजान हुवे नररुप,
सनातनहे इह ब्रह्म स्वरुप ।
अनोपम रुप धर्यो तिन आज,
रहे तुमरे वससो व्रजराज ॥ १३३ ॥
भयानक देख बडे जगभूप,
रहे अवनीतल सो अघरुप ।
भयो तिनको भुवके शिर भार,
उतारन काज धर्यो अवतार ॥ १३४ ॥
महाजड जीव सु मूंढ मलीन,
दयानिध्द देख दुःखी अरुदीन ।
उधारन कारन सो व्रज आय,
गिरामनतीत चरावत गाय ॥ १३५ ॥
हरि सचिदानंद ग्वाल न होय,
कहो इनको जिन लंपट कोय ।
वपुकृत लोकिक जो विवहार.
लगे इनको नहि एक लगार ॥ १३६ ॥

जथातरनी जल भाजन जोग,
लषे जल भांड मिल्यो सब लोग ।
परीतरनी जल भाजन पार,
वहान लगे जल भांड विकार ॥१३७॥
दिनकर तें जल भाजन दूर,
सदा निरलेप रहे नभसूर ।
पुनी जितने जल भांड प्रपंच,
रवी तनसो न लगे इक रंच ॥ १३८ ॥
जथा तनतें मनतें प्रभुतीत,
अनावृत आप अखंड अजीत ।
हरी करही कृत सो जन हेत,
सुभासुभ जो गुन दोष समेत ॥१३९॥
करे सबही अपने जन काज,
अति उतकृष्ट क्रिया क्रम आज ।
लगे तिनको न कदाचित लेस,
हरी सुध कैवल रुप हमेस ॥ १४० ॥

निरंजन अंजन गंजन आप,
विभंजन मंजन रंजन माप।
अलींगन लिंगन भंगन अंग,
असंगन संगन रंगन ढंग ॥ १४१ ॥
निरासन आसन सासन मास,
निवासन भासन त्रासन तास !
न मातन तातन जातन भात,
अघातन खातन बात विख्यात ॥१४२॥
असांनन सांनन जानन आन,
अथांनन थांनन मानन भान।
अवाचन वाचन साचन जूठ,
अव्याकृत भेद गयो सब उठ ॥ १४३ ॥
वदे न इती न इती कर वेद,
भली विध जानत कोइक भेद।
असीपद वेद कहे अविनास,
रमावत सो तुमको नितरास ॥ १४४ ॥

धरे जिनको सनकादिक ध्यान,
पिछानत व्यापक वेद पुरान ।
कहायत जो अब नंद किसोर,
चिदानंदसो इह माखन चोर ॥ १४५ ॥
सदा जिनके जश गावत सेस,
मिली अज इंद्र मुनींद्र महेस ।
अली इन ईसनके शिर ईस,
जदूवर तेज सदा जगदीस ॥ १४६ ॥
विसारद नारद सारद व्यास,
पछानत पूरन जोत प्रकाश ।
परीतदपी नहि पावत पार,
नचावत हों तिनको व्रजनार ॥ १४७ ॥
जथारथ आतम इसन जीव,
सनातन ब्रह्म निरंतर सीव ।
सदा जिनके पद सेवत संत,
भयो तुमरे वस सो भगवंत ॥ १४८ ॥

अखे अज एक अरुप अनाम,
कहे उपनिषद पूरन काम ।
दया करसो तुमको सुख देत,
हसावत ग्वाल बढावत हेत ॥ १४९ ॥
जती जिनकारन साधत जोग,
भले सब त्यागत ईंद्रिय भोग ।
दुखीत वृथा तनको दुखदेत,
हरी सूपनेन मिले बिन हेत ॥ १५० ॥
कहो व्रजनार कहा तप कीन,
लला जिनतें अपनो करलीन ।
भले प्रगटे तुमरे शिरभाग,
रमाप्रियसो करीयें अनुराग ॥ १५१ ॥
अती अदभूत चरीत उदार,
करे व्रजमंडल नंदकुमार ।
दिखावन आप जहा निरदोष,
मुकंद द्रढावन कैवल मोष ॥ १५२ ॥

अली इन कारन भुतल आन,
भयो अवतार जदूकूल भान ।
अती इह आशय हेजु अगाध,
सके समजी जनजो वृत साध ॥ १५३ ॥

दयानिधको इह दुर्लभ देश,
सराहतहे विधि शंकर सेस ।
गती अतसे करजो इह गूढ,
रदे तदरूप रहे पदरुढ ॥ ॥ १५४ ॥

छपय.

इह लीला अदभूत,
जथारथ कोइक जानत ।
सकल जक्त साक्षात,
प्रगट परब्रह्म पिछानत ।
करतव काय कलेस,
लेस तिनको नहि लागत ।

स्वपद रहें समाय,
मह्राजन मुक्त न मागत ।
पुन असनित जानत आपको,
असंग पूरन पद अभय ।
कहे जन बिहारी सो जानीयें,
महामुक्त विज्ञानमय ॥ १५५ ॥

॥ दोहा ॥

महामंगल आनंदमय, स्वस्वरुप निज सार ।
व्रजभोमी अवतार भय, करत सुचरीत उदार ॥

॥ सोरठा. ॥

प्रभु सत रज तम पार,
गुनागार मानंदघन ।
माननी संग मुरार,
करत केल मोहनमदन ॥ १५७ ॥

॥ दोहा ॥

मगम भई सब वचन सुनी,
पुनि पुनि करत प्रनाम ।
जन्म करम तुमरे नही,
प्रभु तुम आप अकाम ॥ १५८ ॥
अक्रिय आप अनामी अज,
जन्म धर्यो जनहेत ।
करत चरीत प्राकृतसु इव,
दयासिंधु सुखदेत ॥ १५९ ॥
सुनहू नाथ विनती अबे,
तुमसो कहु कछु ओर ।
पानकरहु पय प्रेम करि,
स्याम सकल शिरमोर ॥ १६० ॥

॥ सोरठा ॥

कहा दुग्धको तोल,
तन मन वारों चरनपर ।

हम सब दासि अमोल,
प्रभुपद पंकज रेनकी ॥ १६१ ॥
तुमरे दरस अमोघ,
भाग्य बडे हमको भए ।
सब नासे अघमोघ,
महामंगल छबि निरखके ॥ १६२ ॥
यों कहि नायो सीस,
सब सखीयन हरिचरन मह ।
तब बोले जगदीस,
पुरुषोत्तम अति प्रेमकर ॥ १६३ ॥

॥ कुंडलीया. ॥

व्रजबाला मम प्रानप्रीय,
तुमरो हेत विचार ।
में अनाम अक्रीय अज,
प्रकृति गुनतें पार ।

प्रकृति गुनतें पार,
वचन मन बुध गोतीतं ।
निरमल निश्चल नित्य,
निरामय आप अद्वैतं ।
सो में धरो अवतार,
करुं अति चरीत रसाला !
धन धन तुम व्रजनार,
प्रानप्रीय मम व्रजबाला ॥ १६४ ॥

॥ दोहा ॥

पुरुषोतम सब प्रेमदा,
भये सकल रसरुप ।
पान कीये दधि प्रेमसो,
आनंदकंद अनूप ॥ १६५ ॥
मोहनके सन माननी,
बोले प्रेम प्रकाश ।

अपनी बड़ाइ जानके,
करहु चरनकी दासि ॥ १६६ ॥
अंतरजामी आप प्रभु,
हियको समुजी हेत ।
तट यमुना ततकाल तब,
आये सखा समेत ॥ १६७ ॥
श्याम सुंदरी सब सखा,
रसमय भये रसयेन ।
अति मति पागे प्रेमसो,
मोहन मरदन मैंन ॥ १६८ ॥
अति उमंग आनंदसो,
रसिक बजाई बैंन ।
धुनि सुनि मुनि धाये सकल,
सुफल करन निज नैंन ॥ १६९ ॥
सर सरोज विकसे सकल.
गूंजतहे अलीमाळ ।

सुक पिक सारस सारिका,
बोलत बचन रसाल ॥ १७० ॥

सोलकला पूरन ससी,
दस दिसिकीन प्रकाश ।
सुधा श्रवत रसमी सकल,
गयो तिमर सब नास ॥ १७१ ॥

कनक भोमी मनीमय जटित,
जोजन एक प्रयंत ।
व्रजाधीस व्रजवधु सकल,
दरसत एक अनंत ॥ १७२ ॥

सुंदर सरवरी निरखके,
हरिमन भयो हुलास ।
वृछवेली फूली विविध,
कोमल कुस्म सुवास ॥ १७३ ॥

॥ छंदजात हनुफाल ॥

सुभवास सुभन प्रकाश,
तहां रच्यो मनोहर रास,
अति सुभग जमुना तीर,
गंभीर निरमल नीर ॥ १७४ ॥

तट कदम ब ल अनार,
सुरतरु श्रीफल सार ॥
पुनिपुंगी केलि रसाल,
जंबेरी जांबु तमाल ॥ १७५ ॥

केतकी कनीयर जाय,
मालती सुभग सुहाय ।
चंबेली गुल गुलबास,
माधवी किंदु सुवास ॥ १७६ ॥

मंदार वृंदावृंद,
सुभ श्रवत है मकरंद ।

इत्यादि वृक्ष अपार,
बनवेली भार अढार ॥ १७७ ॥
फलफूल दल अगनीत,
अलीमाल गावत गीत ।
कोकिला चात्रक मोर,
पुनी चक्रवाक चकोर ॥ १७८ ॥
सारिका सारस हंस,
जनु करत कृष्ण प्रसंस ।
सुभ करत सुंदर गान,
मन मुदीत भए गुलतान ॥१७९॥
अस निरख आनंदकंद,
सब ग्वाल गोपीवृंद ।
ततपरसु भए ततकाल,
गल धरे गुंजामाल ॥ १८० ॥
अति हावभाव प्रकाश,
हिय धरत अति हुलास ।

सुभ सकल साज संवार,
वाजिंत्र विविध प्रकार ॥ १८१ ॥

॥ दोहा ॥

सुर निरखन आए सकल, अपसर गननि अपार।
चढि विमान चकित भए, वंदत वारंवार ॥१८२॥
तीन ग्राम सुरसप्तके, साजे सकल समाज,
बहूविधबंसी नादमें, गावत हे वृजराज ॥१८३॥

॥ छंद त्रीभंगी ॥

वृजराज सुरंगं आनंद अंग,
अति उमंगं उछरंगं।
मनुकोटि अनंगं धारागंगं,
बजत मृदंग मुरचंगं ॥ १८४ ॥
भिन भिन वपुधारी मदनमुरारी,
भवदुखहारी गिरधारी।
भुजपर भुजधारी पानपसारी,
लेतसुतारी वृजनारी ॥ १८५ ॥

खेलत व्रजबाला कृष्णकृपाला,
रमतरसाला वृजलाला ।
हियहार विसाला जबकतजाला,
गतिमराला गजचाला ॥ १८६ ॥

जुगजुग व्रजभामा दक्षणवामा,
मध अभिरामा घवश्यामा ।
सुंदर सुखधामा पूरनकामा,
आप अकामा गुनग्रामा ॥ १८७ ॥

अपसर सुरहरषे पुष्पनी वरषे,
नैंननि नरषे पीयपरषे ।
मनमथ आकरषे तारूनी तरषे,
सरषासरषे सुखवरषे ॥ १८८ ॥

सुंदर सुरजीने कौतककीने,
परमप्रवीने रसभीने,
परमामृत पीने निजजन चीने,
नाथनवीने सुखदीने ॥ १८९ ॥

निजजन सुखदायक सुभगुन लायक,
मोहनमायक गुननीपरं ।
सब सुरनरनायक संतानिसायक,
कायकवायक रोगहरं ॥ १९० ॥

प्रभु परम पुनीतं जनमन जीतं,
गावत गीतं संगीतं ।
हरि अकल अजीतं मनगोतीतं,
आप अमीतं अद्वैतं ॥ १९१ ॥

॥ सोरठा ॥

रसिक बनायो रास,
हिय हरषे हरिगोपिका ।
पूरन प्रेम प्रकाश,
मनमुदीत सबको भयो ॥ १९२ ॥

आनंद भयो अपार,
सब व्रजजनको मन विषे,

वंदत हे व्रजनार,
    जन बिहारी करजोरी जुग ॥१९३॥

॥ छपय ॥

रास रच्यो जदुराय,
    अती आनंद सुखकारी ।
कीने अदभुत केल,
    महाबन मदन मुरारी ।
जिनको गावत सेस,
    सदा सनकादिक ध्यावे ।
धरही रिदेमें ध्यान,
    पुरंदर पार न पावे ।
गनपतदेव नितप्रत रटे,
    सुमरे सारद नेमसुं ।
पुनिजन बिहारी करजोर कहे,
    पुरुषोतम भज प्रेमसुं ॥ १९४ ॥

असप्रभु निसिदिन केल,
करत दिनादिन प्रतदेवा ।
अति अनूप रसरुप,
अमीतगुन अकल अभेवा ।
अज अविनासी एक,
सेषश्रुतीको जेहि हारद ।
जानत संत म
निगम मुख गावत नारद ।
सनकादि सेस शंकर रटे,
मनमुदीत मानंदघन ।
सोसगुनरुप विहरत हरि,
निज जनतारन संतगन ॥ १९५ ॥
विक्त निसाभय भोर,
भ्रमर पंछी बनबोलत ।
कीय जमुनाजल स्नान,
गोपी गोविंद सनदोलत ।

मधुर बजावत बेंन,
धेंन चारत गिरधारी ।
नित नौतन छबि अंग,
संग ग्वालन सुखकारी ।
करी प्रनाम पदधारी चित,
आग्या मागत सब सखी ।
तब विदा करी हरिहेतसो,
भवन गइ काहुन लखी ॥ १९६ ॥

॥ छंद मनहर ॥

सुबल सुदामा संग, रसिक रचायो रंग,
आनंद सुभरे अंग, फूलचुनी लायेहे ।
रूचीर बनाई दाम, अहोयाहि अभीराम,
स्याम सुख धाम ताके गळ पहराइ हे ।
गुंजनकी माला ओर सुभग बनाई बोर,
शाम शिरमोर उर धरी छबि छाए हे ।

वंदन करत ग्वाल बाल मन मोद धरे,
निरखो दयाल निज नेंननी सराए हे ॥१९७॥

॥ दोहा ॥

दिन वितीत भय देखके, सकल सखाके वृंद ।
विनयकरत करजोरि जुग ग्रेह चलहु गोविंद॥
तबे कृष्ण कहे सब सखा, गोधन लीजे संग ।
सुरभी एकठो साजके, व्रजको चले उमंग ॥१९९

॥ छंद इंद्रविजय ॥

बंसि बजावत गावत सुंदर,
गीत अनोपम आनंदकारो ।
फूलनके गजरा शिर सोहत,
कानन कुंडल कुसम सुधारी ।
श्रेष्ट सखा मिल नाचत कूदत,
गौअन संग बने गिरधारी ।
नाद नजीक सुन्योहि सखी सब,
मंदिरतें निकसी वृजनारी ॥ २०० ॥

॥ दोहा. ॥

अहो सखी आवत सबे, ग्वाल कृष्ण बलराम,
अपने भाग्य सराय अति, पुनि पुनि करत प्रनाम ॥

॥ पद राग गोडी. ॥

सोई गोविंद गौअनि संग आवे,
जाकुं निर्गुन ब्रह्म निगम गावे ।
सोई गोविंद गौअनि संग आवे. टेक.
गौर स्याम जुग जोरी मनोहर,
नंद जसोदाके कुंवर कहावे ॥ १ ॥
सुंदर वदन कमलदल लोचन,
मुख सोभा वरनी न जावे. ॥ २ ॥
सुंदरमाल गले मोत्यनकी,
फूलनिके गजरा फाबे ॥ ३ ॥
सुंदर चाल चलत गजकीगत,
मोर मुकट कीलट कलावे. ॥ ४ ॥

मोरलीकी धुनी सुनी धाइ सकल सखी,
स्याम मिलनको चित चावे. ॥ ५ ॥
ठोर ठोर सखी लेत बलैया,
भर लोचन दरसन पावे. ॥ ६ ॥
मात जसोदा आरती साजे,
जन बिहारी जुके मन भावे. ॥ ७ ॥

॥ दोहा. ॥

मोहन मंगल मूरती, मोहन मंगल बेंन ।
मोहन मंगल बंसुरी, सब गुन मंगल एन ॥२०२॥
सुखकारी आए सदन, आनंद भयो अपार,
उस्नोदक आनी धर्यो, मंजन कीन मुरार ॥२०३॥
पीतांबर पहेरे प्रभु, आये आप निकेत,
आसनपर आनंदघन, बेठे भ्रात समेत ॥ २०४ ॥

॥ पद राग गोडी ॥

हरीको प्राननितें प्रिय जीयजानी,
असकरत आरती नंदरानी. दोढ. ॥ १ ॥

कांचन थाल कपुरकी बाती,
अग्रधुप चंदन आनी ॥ २ ॥
अंकुर पान फूलफल अक्षीत,
दधीदुर्वा मंगलखानी ॥ ३ ॥
जारत वदन यसोदा गौरज,
सुत निरखत जुग सुखदानी ॥ ४ ॥
आरती वारती वदन निहारती,
हरषित हिय मुख मुसकानी ॥ ५ ॥
निरखत सुंदर स्याम सकल सखी,
वंदत जोरी जुगलपानी ॥ ६ ॥
गावत ग्वाल बाल मिल मंगल,
उचरत मुख अमृत बानी ॥ ७ ॥
लीला ललीत लाल गिरधरकी,
जनबिहारी जुके मनमानी ॥ ८ ॥

॥ अथ ध्यानमंजरी ॥

॥ दोहा ॥

अदभुत छबि आनंदमय, मेरे जीवन प्रान,
जनबिहारी करजोरी जुग, बहुरी करों बखान २०५

॥ छंदजात बेआखरी ॥

बहुरी करों प्रभुकी छबि बरनन,
चित मेरो लागो जिन चरनन ।
यथायोग हे यह छबि जेसें,
कही न जात कवि वरनन केसें ॥२०६॥

स्याम सरुप सुभग तन सुंदर,
वृजाधीस वृज नटनागरवर ।
चरनन करत चारु नेपुरधुन,
होत अधीर धीर यह धुन सुन ॥२०७॥

सुंदर जुगल जानु जंघावर,
कटितट कटिमेखला मनोहर ।

अद्भूत उदर बीच नाभी अध्द,
मनहाँन भमर परत जलके मध ॥२०८॥
बनी विशाज उरमाल मनोहर,
सुभगुन सकल सदन सुंदरवर ।
अति कपोत करकंठ विशेषा,
ताबिच रुचीर बनी त्रयरेषा ॥ २०९ ॥
पुनी प्रचंड भुजदंड बाहुबल,
खेद लहे जिनतें केवलखल ।
रतन जटित कर कंकनराजे,
बांहन वाजुबंध बिराजे ॥ २१० ॥
अधिक अधिक पलपल छबि आनन,
मकराकृत कुंडल छबि कानन ।
चारुचिबुक जुगदसन पांतिवर,
नवल नासिका सुभ अति सुंदर ॥२११॥
गुलीक जुगल गंडस्थल सोहन,
मुसकन हसनमदन मनमोहन ।

चँचल चपल चारु जुगलोचन,
परम दयाल दीन दुखमोचन ॥ २१२ ॥
रुचीर भाल गौरोचन रेषा,
बनि लिलाट बिच बिंदी विशेषा ।
पेंचदार पगरी शिर सोभित,
जिन अतिकीन मदनमन क्षोभित ॥२१३॥
मनी जटीत शिर मुकट मनोहर,
ताबिचलसत ललित मुक्तावर ।
अंग अंग अंबरवर भूषन,
जिनके दरस मिटे सब दूषन ॥२१४॥
कोटि कोटि मंगलमय मूरत,
सुक्रित कोटिसदन इह सूरत ।
अति विचीत्र लीला विस्तारन,
यदुकुल जन्म धर्यो जन कारन ॥२१५॥
अजर अमर गुन अगुन गुसैयां,
सो प्रभु चारत बन बन गैयां ।

श्रुतीपुरान कोउ पार न पावे,
सो प्रभु ग्वालन ग्वाल हसावे ॥२१६॥
जिनको जोगेस्वर नही जाने,
सो ललना रसरूप लुभाने ।
जिनको शिव सनकादिक ध्यावें,
सो प्रभु ग्वालनसो मिल गावे ॥२१७॥
जिनकी महीमा कहीन जावत,
तिन प्रभुको वृजनार नचावत ।
कानकान पुनि कहत कनैया,
लेले नाम लडावत मैया ॥ २१८ ॥
निरविकार निजरुप दिखावन,
व्रजविहारी कीनो वृज पावन ।
अती अगाध आशय दिखरायो,
किनकिन विरले संतन पायो ॥ २१९ ॥
दीनदयाल जानि जदुनंदन,
वारवार करहों पद वंदन ।

दास बिहारी जानि जन अपनो,
स्वामी दूर करो जग सपनो ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

सुखद सिंधु अवतार सब,
रतन कृष्ण बलराम ।
सोव सहु ममचित सदन,
ध्यान जोग छबि धाम ॥ २२१ ॥

छपनभोग विंजन छती,
पिरस धरे निजमात ।
भोजन करि हरि भावसें,
आनंदकंद अघात ॥ २२२ ॥

यमुनाजल मगवायके,
कीये आचमन पान ।
पान सोपारी एलची,
आरोगे भगवान ॥ २२३ ॥

तबे मातु प्रभू प्रातसो,
सुख सय्या पधराय ।
गोपीजन प्रेमे ठगी,
नंदभुवन फिरि आय ॥ २२४ ॥

करत कथा श्रीकृष्णकी,
बनबन कीये विख्यात ।
उंघे हे आनंदघन,
पुनी जागे परभात ॥ २२५ ॥

॥ छपय ॥

आप सखा मिल संग,
करत बनबन प्रतलीला ।
पुनि आवत निज भुवन,
श्याम सुंदर सुभसीला ।
करत चरीत अदभूत,
महामंगल मनरंजन ।

निज जनको सुखदेत,
आप प्रभु निरीह निरंजन ।
अरुयह लीला पावन परम,
रामकृष्ण जो करत नित ।
सो रामकृष्ण सर वातमां,
सुखकारी मम वसहुचित ॥२२६॥

॥ सोरठा. ॥

एह हे बाल विनोद,
रामकृष्णके यश विसद ।
जन बिहारी मनमोद,
कहत सुनत सुख लहे अमित ॥२२७॥

दोहा.

कही एक निसिदिनकी कथा,
कछू मनवच सुध हेत ।
गुरु प्रसंस अब कहु कछु,
लछकुलदेश समेत ॥ २२८ ॥

॥ छंद पधरी ॥

धन भरतखंड द्वारिकाधाम,
पुरि निकट वसत कच्छदेश नाम ।
तहा सदा वसत जदुवसराज,
भूव सकल भूप शिर मुकुट ताज ॥२२९॥

नृप नाम राव खेंगार जान,
भुजनगर तखतपर ब्राजमान ।
इह पछमराव भूपाधिभूप,
राजाधिराज राजंद्ररुप ॥ २३०॥

सुभ करम धरम द्वज संत गाय,
नृप सदा करत तिन तिनकी साय ।
द्रढ काछ वाच निज धरमधार,
सब प्रजा सुखद रन सूरवीर ॥ २३१ ॥

तिन महा महीपकें अनुज भ्रात,
तिहि वंस स्वामी देवा विख्यात ।

सो जग प्रसिद्ध भए परमसंत,
महाराज हमारे गुरु महंत ॥ २३२ ॥
जदुवंश राजकुल जन्म लीन,
गुरु प्रथम सकल सुभ करम कीन ।
तिन पठन वेद यम नियम जाप,
संध्यादि सकल विधि करत आप ॥ २३३ ॥
कछु काल कीन इह कर्मकांड,
पढि तबही सांख्य सोध्यो ब्रह्मांड ।
पुनि सकल सांख्य गुरु हृदयधार,
चोईस तत्वको करि विचार ॥ २३४ ॥
सब तत्व गनत जो रहेत सेष,
सो परम तत्वपद अज अलेष ।
तिन परमतत्व बिन इतर आन,
संसार सकल मृगजल समान ॥ २३५ ॥
पुन सेष आदि ब्रह्मा प्रयंत,
इह नाम रुप सब नासवंत,

जड दुख विना समय जग असार,
अस कहत साध्य करके पुकार ॥ २३६ ॥
सो सुनत श्रवन मन वचन काय,
उपज्यो निदान वैराग्य आय ।
तब राजभोग सब रोग जान,
गुरु कीन त्याग छरदी समान ॥ २३७ ॥
कृत त्याग कीन मन वचन काय,
थित कीन लीन पद ब्रह्म दिसाय ।
अस श्रवन मनन निदध्यास सार,
भये यह प्रकार साक्षातकार ॥ २३८ ॥
तब उपक्रम उपसंहार कीन,
अभ्यास अपूरवता प्रवीन ।
फल अरथवाद उपपतीय मान,
यही षट प्रकारके श्रवन जान ॥ २३९ ॥
पुनि मनन कीये षटविध प्रकार,
एकाग्र चित आतम विचार ।

निदध्यास अखंडीत तैलधार,
  चीन्यो निज आतम परापार ॥ २४० ॥
सुसमाधी असंप्रज्ञात जान,
  साक्षातकार सोही प्रमान ।
धे ध्याता भाव न रंचताही,
  त्यागेत तत्वं एक असी रहाही ॥ २४१ ॥
नित नेति नेति जो कहही वेद,
  पायो परमातम ब्रह्म भेद,
उपनीषदको जो सेश सार,
  सद सोइ लहो करिके विचार ॥ २४२ ॥
जग आप आप जग ब्रह्मरुप,
  आतमानंद अनुभव अनूप ।
सब द्रस्य पदारथ नास कीन,
  द्रष्टा निज साक्षी सकल चींन ॥ २४३ ॥

सो गुरुदेवा देवाधीदेव,
  मम हृदय वसहु नित करहों सेव ।
कहे विहारी गूरु आतमाराम,
  तेहि चरनकमल पुनि पुनि प्रनाम ॥२४४॥

॥ छप्य ॥

अष्टादस सत सवंत,
  व्यासीया वरष सुजानो ।
भादुमास सुभवार.
  सुक्ल सप्तमी बखानो ।
तादिन ग्रंथ प्रकाश,
  गाम हमला मधकीने ।
सुध असुध कछु होय,
  सुधारी लेहु प्रवीने ।
एह बालविनोदहि ग्रंथको,
  पढे सुने धरी प्रेमचित ।

कहे जन बिहारी वंछित लहे,
श्रीगुरुदेवा प्रस्न नित ॥ २४५ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु पदरज परसके,
कीनो ग्रंथ प्रकाश ।
कहत सुनत निजपद लहें,
होतही ब्रह्म हुलास ॥ २४६ ॥

इतिश्री बावा विहारीसाहेब विरचीते
सदशास्त्रे कुष्णबाल चरीत्रे
श्रीकृष्णबालविनोदभाषा
संपूर्णम् ॥



ॐ

श्रीगुरुदेवायनमः ॥

अथ गनेसगिराओ हरिहर स्तुति ॥

॥ कुंडलीया. ॥

गौरीनंदन गाइयें, प्रथम करी परनाम,
विघनहरे विज्ञानघन, अमर इस गुनधाम ।
अमर इस गूनधाम, सदा संतन सुखदायक,
भवतारक भगवंत, भक्तजन भजवे लायक ।
कहे वेरा करजोर, करों प्रभुके पद वंदन,
प्रथम करी परनाम, गाईयें गौरीनंदन ॥ १ ॥

(२)

गीरा सुधारन गनपती, देवा बडे दयाल,
सबतें पहेला सुमरीयें, लंबोदर सुंडाल ।

लंबोदर सुंडाल, भाल सिंदोर सुधारी,
एक रदनवर वदन, सदन मंगल सुखकारी ।
कहे वेरा करजोर, नाथ सब दोष निवारन,
देवा बडे दयाल, गनपती गिरा सुधारन ॥२॥

(३)

सुधबुध नायक सुमरीयें, आदी वंदन जोग,
तीनको तीनों भवनमें, लेत नाम सब लोग ।
लेत नाम सब लोग, सदा सुरनर मुनीघ्यावे,
स्वर्ग मृत पाताल, सकल जिनके जशगावे ।
कहे वेरा करजोर, महा मंगल सुखदायक,
आदी वंदन जोग, सुमरीयें सुधबुध नायक ॥३॥

(४)

ज्ञान विसारद गनपती, गुणातीत गुणईस,
जो व्यापक सब जक्तमें, परंजोति जगदीस ।

११

परंजोति जगदीस, निगम नेतीकर गावत,
सारद नारद सेस पार जिनको नही पावत,
कहे वेरा करजोर, संतजन समजे हारद ।
गुणातीत गुगईस गनपती ज्ञान त्रिसारद ॥४॥

(५)

समरों देवी सारदा, गिरा सकल गुनधाम,
वरनों बचन विलासनी, निरमल जाको नाम ।
निरमल जाको नाम, ग्रंथ आदी सब गावे,
कविजन करे उचार, सदा संतन मन भावे,
कहे वेरा करजोर, अजनमा अकल अभेवी ।
गिरा सकल गुनधाम, सारदा समरों देवी ॥५॥

(६)

हंसवाहनी हंसपर, धरे निरंजन ध्यान,
वीणा पुस्तक धारिणी, करे हरिगुन गान ।
करे हरिगुन गान, ग्रंथ नाना नित गावे,
विविध भाति विस्तार, गानकर तान मिलावे ।

कहे वेरा करजोर, अखंडानंद दायनी,
धरे निरंजन ध्यान हंसपर हंसवाहनी ॥ ६ ॥

(७)

जक्त विख्याता सारदा, गिरा भारती जान,
कौमारी वरदायनी, वाघेश्वरी पिछान ।
वाघेश्वरी पिछान ब्रह्मचारणी कहावे ।
हंसवाहनी नाम, भूवनेश्वरी भणावे,
कहे वेरा करजोर, चंद्रघंटा बुधदाता ।
गिरा भारती जान, सारदा जक्त विख्याता ॥७॥

(८)

शब्दब्रह्म नित सरस्वती, करही वचन विलास,
मम रसनाके अग्रपर, नीके कर्यो निवास ।
नीके कर्यो निवास, निरंतर नाम उचारे,
अपनो आतमरुप, सदा अपने उरधारे ।

कहे वेरा कर जोर, धरे एही चितवन चित,
करही वचन विलाश, सरस्वती शब्द ब्रह्मनित॥८॥

(९)

शंकर शंकर समरीयें, प्रभु प्रानआधार,
परंजोति परमातमा, सकल तत्वको सार।
सकल तत्वको सार, पारं ब्रह्मा नहि पावे,
अगम अगोचर धाम, निगम नेतीकर गावे।
कहे वेरा करजोर, मूरती ज्ञान मयंहर,
प्रभु प्रानआधार, समरियें शंकर शंकर॥ ९ ॥

(१०)

शिव शिव ताको सुमरियें; ब्रह्मकैवल भगवान,
अनघड अचल अमूरती, चिदानंद विज्ञान ।
चिदानंद विज्ञान, जक्त उपजत इह जासे,
ब्रह्मा त्रण परियंत, कीटकुंजर परकासे।
कहे वेरा करजोर, निगमनेती कहे जाको,
ब्रह्म कैवल भगवान, सुमरियें शिवशिव ताको १०

(११)

शंकर दाता सकलके, मनवंछित वर देत,
धर्म अर्थ अरु कामजे, सोंपे मुक्ति समेत ।
सोंपे मुक्ति समेत, सदाशिवको जब सेवे,
कैवलपद कैलास दयाकर तिनको देवे ।
कहे वेरा करजोर, रंग हम तिनकेराता,
मनवंछित वरदेत, सकलके शंकरदाता ॥११॥

(१२)

निज सोभा यह नाथकी, भस्मी अरू भुयंग,
सोभित सुंदर वदनपर, चंदभाल शिरगंग ।
चंदभाल शिरगंग, अंग वाघंबर धरही,
रुंडदाम अभिराम, काम जिनके डरडरही ।
कहे वेरा करजोर, गौरी मन देखत लोभा,
भस्मी अरू भुयंग, नाथकी यह निज सोभा १२

(१३)

नौतम सोमित नंदिपर, सदागौरी शिवसंग,
देखनको दो तन कीए, भवभवानी इक अंग ।
भवभवानी इक अंग, ध्यान ताको उर धरहीं,
निमसकार करि वारवार, पदवंदन करहीं ।
कहे वेरा करजोर, जुगल वसहु मेरे मन,
सदा गौरी शिवसंग, नंदिपर सोभित नौतन १३

(१४)

जयजय दुर्लभ जक्तगुरु, जय विष्णु जगदीस
तुम देवनिके देव प्रभु, तुम इसनिके ईस ।
तुम इसनिके ईस, कालके काल गुसांई,
तुम परातपर ब्रह्म, प्रगट दिसत सब ठांई ।
कहे वेरा करजोर, सदा संतनिको सुलभ,
जय विष्णु जगदीस जक्तगुरु जयजय दुलभ १४

(१५)

ब्रह्मा करही भजन चित, भवजानतहे भेद,
सुमरे तुमको संतजन वंदतहे नितवेद ।
वंदत हे नितवेद, सदा सुमृती वखाने,
परंजोति जगदीस, इस उपनिषद माने ।
कहे वेरा करजोर, ध्यान जोगेश्वर धरही,
भवजानत हे भेद, भजन चित ब्रह्मा करही १५

(१६)

सब गुनरासी रुपनिध, राजत रमा रमेस,
सुभग सलोनी जोरिजुग, बनी गरुडपर बेस ।
बनी गरुडपर बेस, कहो बरनों छबि केसें,
मोपें कही न जात, जथारथ हे छब्र जेसें ।
कहे वेरा करजोर, कमलतुल रहे विकासी,
राजत रमारमेस, रुपनिध सब गुनरासी ॥१६॥

(१७)

जुगजोरी बेहद बनी, तीनलोक अभिराम,
वारों याके वदनपर, कोटि कोटि छब काम।
कोटि कोटि छब काम वाम पदकी नख सोभा,
उपजतया छबि देख, मुनीजनके मन लोभा।
कहे वेरा करजोर, करो वंदन हरिके पद,
तीनलोक अभिराम, बनी जुगजोरी बेहद ॥१७॥

(१८)

प्रभुपद रजवंदन करे, मुनीजन मनवचकाय,
सो रज अपने सीसपर, शंकर धरे सदाय।
शंकर धरे सदाय, करे अज इच्छा तिनकी,
वालमीक सुकव्यास, करे नित कीरत जिनकी।
कहे वेरा करजोर, धरे शिर सनक सनंदन,
मुनीजन मन वचकाय, करे प्रभुपद रजवंदन १८

(१९)

जल थल व्यापक विष्णु हे, शिव त्योंहिं पहिचान,
एकही रूप अनूप हे, जुगलनाम इह जान ।
जुगल नाम इह जान, करोजिन अंतर कोई,
चैतन पूरन ब्रह्म, हरिहर जानो सोई,
कहे वेरा करजोर, अखंडीत अकल अमापक ।
शिव त्योंहि पहिचान, विष्णु हे जल थल व्यापक ॥

(२०)

देवा यह वर दीजीयें, उपजे आतमज्ञान,
चरन तुमारे चितवसे, धरों निरंतर ध्यान ।
धरों निरंतर ध्यान, अवर इच्छा नहि कोई,
दुर्लभ यह वरदान, दयाकर दीजें सोई ।
कहे वेरा करजोर सदा संतनकी सेवा,
उपजे आतमज्ञान, दीजीयें यह वरदेवा ॥ २० ॥

॥ अथ सुबोध ॥

॥ कुंडलीया. ॥

सगलां पेलो सुमरीयें, गवरीनंद गणेस,
उमा अंगतें उपनो, इश्वरको उपदेश ।
इश्वरको उपदेश, विघ्न सब हरन कहीजे,
सब देवनको देव, सुंडालो सो सुमरीजें ।
कहे वेरा करजोर, वधावी लीजें वेलो,
गवरीनंद गणेस, सुमरीयें सगलां पेलो ॥ १ ॥

(२)

सरस्वति माता सारदा, म्हेर करो मनमाय,
तुम तुठां बिन ग्रंथी एह, क्यौं छुटे घटमाय ।
क्यौं छुटे घटमाय, दिपक बिन नाहि उजाला,
जड्या जंजीर किंमाड, हुकम बिन खुले न ताला ।
कहे वेरा करजोर, फेर नहि अवसर आता,
मेर करो मनमाहि, सारदा सरस्वति माता ॥२॥

(३)

मागुं हरिकी बंदगी, गुरु पुनी संत अपार,
तनका ताला तो खुले, कृपा करे किरतार ।
कृपा करे किरतार, मिटे मंदिर अंधीयारा,
कथे ग्रंथ गुरुज्ञान, भया दिलमें उजियारा ।
कहे वेरा करजोर, पानजोरी पगलागु,
गुरु पुनीसंत अपार, बंदगी हरिकी मागु ॥३॥

(४)

हे मनबाजी जूठ हे, करो कुबुधको दूर,
रामनाम चित राखीयें सदा आनंद भरपूर ।
सदा आनंद भरपूर, भजनमें भीना रैयो,
या अवसर दिन दोय, फेर नहि बने समैयो ।
कहे वेरा करजोर चेत मन मूरख पाजी,
करो कुबुधको दूर, जूठहे हेमनबाजी ॥४॥

(५)

काया सरखे कोटमें, पुन बहुते परीवार,
निज मनकी कछु नहि चली, काम क्रोध सिरदार।
काम क्रोध सिरदार, नगरमें भया अंधेरा,
निज मनुषा अवतार, गमाया युं जमवारा।
कहे वेरा करजोर, परम तत नामन परखे,
पुन बहुते परीवार, कोटमें कायासरखे ॥ ५ ॥

(६)

जगडा कीजें कालसुं, ले ग्यान ढाल तरवार,
काम क्रोध अरु कुबुधीको, माहे लीधो सबमार।
माहे लीथो सबमार, कालको युं वस करना,
दुबधाको दीवान, पकर गिरदन पग धरना।
कहे वेरा करजोर, रातदिन योंही लडीजे,
ले ग्यान ढाल तरवार, कालसो जगडा कीजें ६

(७)

साचा सांही सुमरीयें, दुख मेटन दातार,
अमृत नाम अनंतको क्यों भूले गेमार ।
क्यों भूले गेमार, एकदिन हे मरजाणा,
लेतां हरिको नाम, तुजे क्या लागे नाणां ।
कहे वेरा करजोर, नामबिन मुक्ति नाही,
दुख मेटन दातार, सुमरीयें साचा सांही ॥७॥

(८)

निरगुन साधु निसप्रही, तिनका मोटा भाग,
अंतरमें चोखा रहे, नहि द्वेस नहि राग ।
नही द्वेस नहि राग, जिनुनें ममता मारी,
नवही तत्वकी वास, अग्निपर सबही जारी ।
कहे वेरा करजोर, तास संग खेले साधु,
तिनका मोटा भाग, निसप्रही निरगुन साधु ८

(९)

बोली बोले हंसकी, धरे बगसा ध्यान,
अंतर कपटी मनहठि, वांचे वेद पुरान।
वांचे वेद पुरान, अनोपम अर्थ बनावे,
आतम जान्या नाहि, किसीविधि संत कहावे।
कहे वेरा करजोर, कपटकी गांठ न खोली,
धरे बगसा ध्यान, हंसकी बोले बोली ॥ ९ ॥

(१०)

जंम खडाहे सीसपर, ज्यौं तीतरपर बाज,
सबकीलारे फिरत हे, हंस हरनके काज।
हंस हरनके काज, बधिक ज्यौं दहुदिस धावे,
बिली मूसाहित काल, निसदिन यों खावे।
कहे वेरा करजोर, चेत मन चंचल भमरा,
ज्यों तीतरपर बाज, खडायों शिरपर जमरा ॥१०॥

(११)

माया एसी मोहनी सब ठग्यो संसार,
सुरनर अरु जोगी जति, सबको कीने छार ।
सबको कीने छार, मारकंड पार न पायो,
ब्रह्माकीट प्रजंत, सबे जीवनी भरमायो ।
कहे वेरा करजोर, बदलकी जेसी छाया,
सब ठग्यो संसार, एसी धुतारी माया ॥ ११ ॥

(१२)

माया तेरी मुरखा, मुंढ मिथ्या करजान,
आगल लोंठा लूटसी, जोबनको जमरान ।
जोबनको जमरान, दया करतें कछु दीनो,
धर्योरयो धनमाल, छोडतुं चल्यो नगीनो ।
कहे वेरा करजोर, सांजमें भइ सवेरी,
मुंढ मिथ्या करजान, मुरखा माया तेरी ॥१२॥

(१३)

माया मिलेन लोभसें. बिना लेख किरतार,
उनको प्रभुजी देतहे, जिन कीया पुन्य वेपार।
कीया पुन्य व्यापार, सवाई करग्या सोई,
सुनरुप शिरपाओ, पलंगपर पोढ्या ओई।
कहे वेरा करजोर, समजवे काची काया,
बिना लेख किरतार, लोभसें मिले न माया १३

(१४)

संत सुमेरे श्रीहरि, में संतनिको दास,
जो संतनिको श्रीहरि, याकी मोकों प्यास।
याकी मोकों प्यास, लगीहे अंतर एसें,
जल बिन जेसें मीन, कमलबिन मधुकर तेसें।
कहे वेरा करजोर, लाज प्रभु हे शिर तेरे,
में संतनको दास, संतसो श्रीहरि मेरे ॥ १४ ॥

(१५)

संत शब्दका पारखु, निरत सुरतकी टेक,
षटही चक्रघट सोधके, चढगए संत अनेक ।
चढगए संत अनेक, जोतका दरसन पावे,
जो पोचे उनदेश, ध्धरनपर फेर न आवे ।
कहे वेरा करजोर, काम नहि उहारवदका,
निरत सुरतकी टेक, पारखु संत शब्दका ॥१५॥

(१६)

राम रेमाना एकहे, मुरख मत भरमाहु,
देव निरंजन दो नही, आलमहंदे राहू ।
आलमहंदे राहु, लोट पुन जेसें चूना,
पुरुष पुरातन एक, सदा जूने तें जूना ।
कहे वेरा करजोर, अप्रमत जाकी महीमा,
मुरख मत भरमाव, एकहे राम रहीमा ॥१६॥

॥ १२

(१७)

कथा बरनु कैलासकी, सोभा अती अपार,
जामें सुंदर जुकरहे, वृक्ष अढारही भार ।
वृक्ष अढारही भार, फूलफल छांडत नाही,
धरी अखंडीत ध्यान, सदाशिव बेठे त्यांही ।
कहे वेरा करजोर, मुनीजनके मनभावे,
सोभा अतिही अपार, वरनमें कबहु न आवे १७

(१८)

प्रश्न कहुं एक प्रेमसो, सुनीयो चित मनलाय,
पूछहू पानी जोरि जुग, दीजें सोइ बताय ।
दीजें सोइ बताय, जक्त यह उपज्यो जातें,
मोकुं मालम नाहि, प्रश्न यह पुछयो तातें ।
इनको उतर आप, कृपा करी कहो खेमसो;
सुनीयो चित मनलाय, प्रश्न एक करुं प्रेमसो ॥

(१९)

जबतें भूल्यों जंत एह, अपनो आतमरुप;
सुध विचार समज्यो नही, पर्यो मोहतम कूप ।
पर्यो मोहतम कूप, रुप अपनो नही जान्यो;
नामरुप सतजान, जगत इह मनते मान्यो ।
चौदभुवन त्रैलोक, फुरेहे मनको तबतें;
अपनों आतमरुप, जंत एह भूल्यो जबते ॥१९॥

(२०)

नाम रुप गुनकर्म जेह, सुभाव सोक्षमस्थुल;
कल्पीत आतमके विषे, जेसें नभके फूल ।
जेसें नभके फूल, ससकके श्रंगसम जानो;
सीपरूप जेवरी, व्याल मृगजलवत मानो ।
जेसें निसीको सुपन, पर्यों ज्यों सिंधकूप पुन,
सुभाव सोक्षमस्थुल, नाम अरुरुप कमगुन॥२०॥

॥ दोहा ॥

मनबुधि चित अहंकार तें, जो उपजत हे जान;
ताहिको सत जानवो, एही बडो अज्ञान ॥२१॥

॥ सोरठा ॥

नाम रुप गुन भेद,
गगन फुल मृगवारीवत ।
कलपीत विधी निषेद,
नाही नाही जो निगम कहे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

वाणी वचन विलासतें, नही पावे निजभेव;
विहारी वस्तु तो मिले, करे कृपा गुरुदेव ॥२३॥
सूरत तुमरी सदगुरु, छिन एक विसरत नाहि ।
महा ललीत छबि लिखधरी, मनमंदीरके माहि २४

॥ चोफला ॥

सुण मन गाफल चेत हरामी,
कूड कपट क्यों करते ।

मनमें मेल कमलमें काती,
मुखसें सांही सुमरते ।
जोबन दिनमें जेसी करते,
आगू एसी भरते ।
जन वेरा कहे मानव मुरख,
बे फिकराइ फिरते ॥२५॥

(२६)

संग नही कीजें कामनीको;
बिन आपन अरधंगा ।
रावण सरखे राज गमाया,
परनारीके संगा ।
जालव चाले जोबनकुंतो,
सदा रहे अडभंगा ।
अडसठ तीरथ पास वाहिके,
घर भींतरहे गंगा ।

जन वेरा कहे मानव मुरख,
छोड पतंगी रंगा ॥ २६॥

(२७)

मात पिता सुत पूत लुगाइ,
मुरख कहे घर मेरा ।
हस्ती बेडा माल खजाना,
तामें नही कछु तेरा ।
धरमरायके शिरपर तेरे,
जम किंकरका हेरा ।
अब चूको चोरासीमें तुं,
बोत फिरेगो फेरा ।
जन वेरो कहे मानव मुरख,
नहि तिलभर कछु तेरा ॥ २७ ॥

(२८)

तीरथ तोकुं तुरत बतावुं,
परहर परकी निंदा ।

दिलकी दुबधा छोड परीतुं,
मानव मेट कुबुधा ।
करले सेवा मात पिताकी,
जन्म दीयो जिन अंधा ।
कायाको इतबार न करनो,
जिनका टोकडा संघा ।
जन वेरो कहे मानव मुरख,
भूल गयो तुं बंधा ॥ २८ ॥

(२९)

यांतु आयो बहू सुख पायो,
क्यातें सुकित कीनो ।
भव अपनामें हरिके नामें,
क्या तें दुष्ठी दीनो ।
गाफल तेरे ग्यान बताये,
दिल भितर नहि भीनो ।

आप स्वारथे दुस्कृत करते,
बंदा नही तुं बीनो ।
जन वेरो कहे मानव मुरख,
उलटो पातक लीनो ॥ २९ ॥

॥ सवैया मतगयंद ॥

नीत हजार करे नर हूंनर,
उदर कारन आन उपाई ।
धायके धुंध करे धनकारन,
लोभके संग रयो ललचाई ।
वेद पुरान कुरान पढ्यो मन,
भेद विन्या जुरयो भरमाई ।
वेरो विचार करे दिजमाह्निजु,
हे जगकी सब जूठि सगाई ॥ ३० ॥

(३१)

काल भयानकके डरते,
डररे डररे डररे डररे तुं ।

केवल सूध विचार सदा,
करेरे करेरे करेरे करेरे तुं ।
आतम ध्यान अखंड रदे,
धरेरे धरेरे धरेरे धरेरे तुं ।
दास बिहारो कहे भवको,
तरेरे तरेरे तरेरे तरेरे तुं ॥ ३१ ॥

॥ इति सूबोध कुंडलीयादिकाव्य
संपूर्णम् ॥



अथश्री चोवीस अवतार हरियश वर्णन ॥

॥ छंद गंभीर चोपाइ. ॥

प्रथम करी परनाम, नाम गनपतिको लीजे ।
बरनों हरियश विमल, दया करिसो बुध दीजे ।
पुन प्रनमु कर प्रीत, सारदा सुभगुन दाता ।
कीजें बुंध प्रकाश, महरकर ममउर माता ॥१॥
समरों हरिगुरु संत, सदा सुख सागरस्वामी;
जो जग तारन तरन, सरन जग अंतरजामी ।
तिनके चरन सरोज, ध्यान ताको उर ध्याउं ॥
पुन पुन करी प्रनाम, चरनरज सीस चढाउं ॥२॥
करों सार अवतार, कथा कीरत प्रभुकेरी ।
बरनों बुध अनुसार, यथामति सांम्रथ मेरी ॥
वालमीक सुक व्यास, विमल जिनके यश गावे ।
सारद नारद सेश, सूत सनकादिक ध्यावे ॥३॥

जय जय आदि वराह, मीन वामन मनवंतर,
सनकादिक नरसिंह, देनवर ध्रुव धनवंतर ।
कपिल कमठ हयग्रीव, हंस हरि नरनारायन,
रिषभदेव रघुवीर, कृष्ण परब्रह्म परायन ॥४॥
बुध निकलंकी व्यास, प्रथु प्रथिवके इसा,
फरसुराम अभिराम, यज्ञदत ए चोवीसा ।
तिनके पद अरविंद, वंद पुनि वंदन करहुं,
तिनही चरनकोरेनु, सदा मेरे शिर धरहूं ॥५॥
पादनि रेंन प्रसाद, खुले अनुभवके लोचन,
देख्या चैतन ब्रह्म, भया जिनतें भवमोचन ।
अब न परों भवकूप, रुप निज अपना पाया,
देवागुरु दयाल, दयाकर मोहि बचाया ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

देवागुरु दयाल, साहेब मेरे उर सदा;
कर्मभर्म अरु काल,उडगये जिनके वचन तें ॥७॥

महावाक्यको बोध, मोहि दीयो गुरु मेरकर;
लीयो सरुपहि सोध, भाग त्याग लक्षणा करी ८

॥ छंद गंभीर चोपाई ॥

अब हरिके अवतार, कथा तिनकी विस्तारो;
नामरुप गुणकर्म, सहित अब सबे उचारो ।
जो सब हरि अवतार, चार जुगजुगमें लीने;
मारी असुर अनंत, काज संतनिके कोने ॥९॥

प्रथमसु आदि वराह, रुप तिनतें प्रभुं धार्यों;
महाप्रबल हिरणक्ष, असुर तिनके हरि मार्यों ।
प्रथवी बहुरी पताल, रसातल हूती जलमें:
धरी दाढकी अग्र, थाप थिरकीनी पलमें ॥१०॥

ज्यों अपने करकमल, दसनपर कुंजर धारे;
त्यों हरि अपनें दसन, धरनिधर आप पधारे ।
धरी सूकरको रूप, आप इह चरीत दिखायो;
कीनो अदभुत करम, पराक्रम प्रगट प्रथायो.११

॥ इति वराह अवतार ॥

बहूरी परम हरिभक्त, जक्तमें सतवृत राजा;
मच्छरुप तब धार, कीयो तिनको हरिकाजा ।
तब तिनको बिन प्रलय,प्रलयकर जग दिखरायो;
भक्तिज्ञान विज्ञान, सकल तिनको समजायो.१२

॥ इति मच्छ अवतार ॥

बहुरि परम गंभोर, क्षोरसागर मथ लीनो;
करी मिलाप सुर असुर,मतो सब हिलमिल कीनो ।
तब तिन हिलमिल सबनि,सैल मंदीराचल आन्यो;
पुनि करनेंतो नाग,मथन तिनको जब ठान्यो.१३
तब मंदिराचल अचल, होत केसें करी जलमें;
तबहि कच्छ अवतार, प्रगट कीनो तहां पलमें ।
सो मंदराचल सैल, पीठ अपनीपर धार्यो ॥१४॥
तब तिनको ततकाल, सकल श्रम खेद निवार्यो ।
कर प्रचंड बल जुगल, बहुरी मथने जब लागे,
रतनाकर तें रतन, सकल निकसे तिन आगे ।

॥ रतनके नाम ॥

प्रथम गरल गजराज, अस्व मदिरा अरु अमृत;
कमला कौस्तुभ कमल. कल्पतरु कामदुघाकृत ।
रंभादिक हरिधनुप, चंद्रमा अरू घनवंतर;
रतनसंग अवतार, धार प्रगटे जल अंतर ।
सुर अपने जनजान, बहुरि चितहेत विचार्यो;
सुरनि सकल सुखदेन, रुप धनवंतर धार्यो १६

॥ इति धनवंतर अवतार ॥

रतनाकरतें रतन, जननकर अमृत काढयो:
सो पायो सब सुरनि, प्रबलबल तिनतें बाढयो।
देवासुर संग्राम, भयो तत्र तिनमें भारी;
मारे असुर अनंत, सुरनिकर साह्रे मुरारी. ॥१७
यह प्रकार सुरराज, काज कर सुख उपजायो;
मंगल मोद विनोद, अधिक आनंद बढायो ।

प्रभुजी बडो प्रचंड, दंड दैतनको दीनो;
धरी कमठ अवतार, कर्म यह अदभुत कीनो१८

॥ इति कच्छावतार ॥

॥ अथ सनकादिक अवतार ॥

पुनि ब्रह्मा सुत चार, भये चारो अवतारा;
सनकादिक अरु सनंद, सनातन सनतकुमारा ।
सनकादिक ऋषि चार, परम सुंदर सिसुबाला;
नित नौतन छबि अंग, रूचिर शिर केस विशाला
पंच वरसके सदा, पर्म सुंदर तन तिनके,
निरविकार निरधुंध, परम निरमल मन जिनके ।
हर्षन शोकन शंक, मानमद मोह न ममता;
समदरसी नित सांत, सदा सीतल चित समता ।
ब्रह्माकीट प्रयंत एक आतम करजाने;
नामरुप गुणकरम, भर्म मायाकर माने ।

पंडित माहा प्रवीन, चतुर अरु आतमज्ञानी;
विचरे सकल ब्रह्मांड, रुप निज अपनो जानी २१
सो विचरत ब्रह्मलोक, रुषि चारों तल आए;
ब्रह्मादिक सब देव, परसपर दरसन पाए;
तब तिन कीनो प्रश्न, एक ब्रह्माके आगे ।
तिनको एसो भेद, सुपन सूतों ज्यों जागे ॥२२॥
मुक्षम अती अगाध, अरथ उतम हे जिनको;
ब्रह्मादिक सब देव, करे उतर क्यों तिनको;

॥ सनकादिकउवाच ॥

तब तिन कीनो प्रश्न, जोर करके जुगपानी;
सनकादिक शिर नाई, बहुरी उचरे यहबानी २३
हे प्रभुजी परब्रह्म, सकल देवनिके देवा,
पूरन परम कृपाल, कहो हमको इह भेवा ।
ए दोनों चित विषय, मिले आपुनमें एसें,
मिलत निर अरु खीर, परस्पर जुग जुग जेसें २४

भिन भिन किए विभाग, त्याग बिन मुक्त न होई,
सो तुम कहो कृपाल, होत क्यों ए भिन दोई;
तब तिनकी इह प्रस्न, आप ब्रह्मा उरधारी।
उतर देनकी उक्त जुक्त, चित बहुत विचारी, २५

परितोहू इह प्रस्न, उतर तिनको नहि आयो;
कीने राजस कर्म, धर्म तिनसो मन लायो,
तब ब्रह्माकर सोच, बहुरि इह बुधि विचारी,
जाहि न जगमें कोइ, सदा तिनके गिरधारी २६

तब विरंची हरि ध्यान, कर्यो चितवन चित्तमांही;
हरिहंसा अवतार, धार प्रगटे तब त्याही।

॥ अथ हंसा अवतार ॥

सकलव्याप हरि आप, हंस तन तातें धार्यो;
तिनको संशय तरक, सकल ततकाल निवार्यो. २७

॥ हंस उवाच ॥

तव तिन सो हरि कहत,
सुनहु सनकादिकबाला ।
प्रश्न परम गंभीर,
गहन अति अरथ विसाला ।
य दोनों चित विषय,
वृथा तिनको तुम जानो ।
मनबुध चित अहंकार,
सहत माया करमानो ॥ २८ ॥
इन सब हिनके पार,
रूप निज अपना देखो ।
अरुए जो कुछ रुप,
सकल अपने कर लेखो ।
प्रकृती पुरुष महतत्व,
सकल इंद्रिय मन देवा ।

सत रज तम गुन तीन,
भए जिनतें बहु भेवा ॥ २९ ॥

अरु जो दिसे द्रष्ट,
श्रबन मुख सुनीयें कहीयें ।
मनबुध चित अहंकार,
चार करजो कुछ लहीयें ।
सो समस्त भमरुप,
अवर दुजा को नाही ।
एसो निरमल ज्ञान,
धरो अपने मनमांही ॥ ३० ॥

जाग्रत अरु जो सुपन,
सुषोपति मुरछा तुरिया ।
चेतन पूरन ब्रह्म,
एकरस तिनमें पुरिया ।

सुपनेको विवहार,
जूठ जाग्रतमें जानो ।
जाग्रत सुपन समान,
जानकरके भ्रम भानो ॥ ३१ ॥

पंच अवस्था पार,
जीतं कछु हार न जामें ।
सो तुम तुरीयातीत,
कोन संशय पुनतामें ।
तब सनकादिक समज,
ब्रह्म अद्वैत पिछान्यो ।
परम कृतारथ आप,
जानकरके भ्रम भान्यो ॥ ३२ ॥

तब ब्रह्मादिक सकल,
देव सनकादि विज्ञानी ।

सबहि न कीयो प्रणाम,
  जोर करके जुगपानी ।
बहूरि सकल करजोर,
  करे विनती मिल सारे ।
तबही सो हरिहस,
  आप निजधाम सिधारे ॥ ३३ ॥

॥ अथ जग्य अवतार ॥

बहुरि जग्य अवतार,
  प्रगट तिनतें प्रभु लीनो ।
असुर सकल संहार,
  सुरनिको कारज कीनो ।
मनु तनया हरिमात,
  नाम आकुती जिनको ।
सो रिषरूची विवहाई,
  जग्य सुत जानों तिनको ॥ ३४ ॥

जिन कीने बहू जगन,
महाजग मंगलकारी ।
मघ महीमा हरि आप,
अखिल जगमें विस्तारी ।

करि प्रसंन सुर सकल,
आप इंद्रासन पायो ।
जिनको यश अभिराम,
विमल वेदनिमें गायो ॥ ३५ ॥

सकल देवता सहित,
आप कीनो तप सुंदर ।
सब लोकनिको सहज,
मिट्यो जिनते दुख दुंदर ।

स्वर्गराज सुखभोग,
कीए तिन आप निरंतर ।

भोमिराज सुखभोग,
दीये हरि मनु मनवंतर ॥ ३६ ॥

मनु मनवंतर काज,
असुर सब कीए निकंदन ।
देवनिकों सुखदेन,
जनम लीनो जगवंदन ।
क्रीया सहत सुभ करम,
धरम प्रतिपादन कीनो ।
जिन कारन अवतार,
जक्तगुरु जगमें लीनो ॥ ३७ ॥

॥ अथ नरनारायन अवतार ॥

पिता धर्मगुन धाम,
ज्ञान मुरती हरि माता ।
नरनारायन तनय,
प्रगट तिनके विख्याता ।

सोवन गए विसाल,
बद्रिकाश्रम सुभ थानिक ।
सरीता सुंदर सैल,
बनी जहा बनकी बानिक ॥ ३८ ॥

गौ गज खग मृग भालु,
गहन बन जंत अपारा ।
कंद मूल फल फूल,
सदा सीतल जलधारा ॥

जहां गंगा अदभूत,
अलकनंदा अघ हरनी ।
तहां बेठे हरि आप,
जान जग तारन तरनी ॥ ३९ ॥

कल्प एक परियंत,
तहां बेठे निरधारी ।

प्रभुजी महा प्रंचड,
तहां तप कीनो भारी ।
तब ताको तप देख,
इंद्र एसे मन जान्यो ।
लेवेंगे मम लोक,
बहुरी निश्चेकर मान्यो ॥ ४० ॥

मघवा मदन बुलाय,
कह्यो अब एसें कीजें ।
करि छलबल ततकाल,
भ्रष्ट तपस्या करदीजें ।
तब रंभा छलरूप,
सुभग तन सुंदर नारी ।
प्राक्रम जिनको प्रबल,
अनंग उपजावनहारी ॥ ४१ ॥

रुतु वसंत वलवान,
लीए हरिके छल हेता ।
लीने गंघ्रवलोक,
त्रिविधि पुनि पवन समेता ।

सो मिल बदरीखंड,
सकल अनंगादिक आए ।
नरनारायन आप,
तहां तिन बेठे पाए ॥ ४२ ॥

तब हरिके तनताक,
मदनसर मारत एसें ।
ज्यों अगनी इक रंच,
महाजल डार्यो जेसें ।

तब तिन अपनी कीन,
कपटछलकि मत जेती ।

सब कर हारे मंत्र,
जंत्र पुनि तंत्र समेती ॥ ४३ ॥

तब ताको तप देख,
मदन मन अति भय आन्यो ।
भए सकल भयभीत,
आप जीवन गत जान्यो ।

तब हरि यह अपराध,
इंद्रकृत शाप विचार्यो ।
हसि बोले हरि आप,
सिघ्र तिनको भय टार्यो ॥ ४४ ॥

अहो मदन इक रंच,
डरो मति मनमें भाई ।
अब हूजें मिजमान,
इहा ढिग बेठो आई ।

तुम कब आवो देव,
नार पुनि पवन पंचसर ।
इह आश्रम तुम आज,
सफल कीजें कुसमाकर ॥ ४५ ॥

एसे वचन विसाल,
सुने हरिके हितकारी ।
जोरि सके नहि नेंन,
भइ तब लजा भारी ।

तब तिन लजाभार,
दीए सबहिन शिरनामी ।
सो बोले पुनि वचन,
जानि जग अंतरजामी ॥ ४६ ॥

हे भगवन भवनाथ,
अनघ इह नाहि अचंभा ।

इह प्रकृती अरु पुरुष,
आप तुम तिनके थंभा ।
निरविकार निरभेद,
निरंजन जो निरधारा ।
जिनको वेद पुरान,
कोइ पावत नहि पारा ॥ ४७ ॥

निजानंदके कंद,
महामुनी पूरन जेते ।
सो तव चरन सरोज,
सदा सेवतहे तेते ।
तुव चरननकी शरन,
जुगाजुग जब कोइ आवे ।
तब तिनको बहु विघन,
अचानिक सुर उपजावे ॥ ४८ ॥

तिनदेवनिके लोक,
दाबि पग उंचे भरही ।
अति ऊंचो तव धाम,
ताकी जन इछा करही ।

तातें विघन विरोध,
करे तब तिनसो देवा ।
महिमा मिटती जान,
सकल विधी अपनी सेवा ॥ ४९ ॥

ओर किसीको कोइ,
कबहु सुर विघन न करही ।
सो देवनीको दंड सदा,
भय संजुत भरही ।

परितव जन परवीन,
विघन चित कछु न लावे ।

दे विघननि शिर चरन,
सरन तुमरी जन आवे ॥ ५० ॥

जो प्रभुजी तुम आप,
सदा जिनके रखवारे ।
तो तिनको जगमांज,
करहि कहा विघन विचारे ।

तो तुमरो इनमाहि,
कछु इह नाहि अचंभा ।
तुमको मोह उपजाय,
करे छलकेसें रंभा ॥ ५१ ॥

क्षुधा त्रपा अरूसीत,
उस्न आलस जलधारा ।
गुण सिस्नादिक सकल,
सोकसागर हे सारा ।

बहुत कष्ट तिन काज,
करे तब तिनकोतरही ।
गोपद जितनो क्रोध,
दुबी तिनमें मुनी मरही ॥ ५२ ॥

तिनको तप ततकाल,
सकल मिथ्या तब होई ।
इहलोक तें भ्रष्ट,
भयो नर जानो सोई ।

ताते सुंदर करम,
धरम साधन सब करही ।
केवल तुमरी भक्ति,
बिना निश्चे नहि तरही ॥ ५३ ॥

जब एसें इह वचन,
कही सबहीन शिरनायो ।

तब तिनको हरिएक,
अचंबा आप दिखायो ।
नौतन नारी अनेक,
प्रगट कीनी प्रभुजी तब ।
सुंदर अति अदभूत,
एकतें एक अधिक छब ॥ ५४ ॥
सो हरि अपनी सेव,
करत देवन दिखराई ।
मानो रंभा आप,
सकल सखीयन सो आई ।
तिनके रुप सुगंध,
मोह उपज्यो सबके मन ।
छपम्यो तिनको तेज,
इंदु आगे ज्यों उडगन ॥ ५५ ॥

तिनसो हरिजी आप,
कह्यो अब एसे कीजें ।
सबहीनकी सिरताज,
नारि एक सुंदर लीजें ।
तब तिन बारंवार,
हरिको कीयो प्रणामा ।
लीनी अपने संग,
एक उरवसी नामा ॥ ५६ ॥
तब तिन इह परसंग,
इंद्रको जाइ सुनायो ।
भयो इंद्र भयमान,
जोरी कर शिस नमायो ।
एसें इह अवतार,
धार हरि कहा दिखायो ।
आतम ग्यान विग्यान,
भक्ति वैराग सिखायो ॥ ५७ ॥

॥ अथ कपिल अवतार वर्णन ॥

बहुरि कपिल अवतार, धर्यो अपने जनकारन ।
अधमजंत अघवंत, आय तिनको प्रभु तारन ॥
मनु उपज्यो अजअंग; रानि सतरुपा जिनकी ।
तिन जाए दो तनय, तीन कन्यापुन तिनकी ५८
एक प्रसुती नाम, देवहुती दुजी पुन ।
आकुती अभिराम, नाम इह तीनोंके सुन ।
तिन तीनोंमें एक, प्रसूती नामा जोई ॥
प्रजापती पहिचान, दक्षको दीनी सोई ॥५९॥
अरु दुजी गुनधाम, वाम आकुती जिनको ॥
सो रुषिरुची दयाल, ग्रयो पानी पुन तिनको ।
पुनितीजी सुभसील, देवहूती सुखदाई ॥
कर्दम कृपा निकेत,जान तिनको विवहाई ॥६०॥
मनु सुता विवहाय, देवहुती जब दीनी ।
ता पीछे कछु काल, तपस्या करदम कीनी ॥

अंतर कछु उदास, देवहूती जब देखी ।
अब दीजे रितुदान, दैव इच्छा कर लेखी ॥६१॥
तबही रच्यो इक भुवन. सकल संपति सुखदायक ।
मंदिर महा विसाल, परम लीलाके लायक ॥
पुन मुनि आप अनेक, दासदासि उपजाई ।
सो सब लागी करन चरन सेवा चितलाई॥६२॥
अष्टसिधि नवनिधि, विविध रचना विस्तारी ।
सकल संपति सदन, भोग सुख दीने भारी ॥
पुनि कर्दमको तेज, देवहुती जब धार्यो ।
तब उपज्यो आनंद,सकल चितसोक निवार्यो॥ ३॥
एक तीन पुनिपंच, प्रथम कन्या उपजाए ।
नव भगनीके भ्रात, कपिल पीछे प्रभु आए ॥
कपिल देवहरि आप, जनम लीनो है जबही ।
तब कर्दम ग्रह त्याग,चले काननको तबही॥६४॥
अपनी मात उदास, देवहुती तब देखी ।
उपज्यो है अज्ञान, मोह माया वस लेखी ॥

तब कीनो हरि आप, बोध जननीको जोई ।
मैं तिनको संक्षेप,कहों अब सुनीयो सोई॥६५॥
प्रथम प्रबरु वैराग, तिवर ताको उपजाए ।
सकल भुवनके भोग, काक विष्टासम गाए ॥
बहुरि जोग संजुक्त, साष्य विस्तार सुनायो ।
आतम देह विवेक, जुगल जिनतें उपजायो ६६
पुनि त्रिपुटीको ज्ञान, सकल भिनभिनकर भाख्यो ।
सो अन्वय वितरेक, देवहुतीको दाख्यो ॥
पुनि असीपदको अरथ, लक्षणा सहित लखायो ।
अपनो आतमरुप, जथारथसो समुजायो ॥६७॥
तब उपज्यो आनंद, देवहूती पद देख्यो ।
अहंब्रह्म अद्वैत, द्वैत मिथ्या कर लेख्यो ॥
इह आतम उपदेश, देवहूतीको दीनो ।
प्रगट पर्म कल्यान, कपिल माताको कीनो ६८
पुनि अनेक इन ग्यान, अधम जगजंत उधारे ।
करी आतम उपदेश, आप तिनको प्रभुतारे ॥

कपिलदेव अवतार, आप हरि एसें धार्यों ।
जिनके बल अद्वैत, बोध जगमें विस्तार्यो॥६९॥

॥ अथ दत्तात्रेय अवतार ॥

पुनि अद्वय अवधूत, जन्म लीनो हरि जेसें ।
सो प्रसंग संक्षेप, कहों अब सुनीयो तेसें ॥
अज अपने तप तेज, बहुरि अत्री उपजाए ।
जिनको जस विख्यात, सकल जग अबलो छाए ॥
अनुसुयासें नाम, रुषी तनया रुषि दीनी ।
तिन दोनो ग्रह त्याग, तपस्या बनमें कीनी ॥
तब ताको तप देख, आप विष्णु चलि आए ।
सो दरसन साक्षात, पति पतनी मिल पाए ७१
निरखत भर भर नेंन, ध्यान हरिको उरधारे ।
जन अत्री करजोर, उतम अस्तुति उचारे ॥
तब तिनसो हरि आप, कहे मागो वर जोई ।
कहो मुनी मुख आप, सीघ्र हम देवे सोई ७२

तब अनसूया आप, कह्यो वर दीजे एसो ।
एक पुत्र अब मोय, देव दीजे तुम जेसो ॥
तब ताको हरि कहे, तथा अस्तु सो होई ।
जो चाहत चित मात, बात हम जानी सोई ॥
मो समानहे मात, एकमें हों जगमाही ।
में व्यापक सब ठोर, और दुजाको नाही ।
तातें में अब आय, उदर तेरे अवतरी हों ॥
कोटि कोटि कल्यान, जक्त जीवनिके करीहों ॥
एसें दे वरदान, सान जननी समजाई ।
अंसरूप अवतार, भए दत्तात्रेय आई ॥
ब्रह्मज्ञान उपदेश, भाव अद्वैत बताया ।
सब प्रकार अबधुत, मता सबको समजाया ७५
अवनी पति अलख्क, और प्रहलाद नरेसा ।
दीनो तत्व दिखाय, ब्रह्मविद्या उपदेशा ।
संयम नियम सीधांत, जोग अभ्यास जनायो ॥
कीनो जक्त उधार, सार सब भेद सुनायो ७६

॥ दोहा ॥

हरि दत्तात्रेय होयके, कीने जनके काज।
पुनि अैसा अवतार भए, रूषभदेव महाराज ॥

॥ चोपाइ ॥

बहुरि रुषभ अवतार, धर्यो अपने जन हेता।
प्रगटे पूरण ब्रह्म, नाभी नरपती निकेता ॥
मेरुदेवी मात, तात नाभी ताभी जन तारन।
धीर पुरुष मनभाए, आवे प्रभु अधम उधारन ७८
सत्य धर्म संन्यास, खास सदराह सुहाया।
सप्तभुमिका सान, ज्ञान आशय दरसाया ॥
अचल अहिंसा धर्म, पर्मप्रभु करुणाधारी।
सदउपदेश प्रताप, आप जनलीने तारो ॥७९॥

॥ दोहा ॥

रूषभदेव अवतार ले, जनके कारज कीन।
अब बुद्धिवत वरनन करों, नरहरि चरीत नवीनं।

॥ गंभीर चोपाई ॥

हीरणकस्थपु भूप, करी तपस्या अतिर दूस्तर ।
ता तपकेर प्रभाव, प्रश्न भये ब्रह्मा तिनपर ॥
पाय अभय वरदान, करन लागो उतपाती ।
विमुख वेद मरजाद, मूंढ भोगो द्विजघाती ८१
अतिसे बढ्यो अधर्म, कर्म सद कोइ न करहो ।
प्रभुको लेवे नाम, ताहिपें जुलम गुजरही ॥
वरत्यो हाहाकार, भुमीपें भार भयो हे ।
वसुधा व्याकुल होई, अमरपें जाय कयो हे ८२
चलीयें साथ दयाल, दर्सहित दीनबंधुके ।
सबही मिलके आय, किनारे क्षीरसिंधुके ।
त्राहेत्राहे भगवंत, संत गोद्विज हितकारी ॥
भुमीभार उतार, साहेता करो हमारी ॥ ८३ ॥
विबुध विंनय सुनी विष्णु,प्रस्न भये वचन उचारो ।
जब पावे संताप, भक्त प्रहलाद हमारो ॥

तबही ले अवतार, भुमीको भार ऊतारो ।
पापी अधम अजान, हिरणकस्यपूसुमारो ॥८४॥

एसे ले वरदान, देव स्वस्थान सिधाये ।
यहांपर असुर अजान, अतिसय करत अन्याये ।
सुत संहारन हेत, गिरिसें मार गिरायों ।
तउमर्यो नहि सोह, लोहको थंभ तपायो ८५

लालचोल जब भयो, कयो तब बाथ भराई ।
कहां तेरो भगवान, लखुं क्यों साहे कराई ॥
तबे लखो प्रहलाद, चलत चीटीकी हारा ।
मों तोमें स्थंभमें, सबे व्यापक किरतारा ॥८६॥

यों कहिलीनी बाथ, साथ प्रभु भये सहाई ।
धार्यो नरहरि रुप, असुरको मार गिराई ॥
अमर पुष्प वरसाय, अस्तुति वचन ऊचार्यो ।
भुमीभार ऊतार, भक्त प्रहलाद ऊघार्यो ॥८७॥

॥ दोहा. ॥

एसें नरसिंह रुपले. लीनी भक्त संभार ।
अब बरनुं आनंदसें, आछो प्रथु अवतार ८८

॥ चोपाई ॥

तनय अंग नृप वेंन, अधर्मी भयो अनंता ।
करत जुलम जगमाय, सदा पीडत श्रुति संता ॥
ऋषियो पई संताप, वेंनको श्राप दीयोहे ।
खबर पायके मात, आयके विनय कीयोहे ॥
मुनीजन कीनी मेर, मृतक सो देह मगायो ।
प्रभु स्मरण करी सीघ्र, ताहीको मथन करायो
दोहन कीनी देह, प्रगट भये प्रथु भगवाना ॥
रसा करी रसवंत,सुखी कीय सकल जहाना९०

॥ दोहा ॥

सदगुनकी वृद्धि करी, धर्म आण वरताई ।
अब वामन अवतारको, बरनों सुयश बनाई ९१

॥ अथ वामनअवतार चोपाई ॥

दानव अपने जोर, इंद्रको राज लीयोहे ।
तबही अदिती आप, पतिसें विनय कीयोहे ॥
कस्यपसें वरदान, पाय सुत इच्छा धारी ।
ताके भजन प्रताप,आप प्रगटे अवतारी ॥९२॥
ले वामनको रुप, भूप बली यज्ञ पधारे ।
करी याचना मही, चहे पग तीन हमारे ॥
कहे बली महाराज, मांगीयें ओर विशेषा ।
हे राजन् संतोष,परम सुख सोइ हमेशा ॥९३॥
हे त्रष्णा दुःख मूल, ताहितें सोई तजना ।
चहे प्रथी पद तीन, हमारे ईश्वर भजना ॥
नृपहा कही पर कहे, गुरु ना अहे हमेरी ।
हें राजन विचार, विष्णु अहे तुमरा वेरी॥९४॥
एसें सुक्राचार्य, कहे सॅत्र लेइ तुमारा ।
तउ बली कंहे बोल, फीरे नहि वचन हमारा ।

विष्णु याचक होइ, लेइ जो हमपें दाना ॥
तो कछु चिंता नाहि, देह हमरा कुलबाना ९५
एक चरन आकास, एक पाताल पसारा ।
ओर एक अब चहे, कहे बली देह हमारा ॥
उरपें देपद आप, बली पाताल पोचाया ।
पूंछत चरन परेख,प्रस्न भए वामनराया ॥९६॥
वरंब्रूही नृप माग, अहे मन इच्छा जोई ।
कहे बली प्रभु नित्य, आपके दर्शन होई ॥
तबही कीया कबुल, बलीकी भक्ति निहारी ।
दीयो इंद्रको राज, कीयो यह चरीत मुरारी९७

॥ दोहा ॥

मात पिताके वचनको, पालन कीयो प्रमान ।
अब श्रोता सुनीयो सबे,उतम ध्रुव आख्यान ९८

॥ अथ ध्रुव अवतार चोपाई ॥

सतयुग माहि उतानपाद, राजा अति भारी ।
ताकी रानी दोइ, सुनीती सुरुची सारी ॥

एक सुनीती नार, सोइ अनमानी राजा ।
ताके ध्रुवजी पुत्र,एक दिन सभा बिराजा ॥९९॥
पाच वरसके बाळ, सभामें आय सुहाया ।
पिता अंकमें आप, बेठने मन ललचाया ॥
तब पटरानी आय, सुरुची कहने लागी ।
नृप खोरामें नहि,बेठने जोग अभागी ॥१००॥
पुनि जोह मरे उदर, जन्म ले यहांपर आवो ।
तो यह नृपके अंक, बेठने बालक पावो ।
सुनिके एसें कठण, वचन माता ढिग आये ॥
गद गद कंठ होय, रोयके हृदय लगाये ॥१०१॥
कहे सुनीती मात, तात ए बात बनावो ।
चहो राज ओ पाट, जायके प्रभु रीजावो ॥
जाकी करुणा होय, कोय नहि रहेवे खामी ।
अधम उधारणहार, ओहीहे अंतरजामी ॥१०२॥
दाता दीन दयाळ, न्याल सो नाथ करेगा ।
साहे करी सर्वज्ञ, हरि सो दुःख हरेगा ॥

एसें जननी वचन, तीव्र वैराग उपाया ।
वंदन करीके बाल, चाल मधुवनमें आया॥१०३॥
मिलेसु नारदमुनि, गेह जाने समजाया ।
तज्या नहिं जब नेम, रेंम करी मंत्र सिखाया ॥
खानपान परिहरत, करत तप घोर भयंकर ।
पंच मासके माहि,प्रस्न भये ईस अयंकर॥१०४
दीन अचल दरदान, अचल पदवी प्रभु दीनी ।
हो गये अंतरध्यान, ध्रुवपें करुणा कीनी ॥
आप राजमें आई, मातकें चरने शिर नये ।
वरस छतीस हजार,राज करि अचल धाम गये१०५

॥ दोहा. ॥

एसें ध्रुव अवतारकी, बरनी बात बनाय ॥
अब मनवंनरकी कथा, कहो गुरु शिरनाय १०६

॥ अथ मनुअवतार चोपाई ॥

ब्रह्म अंसतें भए, मनु सतरुपा रानी ।
करि जगतको काज, सफल कीनी जिंदगानी ॥

वानप्रस्त होइ फेर, पुत्रको राज दीयोहे ।
वनमें तपके हेत, दंपती मतो कीयोहे ॥ १०७॥

सकल पुत्रको राज, यथा विधि दीन बंटाई ।
दंपती कानन चले, सुतन उपदेश सुनाइ ॥

अहो पुत्र यह जक्त, जालहे बंधनकारी ।
स्वपनावत संसार. वृथा माया विस्तारी॥१०८॥

जाहितें यह विस्व, होतहे चैतन सारी ।
अरु जाको ए विस्व. नहीं चैतन करतारी ॥
एसो सोहं रूप, सर्व वेता जन जाने ।
आतमा अनुभव होत, नहि धन संग्रह ठाने ॥१०९

आदि अंत अरू मध्य, नहि जाहिको जनावत ।
ता प्रभुको जानते, सोइ परमानंद पावत ॥
ए पदेश सुनाय, वानप्रस्त होइ विचरीया ।
उग्र तपस्या करी, श्रेष्ट स्वधाम संचरीया॥११०॥

॥ दोहा. ॥

एसें मनु भगवानको, आछो चरीत उदार ।
अब हस्ती उधारियो,होयके हरि अवतार ॥१११

॥ अथ हरिअवतार–छंद चोपाई ॥

एक दिना नृपइंद्रद्युम्न आनंद अथाही ।
प्रभु परायण होइ, कुलाचल आश्रममांही ॥
बेठे धारी मौन, अचानक अगस्त आये ।
नमस्कार नहि कीन,ध्यानमें बेठ रहाये॥ ११२॥
तब दीनो मुनी श्राप,जाओ कुंजर तन धारो ।
अंते हरिके दर्स, होय तेरो छुटकारो ॥
तातें गज तन पाय, क्षीरसागरके पासा ।
त्रिकुटाचल गिरीमांहि,त्रीयासंग करत विलासा॥
एक दिना जल पीन, गयो महासागर मांही ।
देवल रुषिके श्राप, हूहू गंधर्व तहाही ॥

रहे जुड तन पाई, गंयदको पाउं ग्रयोहे ।
लगो पुकारन तउ,कोउ नहि साहे भयोहे॥११४॥
ग्रहत ग्रहत गजराज, वर्ष जब सहस्र होये ।
तिलभर जलमें सुंड, पुकारन लागो सोये ॥
दीनानाथ दयाल, हरो हरि दुख हमारो ।
अब तो ओर न कोइ, आसरो एक तुमारो ११५
सहायक होयके श्याम, बांह वेली होउ बापू ।
सेवक लइ संभार, हरो सत्वर संतापु ॥
सुनिके आरत वचन, गरुड चढ उताल आये ।
करि गजको उधार, आपने धाम पोचाये ११६

॥ दोहा ॥

श्रीहरिको अवतार ले, कीयो मोक्ष गजराज ।
पुनी श्रीहरि हयग्रीव होइ, लाये वेद महाराज॥

॥ अथ हयग्रीव अवतार ॥

॥ छंदगंभीर चोपाई ॥

एक समय अज निमीत, प्रलयमें सोतें जवही ।

संखचुड एक दैत, वेद हर लेग्यो तबही ॥
व्याकुल होइ सब देव, प्रभुको विनवन लागे ।
वेद वारने हेत, करी अरजी प्रभु आगे ॥११८॥
दीनानाथ दयाल, आप बिन वेद न वरही ।
पापी अधम अजान, नास वेदनको करही ॥
सुनी विनय हयग्रीव, होइके कारज कीने ।
मारी असुरको लाये, वेद ब्रह्माको दीने॥११९॥

॥ दोहा ॥

यह चरीत्र हयग्रीवको, किये संक्षेप उचार ।
वरणाश्रम स्थापन कीयो,लीयो व्यास अवतार ॥

॥ अथ व्यास अवतार वर्णन ॥

॥ चोपाई ॥

पारासर निज पिता, सत्यवती उदर सुहावन ।
प्रगट पूरण ब्रह्म, व्यास भगवानसु पावन ॥
वरणाश्रमके भेद, भिन भिन वरणन कीने ।
जिनही वेदके चतुर, भागकर किये नविने १२१

सुद्ध सनातन सत्य, धर्मको वरनन कीनो ।
अवला अत्यंज सुद्र, इने अधिकारन चीनो ॥
तातें भारत रची, सार वेदोंको गुनेयो ।
पीछे नारद पास, प्रभुको महात्म्य सुनेयो १२२
किय श्रीमद भागवत, स्कंध द्वादस बनाये ।
साररुप सदग्रंथ, पुत्र सुकदेव पढाये ॥
शांत होइ फिर आप, अति अंतर अनुरागे ।
वनमें जइके सिघ्र, ऊग्रतप करने लागे ॥१२३॥

॥ दोहा ॥

व्यास चरित संक्षेपसो, मतिवत कीयो उचार ।
अब त्रेताजुगमें भयो, फरसुराम अवतार १२४

॥ अथ फरसुराम अवतार ॥

॥ चोपाई ॥

श्रीजमदग्नी जनक, मात रेणुका सुराजे ।
फरसुराम जेहि नाम, अंस अवतार विराजे ॥

सेशनागके पास, गये विद्या सीखनको ।
पीछे आया असुर, नाम सहस्त्रार्जुन जिनको ॥
आइ असुर मद अंध, मंद जमदग्नि मारा ।
सती रेणुका हृदय, कूटकर करत पुकारा ॥
अहो पुत्र अब आओ, आज भइ दुखनी माता ।
अतिसय आरतवान, करन लागी विलपाता ॥
होइके अंतरधान सेशनें जानी बाता ।
फरसुराम सो कही, करति माता कलपाता ॥
सुनी फरसुधर रोस, पायके आतुर आये ।
कहत मातुसो बात, दीव्य दिलदारी दिवाये ॥
अहो मातु तुम आज, ताडना कितनी कीनी ।
कहत मातु हे पुत्र, राड एकवीस वेर दीनी ॥
तबही फरसुधर कठिन, प्रतिज्ञा एसी कीनी ।
करू नक्षत्री धरा, वार एकवीस नविर्नी ॥१२८॥
यों कही गे कैलास, उमासें वंदन कीनो ।
गूढ सोध सदबोध, राम गीताको लीनो ॥

ताके पाठ प्रताप, ईश्वरी कलासु पाई ।
क्षत्री बडे अधर्मी, ताहिको नास कराई ॥१२९॥
जनकपुरीमें भयो, शंभुधनु यज्ञसु जबही ।
ताहि समे रघुवीर, हरि लई कलासु तबही ॥
भयो राम अवतार, जानिके दरसन कीना ।
बद्रीनाथ तप हेत, तुरत तहासें चलदीना १३०

॥ दोहा ॥

फरसुरामकी बात ए, कही सकल समुजाय ।
अब दसरथ दरबार भये, रामचंद सुखदाय ॥

॥ अथ श्रीरामावतार ॥

॥ चोपाई ॥

सुर्यवंश समरथ, श्रेष्ट भये दसरथ राजा ।
पुरि अयोध्या प्रगट, सबे सुखसंपति साजा ॥
तहां लीयो अवतार, राम इस नाम धराये ।
कीनी लीला बाल, सबे जीवन सुखदाये १३२

मुनीसु विश्वामित्र, यज्ञको रक्षण कीनो ।
मारी असुर सुबाहु, ओर मारीच तन छीनो ॥
सिला परस पद रेन, अहल्या नार उधारी ।
जनकपुरिमें जाय, भंज्यो शंकर धनुभारी १३३
फरसुरामको मान, मोडके कला हरी हे ।
सीया स्वयंबरमांहि, रोपी वरमाल वरी हे ॥
लेके बडी बरात, भूप दसरथ तहां आये ।
विधिवत करी विवाह, सबे आनंद सुखपाये ॥
सकल अयोध्या आए, पाए परमानंद भारी ।
विधी इच्छा बलवान, केंकयी बात बिगारी ॥
राज देनको कीयो, मतो जब दसरथ राजा ।
केकयी माग्यो वचन, राम वन जावन काजा ॥
पितुके वचन प्रमान, मतो वन जावन कीनो ।
संगे सीता नार, भ्रात लक्षमनको लीनो ॥
संग सुमंत प्रधान, ताहिको पीछे वार्यो ।
गुहराजासें भेट करी जन कारज सार्यो॥१३६॥

कर पंचवटी निवास, रूष्यनको आनंद दीनो ।
यहांसें रावण आई, हरण सीताको कीनो ॥
ताको सोधन हेत, आप वनमांहि पधारे ।
वालमीक आदिक, अत्री आश्रम पग धारे १३७
दे रूषियनको दरस, आये किस्कंधा आपु ।
तहांपर वानर पती, भयो सुग्रीव मिलापु ॥
करी मित्रता आप, कीसपति सुग्रीव संगा ।
बहुरि महाबलवान, मिले बनमें बजरंगा १३८
अंतरजामी आप, जानते ब्रह्मांड भरकी ।
तउ संतज़न हेत, करत लीला सब नरकी ॥
सीता सोधन हेत, सकल दिसि कीस पठाये ।
अंगद ओ हनुमान,आदि लंका दिस आये १३९
मारी वीर फलांग, लंग दधि आया लंका ।
वन उजारी पुरबारी, मारी रावण सुत बंका ॥
सीताकी सुध लेय, तुरत आया प्रभु आगे ।
दइ मुद्रिका मात, बात सब कहि अनुरागे१४०

राजी होयके राम, सैंन वानरकी साजी ।
उतरे सिंधु पार, रहे जोधा सब गाजी ॥
लंका पास पडाव, आयके डेरा दीना ।
रावण कुटंब समेत, सकल संहारसु कीना १४१
महा जोद्धा जमराण,घाण तिनको सब काढयो
उतर्यो अवनी भार, अमर आनंदसु बाढयो ॥
दीयो विभीक्षन राज, काज देवनके सारे ।
एसें दीन दयाल, सीयाले अवध पधारे १४२

॥ दोहा ॥

विजयी बेठ विमानमें, आये अवध श्रीराम ।
रामवार वरताई सुभ,वरत्यो सुख आराम १४३

॥ अथ कृष्णावतार. ॥

॥ चोपाइ ॥

धरपें रयो न धर्म, पाप सब रयो छवाई ।
तब ब्रह्मासह देव, क्षीरसागरपर आई ॥

लगे पुकारन त्राहे, स्तुतीकर अंतर खोले ।
तबही दीनदयाल, प्रस्न होयके प्रभु बोले १४४
अहो देव वसुदेव, देवकी ग्रह अवतरी हों ।
पुर गोकुल वृज देश, जन्म जादव कुल धरिहों
तुम सब व्रजमें जाई करो धारण अवतारा ।
सब करिहों जन काज, अहे सत वचन हमारा.
प्रभुके वचन प्रमान, देव सब प्रगट भये हैं ।
घर घर सुख आनंद, रिधिसिधि छाय रहे हैं ।
सुखप्रद श्रावण मास, वदि अष्टमी विख्याता ।
मथुरा आवीर्भाव, मुकुंद जनमे मधराता १४६
प्रभु आज्ञासें सीघ्र, गाम गोकुळ पहोचाए ।
पालन कीनो नंद, यसोदा लाड लडाये ॥
नभवानी भइ अरे, कंस प्रगट्या तुव वेरी ।
तातें अहोनिस कंस, धरतमन भीत गनेरी १४७
वसुदेव देवकी, ताहिको बंधन कीने ।
काराग्रहमें राखि, बहूत विधी संकट दीने ॥

बालक मारन हेत, पुतनाको समजाई ।
ओर अनेक उपाय, असुरनें कीये अथाई १४८
असुर अघासुर ओर, बगासुर रखी न बाकी ।
प्रलंबासुर भेजीयो, दुष्ट सकटासुर डाकी ॥
भेजे मारन हेत, तउ नहि मरे मुरारी ।
करते लीला मात्र, असुर सब दीए संहारी ।
गोकुलमें सब ग्वाल, बालसें करत विनोदा ॥
वछ चारत वनमांहि, परम प्रगटावत मोदा ।
गौ चारत गोपाल, विधी अभिमान विदार्यो ॥
नरलीला करि नाथ, गर्व सुरपतिको गार्यो १५०
रथसें कृष्ण बोलान, भेजे या अक्रुरजीको ।
आये सकल समाज, निरखीयो मधुपुरनीको ॥
मुष्टीक चाणुरमल, सल्य और कुसल्य आदि ।
मारे असुर अनेक, प्रगट पापीया प्रमादी १५१
पीछे मामा कंस, मंचसें मार गिराया ।
वसुदेव देवकी, ताहि बंधन छोडवाया ॥

कुबजा अंग सुचंग, करि पूरण सुख दीना ।
मामीदे उपदेश, मन संतोषीत कीना ॥ १५२ ॥
विद्या सीखन हेत, कीया गुरु कुलमें वासा ।
अडसठ दिनमें आप, कीया पूरण अभ्यासा ॥
दे गुरुको दक्षणा, सफल निज विद्या कीनी ।
मथुरा जात मुकंद, गुरुसें आज्ञा लीनी १५३
जरासंघको प्रथम, लीयो सत्रह बेर जीती ।
पीछे भेज्यो तउ, मूंढ नहि तजे अनीती ॥
फिर अष्टादस बेर, मूंढनें जोर जमायो ।
तीन क्रोट म्लेच्छकी, चमु लेके चढिआयो १५४
यहांपर कृष्ण कृपाल, सीघ्र एक जुक्ति जमाई ।
विश्वकर्मा सुतार, रातको लीयो बुलाई ॥
माया सक्ति साथ, द्वारिका कंचन कीनी ।
सर्व प्रजाको तहां, अंतरीक्ष बोलाए लीनी १५५
मथुरा सूनी देख, जरासंघ सैन फिरायो ।
कृष्णचंद्र द्वारिका, राजसी ठाठ जमायो ॥

सतभमाा सुंदरी, जांबुदती रुक्मीनी राधा ।
सोल सहस्त्र एकसो, अष्ट माहारूप अगाधा ॥
ताहीमें अति श्रेष्ट, अष्ट पटरानी सोभे ।
करतही राजविलास, देख मुनीवर मनलोभे ॥
मारे असुर अनंत, संतके कारज सारे ।
सुनिके नारद वचन, हस्तनापुरि पधारे १५७
तहां अर्जुन ओर, भीमसेनको निमीत धार्यों ।
मुंढ जरासंघ मार, ओर सिसुपाल संहार्यो ॥
पांडव यश विस्तरी, पुरि द्वांरिका पधारे ।
सुन्यो सु कोरव देत, पांडवोकुं दुख भारे॥१५८॥
ध्रुपद सुताके चीर, सभामें लागे हरने ।
तब लागी लाचार, द्रौपदी पुकार करने ॥
सुनिके आरत वचन, गरुड तजके गिरधारी ।
नवसो ओर नवाणुं, चीर पूरैया मोरारी १५९
पीछे जब कुरुक्षेत्र, मांहि महाभारत होया ।
तब अर्जुन सारथी, होइके संशय खोया ॥

श्रीअर्जुन प्रिय भक्त, पमें शोकातुर पेखी ।
कहन लगे उपदेश, अनिन सद्पात्र परेखी १६०
हे अर्जुन यह सर्वे, देख तेरा परिवारा ।
मृतक तुल्य सो मान, नहि कायम रहेनारा ॥
नामवंत सब देह, आतमा एक अखंडीत ।
जन्म मरणतें रहीत, होत कबहु नहि खंडीत
जल अग्नि अरु पवन, जाहिको परस न करही ।
सर्प सिंह नहि भखे, सस्त्रहीतें नहि मरही ॥
निर्विकार आतमा, देहहे विकार वाना ।
क्षणिक सुख सब जान, पानी बुद बुदा समाना
तातें आतम जान, सोक परित्याग करिजें ।
सील क्षमा घृति दया, दैवि संपति धरिचें ॥
विवेक और वैराग, आदि षट संपति साधन ।
धारण करि एकांत, अंतरात्मा आराधन ॥१६३॥
तुरत सुरतको साध, शब्द निसान न चुको ।
अंतर आत्मा जान, सर्व स्थल वास प्रभुको ॥

प्रभु विना नहि कोइ, रंच स्थल खाली भासे ।
ज्यों अनेक आभरण, सर्वमें स्वर्ण प्रकासे १६४
एसें जग कल्पीत, आतमा मांहि कहावे ।
सीपमांहि ज्यों रजत, रजुमें सर्प लखावे ॥
स्वपने माहि पदार्थ, नग्र गंधर्व निहारो ।
एसें तीनों काल, वृथा आरोप विचारो ॥१ ५॥
जेसें वंध्या पुत्र, ससके श्रंग कहीजे ।
त्यों आकासके पुष्प, मृषा सब जान लहीजे ॥
कारण बिन भासंत, सोई कबहु सत नाही ।
द्वैत कल्पना छोड, एक ब्रह्म द्रष्टि कराहि १६६
समजी श्रेष्ट स्वधर्म, कर्मकुल पालन करले, ।
होयके बंधन रहीत, विसद निरलेप विचरले ॥
ज्यों पंकज जल रहे, लेप जलको नहि लागे ।
तेसें ज्ञानी रहत, जक्तमें बंधन त्यागे ॥
एसें दे उपदेश, पर्मकुल धर्म सुनायो ।
निश्चय करन निदान, ज्ञान वैराट दिखायो ॥

भयो युध कुरुक्षेत्र, रुधिर सरिताकी धारा ।
भुमिभार मिट गयो, भयो कोरव संहारा १६८
जाए द्वारिका फेर, कीया स्वधाम विचारा ।
आपसमें यदुवं, भया सबका संहारा ॥
आप प्रभासे आई, कीया ओधव उपदेशा ।
प्रभु पधारे धाम, हरण कर जक्त कलेसा १६९

॥ दोहा ॥

एसें कृष्ण चरीत्रको, लघुमति दीयो लखाय ।
अब संक्षेपे कहतहों, बुध अवतार बनाय १७०

॥ अथ बुध अवतार ॥

॥ चोपाई ॥

आगे असुर अनेक, लगे जब हिंसा करने ।
करी यज्ञको निमीत, उदर अपनेको भरने ॥
बरत्यो मलीन आहार, पसुको मारन लागे ।
घर घर यज्ञ जमाई, जीवहिंसा अनुरागे १७१

फेल्यो पाप प्रचंड, यज्ञको नाम धराई ।
तब प्रभु किकट वंस, भये अंजन सुत आई ॥
लीनो बुध अवतार, अहिंसा कर्म जमायो ।
कीये यज्ञ तें खंड, धर्म पाखंड चलायो १७२

॥ दोहा ॥

बहुनामी बुध होयकें, कीयो असुध उपदेश ।
अब कलजुगमें होंयगा, निकलंकी आदेस १७३

॥ अथ निकलंकी अवतार ॥

॥ चोपाई ॥

राजा धरे न धर्म, अहोनिस करे अनीती ।
कूलरीती परिहरे, पापमें राखे प्रीती ॥
दुखमें धरे न दया, प्रजाकी करे खुवारी ।
दुस्कृततें नहि डरे, हरे परधन परनारी १७४
गौसंतनकी घात, धर्म आचार न धारे ।
एकमेक होजाय, भ्रष्ट वरणाश्रम चारे ॥

ब्राह्मण पढही वेद, उदर भरनेके काजा ।
क्षत्री होयके प्रजा, लगे लुंटन धनलाजा १७५
वणिक होयके कुड, कपट वेपार चलावे ।
ओछा देवे तोल, मोलमें ठगकर खावे ॥
सूद्रो वारंवार, पशुको मारन लागे ।
सदसेवाको छोड, पाप कारजमें पागे ॥१७६॥
साधु होयके दंभ, सहित वेवार विचरते ।
संन्यासी होय सदा, द्रव्यको संचय करते ॥
वनिताकर व्यभिचार, प्यार परपुरुष प्रमाने ।
सासु ससरा साथ, द्रोह अंतरमें आने ॥१७७॥
मनुज होय मत हीण, पापमें धारे प्रीती ।
अंबाभगनी ओर, पुत्रीसें करे अनीती ॥
वारंवार दुकाल, प्रथीपर परने लागे ।
अनजल विना अधीन,होयके मरत अभागे १७८
गौओ रोवन लगी, असुभ उतपात छयोहे ।
जप तप वृतओ धर्म, तासको नास भयोहे ॥

रामना (मंदीर, ताहिको महीमा नास्यो ।
नाटक चेटक नविन, जूठमें मोह प्रकास्यो १७९
इर्षा दंभ अभिमान, ताहि वस जगवरतावे ।
जहां तहां फेलु असत्य, सत्य नहि रंच रहावे ॥
जल सूके पाताल, सींधु जल सूकन लागो ।
सरिता होगई बंद, फंद धर्मनको जागो १८०
पापी पोरो भयो, गयो सदधर्म नसाई ।
मतपंथ भये अपार, रयो पाखंड वरताई ॥
सत्य सनातन धर्म, कर्म सब नष्ट भये हें ।
लुप्त भए सदग्रंथ, पंथ भये नये नये हें ॥१८१॥
कलिमें आयुष अल्प, पंचदस वरस कहाया ।
अंतरमें अभिमान, जान जुगभर रहे काया ॥
कुटुंबी लागे झेर, ससुर प्रिय लागे सारा ।
घरकी आठो पोर, गुलामी करत गमारा १८२
परमारथके काम, करनमें आलस होवे ।
घरकारज तैयार, होयके आयुष खोवे ॥

स्वारथ काज सनेह, प्रेमदा पुरण राखे ।
बिन स्वारथ तिलभार, सुंदरी वचन न सांखे ।
सुखमें रहेवे संग, दुखमें दुर हमेसा ।
धरे न अंतर दाज, लाज नहि राखे लेसा ॥
एसें स्त्री पुरुष, अधर्मी होवे जबही ।
पूरण प्रभुका नाम, लोप होवेगा तबही ॥१८४॥
तब संतनकी साहे, देवको रक्षाकारन ।
प्रभुका होय अवतार, नाम निकलंकी धारन ॥
सबमत पंथ उथापि, धर्मको स्थापित करही ।
विष्णु यशस नाम, विप्रके ग्रह अवतरही १८५
निकलंकी अवतार, करि धारण जगमाही ।
पापीनको संहार, वार सतजुग वरताही ॥
सर्व प्रजा अरू संत, भक्तजन आनंदकारी ।
उतराखंड अवतार, होइ निकलंक तनधारी १८६

॥ दोहा ॥

होवत जब अवनी विषे, अतिसय पाप अपार ।

तब जुगजुगमें जगपति, लेत मनुज अवतार ॥
अधर्मको उथापने, धरम स्थापन देत ।
असुर संहारन आपही, हरि अवतारसु लेत ॥
धर्मसंत अरु भक्तकी, प्रभु करत प्रतिपाल ।
इन समान संसारमें ओरन दीनदयाल ॥१८९॥
प्रभु अवतार अनंत हे, वरने यह चोवीस ।
बिहारी सबको वंदही, पुनि पुनि नाई सीस १९०
यह अवतार चरित्रको, पठन करे जन कोय ।
सो पर्मानंद पावही, हरिअनुकंपा होय ॥१९१॥

॥ सोरठा ॥

पूरण प्रभु अवतार, श्रवण करे जो स्नेहसें ।
बिहारी सो नरनार, सुखी रहे संसारमें ॥१९२॥

इतिश्री बाबा बिहारीसाहेब विरचित श्रीइश्वर विहारीविलास ग्रंथे सदसास्त्रे श्रीचोविस अवतारचरित्र वर्णन भाषा संपूर्णम्.

॥ अथ विहारीसाहेबकृत पदसंग्रह. ॥

॥ राग लावणी ॥

स्वामी आए तुम सरनं गुरू,
तुमहो जगतारन तरनं ।
करो कृपा गुरूसाहेब देवा,
स्वामी आए तुम सरनं टेक. ॥ १ ॥
दयावान मुक्तिके दाता,
विघनहरन मंगल करनं ।
करुणां महेर कृपाके सागर,
सदा सेव्य असरन सरनं ॥ २ ॥
ब्रह्मवेता भरपूर भजनमें,
अखंड अनुभव ओचरनं ।
अगम अगाध अगोचर ताको,
गुरु मेरे गोचर करनं ॥ ३ ॥

जन्म धरी जगमें जीवनपर,
आए आज कृपा करनं ।
जाग्या भाग मिल्या गुरू मेरा,
मेटनहार जरामरनं ॥ ४ ॥
मंगल भाल विसाल वदन छबि,
मंगल ध्यान सदा धरनं ।
निर्मल नेत्र सुधाकर सरखे,
तनके ताप सकल हरनं ॥ ५ ॥
लगन तुमारी हृदय लागी,
चित मेरा चोटा चरनं ।
जनाविहारीको जुगतें राखो,
सेवक जान सदा शरनं ॥ ६ ॥

एजराग (२)

हमको निज दरसन दीना,
गुरु अबतो अपना कर लीना ।

करी कृपा गुरु देव दयानिध,
हमको निज दरसन दीना. दोढ. ॥१॥
देखि पहाड बडे पापनके,
तबतो मेरा मन बीना।
सकल छोडाय दिया एक छिनमें,
जन्म जन्म जो कर्म कीना ॥ २ ॥
ज्ञानामृत गुरु दीया दया कर,
प्रेम पियाला भर पीना।
जालम जोखा जरा मरनका,
छिनमें रोग भया छीना ॥ ३ ॥
निरख्या व्यापक वस्तु निरंतर,
अखंड आतम ब्रह्म चीना।
अब न मरों में जीया जुगोजुग।
अब अपना अनुभव कीना ॥ ४ ॥
खुलया ताला भया उजाला,
एक अमरपद ले लीना।

जन बिहारी जग फेर न आवे,
  कोटि जन्मके दुःख छीना ॥ ५ ॥

(३)

मिल्या मोही गुरु ब्रह्मज्ञानी,
  जिन कीया ब्रह्ममय भयभानी ।
धन धन हम धन भाग हमारे,
  मिल्या मोही गुरु ब्रह्मज्ञानी. टेक. ॥१॥
सुध विचार जब कीया स्वतंतर,
  तब उघरी अनुभव खानी ।
परमातम सत पार ब्रह्मकी,
  परी सनातन पहेचानी ॥ २ ॥
तत्वमसी पद लीया तपासी,
  अरथ जथारथको जानी ।
ईस जीवकी तजी उपाधी,
  असीपद सो एकता आनी ॥ ३ ॥
मनकी वृति मिली तिनपदमहुं,

जांनहि पहुचत मन बानी ।
जेसें सरीता सागरके मध,
उलटी आप तहां अलपानी ॥ ४ ॥
अब मन मगन भया ब्रह्मसागर,
लोक वेद नहि कुलकानी ।
संसय सकल मिटया तनमनका,
हर्ष सोक नहि वृद्ध हानी ॥ ५ ॥
साची लगन लगी सतगुरुसो,
छत न रहे तिनकी छानी ।
कहे बिहारी गुरुचरन कमलपर,
समजी कीया शिर कुलबानी ॥ ६ ॥

(४)

अकल पुरुष गुरु अवतारी,
जिन कीया अभय भवभयटारी,
प्रगट भया जग पुरुष पुरातन ।
अकल पुरुष गुरु अवतारी. दोढ ॥१॥

अजब कला आतम अनुभवकी,
विविध भाती गुरु विस्तारी ।
जीव अनेक अधम कलिजुगके,
तिनकों तुरत लीया तारी ॥ २ ॥
इंद्रलोक अग्निसम जानत,
ब्रह्मलोक सुख भयकारी ।
त्रण समान त्रैलोक सुताको,
जिन मनकी ममता मारी ॥ ३ ॥
परधन पथ्थर समान गिनत गुरु,
नागनि सम जानत नारी ।
विषयभोग विषवत भये जाको,
नही अपने तनसो यारी ॥ ४ ॥
बोलत वचन मधुर मृदू मनोहर,
लावन ललित लगत प्यारी ।
भवभंजन अंजन मलमंजन,
वर विज्ञानमय दुखहारी ॥ ५ ॥

करी आतम उपदेश कृपानिध,
अपनी सक्ति अंतर धारी ।
कहे बिहारी गुरु चरनकमलपर,
बहुरि बहुरि जांउ बलिहारी ॥ ६ ॥

(५) ॥ राग केदारो ॥

बद्रीनाथ विसाल, भज मन बद्रीनाथ बिसाल ।
केवल जिनके चरन परसत, फिरी न खावे काल ।
दोढ ॥ १ ॥
विकट परवत विकट घाटी, विकट पथरनराल ।
विकट मारग विकट चलनो, विकट पंथ कराल ।
पितांबर पटचीर पहीरे, हीरा मानक लाल ।
चढत चंदन पुष्प तुलसी, उर मोत्यनकी माल ॥
सुभग तन घनश्याम सुंदर, अलक जलक तमाल ।
कमलवदन अरुन लोचन, तिलक सुंदरभाऊ ॥
सेवा नित सतसंग सुमीरन, संतनकी सुचाल ।
जन बिहारी जानी अपनो, दीजें दीनदयाल॥५॥

(६) ॥ पद मंगल ॥

निराकार निरभेद निरगुन,
पारमाया अंजनं।
नेति नेतिसु निगम गावे,
श्रीबद्रीनाथ निरंजनं ॥ १ ॥
जक्तके हित करत जप तप,
काल कलिमल गंजनं ।
अडग आसनं वाली बेठे,
श्रीबद्रीनाथ निरंजनं ॥ २ ॥
अलक नंदागंग अदभुत,
करत जोजन मंजनं ।
जोनी संकट फिरी न आवे,
श्रीबद्रीनाथ निरंजनं ॥ ३ ॥
प्रभुजी परम उदार तुमहो,
सकल भवभय भंजनं ।

जन बिहारी सरन आए ॥

श्रीबद्रीनाथ निरंजनं ॥ ४ ॥

(७) ॥ पद राग जंगलो ॥

कुडा तेरा कुल कुंटब लोक लाज तजरे,

एक मुख रामकृष्ण रामकृष्ण भजरे दोढ १

जब गजराजको ग्रयो जूड जलमध,

तब प्रभु गरुड छांडी, राख लीयो गजरे ॥२॥

जब द्रौपदी दुष्ट अति दुखत भयो ।

तब ततकाल प्रभो पूर्या चीर धजरे ॥ ३ ॥

पल पल तेरी रक्षा करत पूरन ब्रह्म,

तोहू कछु जानत नहीं बडो हे निरलजरे॥४॥

पतीत उधारन परम दयाल प्रभो,

वंदत वेद विहारी जाकूं इस अजरे. सोइमुख

(८)

नंदजुके लाल मोहां लगत प्रान प्यारे,

वसीयो सोई श्याम द्रगनमें हमारे. दोढ ॥१॥

पुतना त्रणावृत मार्यो संकटासुर,
  बकासुर मारडारे वाकी चोंच फारे ॥ २ ॥
ब्रह्मा दिगमुढ भयो इंद्रको गुमान गयो,
  नखपर गोवर्धन गिरि उठायधारे ॥ ३ ॥
गजगत प्रान कीये दंतदो उखार लीये,
  धोबी मुख धर लपाट त्रंबक तोरडारे ॥४॥
सल कुसल चाणुर मुष्टीकमल,
  निजकर ग्रही केस कंसको पछारे ॥ ५ ॥
देवनके देव हरि मानुषको तन धरी,
  भोमीको उतार भार कोटि दुष्ट मारे ॥६॥
भक्त दुःख भंजन गर्वके गंजन,
  जुग जुग जन बिहारी सरनहे तेहारे ॥ ७ ॥

(९)

बंसुरी बजावे लाला जमुनाके तीररे,
  श्रवन सुनत मन धरत न धीररे दोढ ॥१॥

बंसुरीके नादे थंभीयो जमुनाको नीर,
खग मृग धेनु मोहे कोकिलारु कीर ॥ २ ॥
मारुत चलत नही धरी रयो धीर,
गौअनिके वच्छ मोहे पीवत न खीर ॥ ३ ॥
मुनीजन मोहे सुनीरागसो गंभीर,
धुन सुनी गोपी धाई तजी अंग चीर ॥४॥
जन बिहारी जादू कीना हलधर वीर,
सबनिको मन हेर्यो प्रभु सुखसीर ॥ ५ ॥

(१०) ॥ राग गोडी धुन ॥

सोइ गोविंद गौअनि संग आवे,
जाको निरगुन ब्रह्म निगम गावे सोई दोढ १
गोर श्याम जुगजोरी मनोहर,
नंद जसोदाके कुंवर कहावे. सोई ॥२॥
सुंदर वदन कमल दल लोचन,
मुख सोभा बरनी न जावे. सोई ॥३॥

सुंदर माल गले मोत्यनकी,
फूलनके गजरा फावे. ॥४॥
सुंदर चाल चलत गजकीगत,
मोर मुकट कोलट कलावे ॥ ५ ॥
मोरलीकी धुन सुन धाइ सकल सखी,
श्याम मिलनको चित चावे ॥ ६ ॥
ठोर ठोर सखी लेत बलैया,
भरलोंचन दरसन पावे. ॥ ७ ॥
मात जसोदाजु करत आरती,
जन बिहारीजुके मन भावे. सोई ॥८॥

(११) राग एज.

हरिको प्राननतें प्रीय जीय जानी,
एसें करत आरती नंदरानी दोढ ॥ १ ॥
कांचनथाल कपुरकी बाती,
अग्रधूप चंदन आनी ॥ २ ॥

अंकुर पान फूलफल अक्षित,
दधिदुर्वा मंगलखानी ॥ ३ ॥
जारत वदन यसोदा गौरज,
सुत निरखत जुग सुखदानी ॥ ४ ॥
आरती वारती वदन निहारती,
हरषित हीये मुख मुसकानी ॥ ५ ॥
निरखत सुंदरस्याम सकल सखी,
वंदत जोरी जुगल पानी ॥ ६ ॥
गावत ग्वाल बाल मिल मंगल,
उचरत मुख अमृत बानी ॥ ७ ॥
लीला ललीत लाल गिरधरकी,
जनबिहारी जुके मनमानी ॥ ८ ॥

(१२) ॥ राग मारु ॥

मन मलवाने घणुं थाए,
ओधा जाइके जोरे मोरलीवालाने दोढ १

गोकलीयुंरे तारुं गाम गोपीना वर,
रेजोमां मथुरांमाए ॥ २ ॥
तारेनें मारे हरि प्रोत बंधाणी,
गिरधर घडी न रेवाय ॥ ३ ॥
वीठलवृहनां मुंने बाणज मार्यांरे,
मनडूं रयुं छे मोरछाई ॥ ४ ॥
ते दाडानां मारा मन तलखेछेरे,
दास बिहारी गुण गाए ॥ ५ ॥

(१३) राग एजः

नेण सकोमल थाए, जोवा अमें गेयातारे
जादवराए दोढ ॥ १ ॥
रमणीक भोम रलीयामणीरे, छे रतनाकरमाए ।
सई सोभा कहुं सागर नीरे, घेरी गरजन थाए ।
अधम उधारण गोमतीरे, जे जगमां नर नाए ।
ए निरमल जल जीलतारे, पातक परलें थाए ॥

दूर्लभनगर द्वारावतीरे, रूडा रणछोडराए ।
जोइ जोइ जुवे तुने जात्रुडारे, वली वली लागे
तारे पाए ॥ ४ ॥
सुंदर वाघा सोभतारे, अहोनिस अंग धराए ।
भीना मनोहर मोलीयारे, कुंकम केसरमाए ॥
केतकी कणीयर केवडोरे, जावंत्रीनें जाए ।
फुल बन्या बहु भातनारे, हार धर्या उरमाए ॥
हीरा माणक मोतीडारे, जगमग जगमग थाए ।
कोटिक ग्रहेणां तारा कोटमांरे, सोभावरणी
नव जाए ॥ ७ ॥
धुम जकोला नित नवारे, आनंद ओछत्र थाए ।
हइडे हीसोरा आवे हेतनारे, हइडे हरष न माए
रात दिवस रूडा रंगमारे, आनंद लीला वरताए
नित्य हरिने निरखतारे, नयणे त्रप्त न थाए. ९
नेणामांथी नाथजी रे, अध घडी अलगा न थाए
दास बिहारीके जाउं वारणेरे,प्रीतम पलपल माए

(१४) ॥ पद राग खंभाती ॥

आजनी घडीरे धन आजनी घडी,
में निरख्या जगन्नाथ धन आजनी घडी. टोढ १
नित दीयाडीनारे अढारे चोकीरे खडी,
दास हरिनां दाण न आले बीजारे अडी ॥२॥
वर्ण अढारे एकठाजीमें रुडी रीतडी,
एक बीजानां मुखमां आले पूरण प्रीतडी ॥३॥
जगना जीवन जोइने जोया भरी आंखडी,
मुख देखी महा सुखने पाम्या ठरी छातडी ४
रात दिवस हृदये राखुं मेलुं नही घडी,
दास विहारीनां देव छे मारा जीवनी जडी ॥५॥

(१५) रागएज.

भावसें करोरे भजन, भावसें करो,
आतो सपनो छे संसार, भजन भावसें करोरे. टोढ १
भाव करी भगवंतनें भजो, परपंच परहरो ।
सतगुरु संत सेव्या विना, निश्चे नही ठरो ॥२॥

कालनो जोखम जोर छे, तेने देखीने डरो ।
चेतीनें तमे चालजो, आगळ काम छे खरो ॥३॥
एक तुं आतमराम, रदामां अखंड ओचरो ।
सहू पेला संसारमां प्राणी, सुखे तो तरो ॥४॥
सदगुरुना शब्द रुडा, रदामां धरो ।
दास बिहारीनां देवनें भजो, भूला कां फरो ॥

(१६) पद राग परज.

रेजो मारी मिटडलीमां मावा,
नही दउं तमनेरे जावा. दोढ ॥ १ ॥
प्रीत लगाडी स्याने पेली,
हवे केम जासोरे मेली ॥ २ ॥
अमनें भोजनीयां नही भावे,
नयणे निंद्रारे नावे ॥ ३ ॥
सुखडा सामलीयाना साले,
व्याकुल कीधारे वाले ॥ ४ ॥

पलक न मेलुं मारा प्रीतम तमने,
वाला लागोरे अमने ॥ ५ ॥
वीसरी वात हरिनें वृजनी,
सनमुख रमतारे सजनी ॥ ६ ॥
रासमंडलमां अहर्निस रमतां,
एणीपरे हरिनेरे गमता ॥ ७ ॥
सुंदरवर अविनासी पामी,
दास विहारीनारे स्वामी ॥ ८ ॥

(१७) राग एज.

सांभल सजनीरे कहुंछुं,
हुं सीखामन तुजने दहुछुं ॥ १ ॥
सगपण साचुरे करजो,
जे होए काचुं ते परहरजो ॥ २ ॥
दगमग मेलोरे हो मननी,
संगत करीयें साधु जननी ॥ ३ ॥

हरिजन हरिनेरे वाला,
कुबुधी लोक न जाणे काला ॥ ४ ॥
हरि हरिजनमारे रहे छे,
सुरती सांख्य पुराण कहेछे ॥ ५ ॥
हरिजन हरिछेरे पोतें,
गुरुगम वीणां अलगा गोते ॥ ६ ॥
हेत हैयामारे हो आणी,
सेवो संत पूरण ब्रह्म जाणी ॥ ७ ॥
पगला धोइनेरे पीजें,
तन मन धन नोछावर कीजें ॥ ८ ॥
जेम वाले तेमरे वलीए,
भ्रांतुं भांगी भेला भलीयें ॥ ९ ॥
जेम राखे तेमरे रहीयें,
मेंणला जग सगलानां सहीयें ॥ १० ॥
कारज तारेरे हो थासे,
नही तो अवसर एळें जासें ॥ ११ ॥

ए सीखामणरे मारी,
जन विहारी कहे जुवोने विचारी ॥ १२ ॥

(१८) राग एज.

जुवोने विचारीरे जुगते,
जीवपद गलसे जीवन मुगते ॥ १ ॥
जीवनमुगतारे जोगी,
अखंड अनुभवना जे भोगी ॥ २ ॥
जाग्रत पदमारे जागे,
काम क्रोध मद लोभ न लागे ॥ ३ ॥
मन सीतल चितरे समता,
हरष न सोक न मोह न ममता॥ ४ ॥
भेदाभेद नरे जाणे,
परम विवेकी पक्ष नं ताणे ॥ ५ ॥
ताप न लागेरे तेने,
नाना भाव नहि चित जेने ॥ ६ ॥

सद्गुमां सरखुंरे भाले,
आतम जाणी अंतर टाले ॥ ७ ॥
दोष न देखेरे देहना,
आघा अगाध अनुभव जेहना ॥ ८ ॥
देह देह कृत छेरे काचा,
तेतो कांए संतन जाणेरे साचा ॥ ९ ॥
साचा साचुरे देखे,
घटघट पुरन ब्रह्मनें पेखे ॥ १० ॥
बीजा केनेरे कलपे,
जे जेनु छे तेनें अलपे ॥ ११ ॥
करम न लागेरे करते,
देहना साक्षी थइने वरते ॥ १२ ॥
अकलकला छेरे एनी,
महीमा कही न जाए मुख तेनी ॥१३॥
सुकदेव सरखारे जाणे,
जन बिहारी कहे व्यास वखाणे ॥१४॥

(१९) राग एज.

हरि चरणे ले लागीरे,
संसारीयो मेल्यो त्यागीरे ।
साधुजीनी संगत भावेरे,
बीजो कोए नजरे नावेरे ॥ १ ॥
पूरण भागे नरतन पायोरे ।
हेते हरिना गुण गायोरे,
वालाजीने केम विसारुंरे,
जेणें मन मोहेल मारुरे ॥ २ ॥
जूठा धन जोबन जाणीरे,
वालाजीनी भक्ति वखाणीरे ।
दया करी दरसन देजोरे,
मारा रदेयामां रेजोरे ॥ ३ ॥
साचा सतगुरु भलें मिलीयारे,
जेने ग्याने मन गलीयारे ।

दया करी मंत्र दीधारे,
तेणे मारा कारज सीधारे ॥ ४ ॥
बावाजीनें जाउं बलीहारीरे,
जेणे लीधी खबर अमारीरे ।
वालो विहारीदासना स्वामीरे,
तार्या गुरु अंतरजामीरे ॥ ५ ॥

(२०) राग एज.

जोइने करे जे कोय समागम संतनीरे ।
तेने ते घडीए थाय कृपा भगवंतनीरे ॥ १ ॥
प्रथम गुरु प्रताप कहू केटलुं कथीरे ।
भवसागरनो भय सखी सुपने नथीरे ॥२॥
ज्ञान हेमाला माहे जेना मन जाई गल्यारे ।
उगा आतम भाण तिमर तेनां टल्यारे ॥३॥
जाण्युं जथारथरूप पोते पोतातणुंरे ।
आतम दीसे एक गयुं द्वतीयापणुंरे ॥ ४ ॥

जेनुं हतुं जे कोए तेने जाइ ते मल्युंरे ।
वस्तु ते व्यापक आप छते अछतुं टल्यूरे ॥५॥
आदेह तुं जे कोए अंते पद ते थयुंरे ।
चैतन्य चिद आनंद विहारी विलसी रयुरे ६

(२१) राग एज.

मारो नानपणानो नेह सामलीया साथेरे ।
अमे रमता दीयाडी रास हरिनें हाथेरे ॥ १ ॥
अमने लागेल वृहनां बाण घायल कीधारे ।
मीठी मोरलीयें मारा माव मन हरि लीधारे २
वाला तम विन घडी न रेवाय प्रीत बंधाणीरे ।
मारी कालजडानी कोर वांसलीयें विंधाणीरे. ३
मारुं सुकाणुं छे सरीर अनडा न भावेरे ।
मुंने वेरण थइ छे रात निद्रा नव आवेरे ॥४॥
मारा मनडामारे मोरार चितडामां चणकेरे ।
मारे नयणे नीर न माए आंसुडा ठणकेरे ॥५॥

एवी अंतर माहेली वात के आगल: कहीयेरे ।
एतो पोताना मन माये समजीनें रहीयेरे ॥६॥
तमने राखुं रदेया माहे घडी न विसारुरे ।
मुने मीठुं लागे मुख मांहे नाम तमारुंरे ॥७॥
दीनोनाथ द्वारकाधीस जोवाने चालोरे ।
एतो जादव जीवनप्राण विहारीने वालोरे ॥८॥

(२२) ॥ राग परज ॥

प्रगटी पीडा प्रेमनीरे,
खटके उंडी अंतर माए ।
अहर्निस पीडा अति घणीरे,
मारे सरीरनी सुध नाए ॥ १ ॥
व्रे वेरागे व्याकुलीरे,
बूटी मारा सतगुरुनी पास ।
लै समजावी मुनें सानमारे,
कीधो मारे जन्म मरणनो नास ॥ २ ॥

मात तात मारे नथीरे,
केनां सगा कटंब परिवार ।
विसर्या वृहनी वातमारे,
अमने सूजे नही संसार ॥ ३ ॥
उंच नीच कुल कोए नहीरे,
मारे नथी नात कोए जात ।
वेष वरण विधी वेदनीरे,
हवे हुं भूली सर्वे भात ॥ ४ ॥
अति अंगमां वेदनारे,
जेने अहर्निस एवी थाय ।
ते केम जिवे जीवपणेरे,
जेनां कोरी कलेजा खाय ॥ ५ ॥
विकट पंथ व्रे वंतनोरे,
दीसे एवो अनोपम देस ।
जन विहारी कहे जाणजोरे,
तियां कोए पूरा करे प्रवेस ॥ ६ ॥

(२३) ॥ पद राग पूर्वी ॥

कोइ काम नावेरे केनेरे, भजो भगवान ॥ १ ॥
सगा कोए साथेरे नावे, कयुं धरो कान,
जम जडसें तारे, पडसेरे कोण जमान ॥ २ ॥
तन मन धनरे तारुं, नहीरे निदान ।
तेने माटे तमने कहुछुरे, करो कुलवान ॥३॥
काया केरा क्यारे करो, गर्व गुमान ।
एक दिन उडी जासोरे, जेवा तरुपान ॥४॥
सदा संतु भेलारे रोनेरे, मेली देयोने मान ।
हेतें प्रीतें हरि भजोरें, मेली कुलकान ॥५॥
छत्रपती जोगीरे जती, दरस दीवान ।
थिर कोए रया नहीरे, बडा सुलतान ॥ ६ ॥
ग्यानी मुनी गावेरे, जेने वेद पुरान ।
तुं तो तेनें भजीलेनेरे, मारुं कयु मान ॥ ७ ॥
सीखामण संतुरे केरी, समजो सुजान ।
भक्ति माणो जग जाणोरे, सुपना समान ॥८॥

जगत सर्वे मिथ्यारे जाणो धरी सोहं ध्यान ।
दास बिहारी देवा चरनेरे सदा गुलतान ॥९॥

[२४] ॥ पद राग सोरठ ॥

नटवर साथे नेह, लगन मन लागुरे ।
मिंदरीये आठ्या माव, भव दुख भागुरे ॥ १ ॥
जगजीवन जगमाए, जोया तमनेरे ।
हवे नजरे नावे कोये, बीजुं अमनेरे ॥ २ ॥
नही करीयें निरधार, बीजा केनोरे ।
आ जगमा छे आधार, अमनें एनोरे ॥ ३ ॥
भूधरजी भरथार, कोडे कीधोरे ।
हरषो हइडामाए, लालन लीधोरे ॥ ४ ॥
आदे अंते एक ए, वर रुडोरे ।
लई कीधो अमने आज, अंमर चुडोरे ॥ ५ ॥
चौद भुवन त्रैलोक, तेहना कर्तारे ।
ते मावो माखण काज, घर घर फरतारे ॥ ६ ॥

१८

शिव सनकादिक सेष, पार न पावेरे ।
ते पीयु अमारे पास, लाड लडावेरे ॥ ७ ॥
पूरण मारा पुन्य, एवर पामीरें ।
छे जन बिहारीनां देव, अंतरजामीरे ॥ ८ ॥

(२५) ॥ राग कारोइडो ॥

नामने वारी नामने वारी,
वाला तारा नामने वारी ।
गोपी वरछो गिरधारी,
एणे नामेरे अजामेल ओधार्यो वारी ।
ग्राह गज छोड्या वाले गनिका तारी ॥ १ ॥
वालीडानां नामने वारी,
एणें नामें बिलाडीना बे बचलारे ।
अंतर राख्या अगनमाए उगारी वाला० २
अगम अगोचर निगम न जाणे वारी ।
महीमातां मोटो छे एवो नामनो भारी ३

दास बिहारीनें गुरू देवो भलें मिलियारे ।
वस्तुगत जाणी तारा नाम विचारी ।
वाला तारा नामनें वारी ॥ ४ ॥

(२६) राग काराइडो.

प्राणीरंग सुगने रातो, माया मद छाकमां मातो ।
जाणे हुं जगथी मोटो, दीसे दानतनो खोटो ॥
लोभे अपयश तें लीधो, अहंकारें आंधलो कीधो ।
लुंटाणो तुं कुलनी लाजे,कुडा कुटुंबने काजे ॥
साधुनी न करे सेवा, पूजे भूत प्रेतनें देवा ।
साधु जग सरखा जाणे, देखी मन दुबधा आणे ॥
रिदे छलं भेद ते राखे, मोटे मोटपणुं दाखे ।
अंतरमां उंडीयुं घातुं, करे मुख मिठीउं वातुं ॥
वंदे जीणपणे जाजे, देखी अंतरमां दाजे ।
एवुं जाणपणुं जेनें, बिहारी हरि वेगला तेनें ॥

(२७) एजराग

तेरा हे जेसा घर दूर, मन तुं क्या मोया

गोरख गोपीचंद भरथरी, शिरपर डारी धूर ॥
मानुषदेह पाइ तें मुरख, भेद न समजो भूर ।
जगत प्रपंच जात हे एसें, ज्यौं पानीका पूर ॥
कांचन जेसी काया तेरी, एक दिनहोएगी चूर ।
जन बिहारी कहे देखो कोए दुनीयां, हरि हे
हाजहजुर ॥ ६ ॥

(२८) राग एज,

तेरो या अवसर दिन दोइ, भजन करले भाई ।
मातपिता सुत बंधव तेरा, काम न आवे कोई ॥
मुआ पीछे मुरखा तेरी, कामन दो दिन रोई ।
जमरा जेसा वेरी तेरा, भरनिंद्रा क्यों सोई ॥
जन बिहारी कहे सुन मन मेरा, हरि भज्या
सुख होई ॥ ५ ॥

(२९) राग एज.

मोरली कामणगारी,
गिरधारी तारी मोरली कामणगारी ।

तारो मोरलीयें मारा मन हरि लीधारे,
कामण कीधा छे मने भारी ॥ २ ॥
व्यापी वृह पीड अमनें उंडी अंतरमारे ।
तेनी वेदना छे अमने न्यारी ॥ ३ ॥
सगा कुटंब अमे सरवे तज्यारे ।
वाला पण मेल्या छे विसारी ॥ ४ ॥
संसार सुख ते अमनें सुली जेवा लागेरे ।
दुनीयां लागे छे अमने खारी ॥ ५ ॥
दास बिहारीनां स्वामी व्याकूल थइछो ।
मोरली सांभलता बावन बारी ॥ ६ ॥

(३०) राग एज.

मारा नाथ विना केम चाले,
कठण मनडा कर्या मारे बालेरे ॥ १ ॥
वाले प्रथम प्रीतज कीधीरे,
मथुरां जाइ मेली दीधीरे ।

वाले वलती ते खबर न लीधीरे,
कठण मनडा कर्या मारे वालेरे ॥ २ ॥
मारी प्रेमनी पीड न जाणीरे,
कांइ मनमां मेर न आणीरे ।
वाले वात पोतानी ताणीरे, कठण मनडा ३
मारे आ दहाडा केम जासेरे,
मारा प्राणपति नहि पासेरे ।
अमथी ए दुख केम सेवासेरे. कठण. ४
तमने स्वामी बिहारीनां सुं कहीयेंरे,
अमें दास तमारा छहीयेंरे ।
अमने जेम राखो तेम रहीयेरे. कठण. ५

(३१) राग एज. कच्छी भाषा.

आंऊ तांको जाणां कींय राजीतां थींधो,
रणछोडरे, को जाणां कींय ॥ १ ॥
साव सचीतां आंउं कोयक करीयां वला,
कुडीयुंतां करीयां दियांणी क्रोड ॥ २ ॥

तप तीरथ वृत जोग न जाणां वला,
एडोनी अंईयां अपरोड ॥ ३ ॥
घणें सतीयेंजा तेंतां सत छोडाया वला,
विरलेके दिन्ये हीइये ठोड ॥ ४ ॥
दास बिहारी जो सामीं अधम उधारण वला,
जादवनायें कोए तोजी जोड ॥ ५ ॥

(३२) राग एज.

निरखीतां ठरेया मुंजा नेणरे सामरीयो सगो, दोढ.
जमनाजीनीरे तीरें धेंन चरावे वालो,
मधुरी वजाडे वालो वेणरे ॥ २ ॥
वाट हलंधे आंइ घडीएक विलभो वला,
वाला लगेंता तोजा वेण ॥ ३ ॥
तोजी मोरलीयें मुंजो मनडो तांहरेयो वला,
सारा लगेता मुके सेंण ॥ ४ ॥
दास बिहारी जो सामी सुखडे जो सागर वला,
सुभद्रातां जेंजी सगी भेण ॥ ५ ॥

(३३) राग एज.

आंउ तोके कींयनी बिसारीयांरे सामरा,
आउं तोके किंयनी विसारीयां,
तोंसेंतां बधो मुंजो मन, दोढ. ॥ १ ॥
बपैयो तलखे जींय मींयके मिठामोंजालो,
तींय आउं चितमें चितारीया ॥ २ ॥
प्रीतुं तां बंधीयूं हांणे पाणजीयुं वला मुंजालो,
वाटडीयुं वलेजीऊं निहारीयां ॥ ३ ॥
बिहारीचे मोंजे वलेता मिठा मोंजालो,
घणुं घणुं घटतां मोंजो घोरीयां ॥ ४ ॥

(३४) राग एज.

कुबुधीडा कांउ जाणे,
पाल्या जिण जिण जुजवा ताणे ॥ १ ॥
पेलुं पोखेनें पछे खरे मने खेडसे,
ते मुडा भरसे माणे ॥ २ ॥

बापदादा ताला लोधेनें लीधा,
जोरावर जमराणे ॥ ३ ॥
महा पदारथ आवो रुडो मानखो,
पछे नही मले नांणे ॥ ४ ॥
भयँ जमरानो भुली ग्याछो,
चेतो लइने टाणे ॥ ५ ॥
सेवा समरण कोये नथी करता,
पिसो चोरासी खाणे ॥ ६ ॥
दास बिहारीनां सामीनें भजेले.
जेने वेद वखाणे ॥ ७ ॥

(३५) राग एज.

भजले नरनारायण जांलगछे पांजर प्राण,
भजले नरनारायण ॥१॥
अजामेल अपराधी तार्यो, गनिकाने वेमान ।
बूडत गजरा पेलो राख्यो, सोइ सामरो दीवान ।

अनेक नर आगे अवनीपर, खपी गया खुरसाण।
जे जावे ते फरी न आवे, इयेनां अेंधाण ॥३॥
ते माटे नरनार हरिसें, आज करो ओलखाण।
आजकाल करतां वइ जासे, मनपंखी मेमान ॥
काम क्रोध मोह ममता मारी, हरिनें हृदय
आण।
जन बिहारी कहे दूर कर दुबधा, ए जांणपणुं
जाण ॥५॥

(३६) राग चूरण.

मेरातो मगन गुरु ज्ञान मेरे,
मन मेरा मगन गुरु ज्ञानमें ॥ १ ॥
महेर करी मोही दीयो माहावायक।
कयो हे गुरुजी मेरे कानमें ॥ २ ॥
सुनत शब्द तनकी सुध विसरी,
द्रष्टी लगी हे मेरी ध्यानमें ॥ ३ ॥

आठोइ जाम अधर धरे आसन ।
निरत सुरतरे निसानमें ॥ ४ ॥
दास बिहारी कहे मेरा प्रीतम पाया,
जेसें किरन भइ भानमें ॥ ५ ॥

(३७) ॥ पद राग काफी ॥

समजी ले सुध विचार जात लडी जाणोरे तुमारी,
समजी ले सुध विचार ॥ १ ॥
पोते पोताने ओलखोरे, मेलो अवर विचार ।
आदेनें अंते मधे एकछेरे भाई,
निगमे कर्या छे निरधार ॥ २ ॥
बोले ते बीजो नहीरे, नारायण नरनार ।
नामनें रुप सर्वे नाथनारे संतो,
स्याने मानाछो संसार ॥ ३ ॥
देवा सदगुरु भले मल्यारे, अनभवनां भंडार ।
दास विहारीनें करुंणा करीरे संतो,
पलमा उतार्या भवपार ॥ ४ ॥

(३८) रागएज.

चेत सवेरारे मनमेरा,या अवसर बेर बेर नहि आवे,
मरम समज मनमेरा ॥१॥

मात तात सुत भ्रात भामनी,
तामें कोए नही तेरा ॥२॥

कोनका कुटंब परिवार कबेला,
छोड माया जाल जंजेरा ॥३॥

नाता निमष एक आय बन्याहे,
पीछे कोए नहि किनकेरा ॥४॥

छोड संग एसा सेवा कर सतगुरुकी,
मिट जाए उरका अंधेरा ॥५॥

भक्ति भुलोतो भवसागरमांही,
बोत फिरो भव फेरा ॥६॥

दास बिहारीके सीताराम समरले,
तुजमें साहेब तेरा ॥७॥

(३९) ॥पद राग सारंग ॥

अब तुं चेत अभागी अंधा,
नइ तो फेर पडेगो फंदा ॥ १ ॥
तें तो चाल चली सब जूठी,
तेरी दोनु अखीया फुटी ॥ २ ॥
तेरे कपटकी गांठ न छुटे,
तबलग पकड पकड जम कुटे॥ ३ ॥
बिठो काल कतरनी लइने,
तोकुं क्या समजावुं कैने ॥ ४ ॥
एसैं बिहारी बोल विचारी,
तुम सुनीयो सब संसारी ॥ ५ ॥

(४०) राग एज.

हरि अंतरथी मथाजोरे,
अलगा एक घडी ॥ १ ॥
हरि तम चरणे मारुं चित बाधु,

एवुं मरजीव्यानुं मरम लाधु ।
एवी सुध समज्यानी टेव पडी ॥ २ ॥
निज ज्ञानीजन जेहने गोते,
एवा पुरण ब्रह्म ते छे पोते ।
तेनी परतीते पहेचान पडी ॥ ३ ॥
मारी पूर्वजन्मनी प्रीत खरी,
में ज्यां त्यां दीठा ब्रह्महरि ।
मारी सुरत सखी असमान चडी ॥ ४ ॥
मारुं हूंपद सहेजे समाइ गयुं,
जे जेम हतुं ते तेम थयुं ।
एवी जन बिहारीनें दिसा जडी ॥ ५ ॥

(४१) राग एज.

स्वे आप बिचार आद अंत मध्य,
सदचिद आनंदरुप छे ।
बीजुं सकळ असार मानीनता,
रुपी ते मिथ्या भ्रम कूप छे ॥ १ ॥

जेम सूतो नर निंद्रा संगे,
सुपने भरम्यो नाना रंगे ।
जो जाग्यो तो आनंद अंगे ॥ २ ॥
रजुमां जेम अही भरमे भास्यो,
प्रगट्यो सूर्य तिमिर त्रास्यो ।
तिम ज्ञान उदय अहंपद नास्यो ॥ ३ ॥
जेम मारु स्थल सरिता भासे,
तेनें देखी पसुधाये प्यासे,
नर भटके आतम अभ्यासे ॥ ४ ॥
पाषाण पुतली सउ सरखी,
चांडाल आदि जुओ द्वज परखी ।
नरनारायण जोने नरखी ॥ ५ ॥
जन बिहारी गुरुगम होय जदा,
समजे भ्रम सगलुं जाए तदा ।
सुमरो नित सोहं सोहं सदा ॥ ६ ॥

(४२) राग एज.

मुनी वसीष्ट कहे सुणो माहाबाहो,
रामचंद्र एक ब्रह्म छे ।
बीजुं मिथ्या प्रपंच जां जुवत भास्युं,
ते सुभासुभ करम छे ॥ १ ॥
सुपने नर सयन करे कोई,
प्रतीभासें अन्य श्रष्टी होई ।
सोवत जो जाग्यो स्वे सोई ॥ २ ॥
पुतली कलपी सिलपी मनमां,
सवेदन खंभतणा तनमां ।
जेम अभ्र अनेक विघी गनमां ॥ ३ ॥
जेम उदधी तरंग ते छे वारो,
मुरखनें ब्रह्म भास्यो भारी ।
एक आतम छे सचराचारी ॥ ४ ॥
करी सम्यक द्रष्टी कल्पना त्यागो,
सदगुरु पासे स्वे पद मागो ।

एक अखंड आत्म अनुरागो ॥ ५ ॥
एवुं समजी संशय दूरकरो,
हृदये आतमनुं ध्यान धरो ।
माहा मुक्त थइने भुअपर विचरो ॥ ६ ॥
जगहेत वसीष्ट वदे वाणी,
सदबोध्या छे सारंगपाणी ।
दुखनास कर्ण सर्व सुखखाणी ॥ ७ ॥
जिम भानु किरण भिनता नोय,
तंतु पट पट तंतु सोय ।
जन बिहारी तेम जग ब्रह्म जोय ॥ ८ ॥

(४३) पद राग धनाश्री.

सोइ दिन आयोरे,
जेमां जीवतणो ओधार ॥ १ ॥
केनी काया माया कामनीरे,
केना कुटंब परिवार ।

कोय नथी तारा कामनारे,
समज समज गेंमार ॥ २ ॥
जुओनें विचारी आ जक्तमारे,
सपनुं छे संसार ।
रतन पदारथ मानखोरे,
तुने नहि मिले वारोवार । ३ ॥
संतो आ संसारमारे,
नही रेवुं निरधार, मरवुं छे तारे ।
नही रेवुं निरधार, मरवुं छे तारे मुरखारे ।
तेमां फेरनफार ॥ ४ ॥
सतगुरूए आ संसारमारे,
उतार्या भवपार ।
गुरूनें वचने बिहारी विनवेरे,
कोए चेतो चेतणहार ॥ ५ ॥

(४४) अथ कीर्त्तन. कच्छी भाषा ॥

जेंजे दिलमें दगा, तेंके जमजा जोडा लगा ।

मुरखडेंके मार पोंधी, जेंजे दिलमें दगा, दोंढ,
जिनी ते नरे राम विसारेयो,से नर सरज्यां ढगा।
वैवैनें मरीज वेंधा, अखीयुं कढंधा कगा ॥ २ ॥
जिनीते नरे राम विसारेयो, कामी सरज्या कुता,
भुख भड्डवेंजे पेटमें, आडा थइने सुता ॥ ३ ॥
जिनीते नरे राक विसारेयो, से नर सरज्या गधा।
मथत छांटुं मीठेज्युं, पोये थेया अचेंनर थघा ॥
सेठ जिनीजो सामरोनें, मालम सतगुरु सगा ।
बुडें न तिनीज्युं बेडीयुं, छुटा जिनीजा पगा ।
मोटपणेमें मोइरेयानें, भक्तेंनुं ते भगा ।
अंतकाल टाणे उनींकेरे, जमरा लुंटण लगा ॥६॥
वाटें घाटें वेइ रयारे, चिलड जिनीजा चुगा ।
बिहारीचे इन वेडमें, कुरो बूजें नर बगा ॥७॥

(४९) राग एज.

वह विहारीचे तिनके, जिन सधर सांई सुंजातो,
मनजो मोरम हिकडो मीयां, मिंज पंडंजो पाडो,

पांण सचो परडेयन तेंके, पंजकंधा कुजाडो, २
नीयर तोजे नाले संघो, पंजनके खगो पातो,
सा कलंदर सिंधजो भाछा, रोयल रभ सुंजातो.
मिंज मदोनो मिंजइं मको, मिंजइं सेण असांजो.
नित दियाडि नेंणीपसां, पुरण पिरी पांजो. ४
मन मोंइजो हाणें चड्यो, ग्यान संधे घोडे,
नित खुदाजे नाले चंगा, जन बिहारी जसजोडे.

(४६) ॥ पद राग एज ॥

चालोनें द्वारिकां जोवारे जाइयें,
निरमल गोमतीनां नीर नाइयें ।
बेड्ले बेसीनें अमें बेट पधारीयें,
रणछोड्रायना दरशन पाइयें ॥ २ ॥
द्वारावतीमां वसे देव निरंजन,
देवल देखीने पावन थाइयें ॥ ३ ॥
छापुं लइनें अमें पीड पखालीयें,
पापनुं खोलीयुं पलटायेंरे ॥ ४ ॥

दास वेरो कहे जन्म जुक्तसें,
हेतें हरिनां गुण गाइयें ॥ ५ ॥

(४७) राग एज.

कयुं नहीं करेरे, जेने जावुं छे जमद्वार ।
वाल्या नही वलेरे, पाल्या मुरख खासे मार १
नरक पडयानुं नेमछे जेने,को किम लोपे कार।
केवल कुंभीपाकमां जेनें, पडवुं चोकस चार २
संतना निंदक नरके जासे, तेमा फेरनफार ।
मेडावे बेसीनें मुंछनें मोडे, टोलीया गंड कटार.
वैष्णव साथे वादज मांडे, हडनमाने हार,
दास बिहारी कहे निंदकी पापी, ते किम पामे
पार ॥ ४ ॥

(४८) ॥ राग एज ॥

मारकाल सीचांणा, तो जखमारे जमराणा ।
मनमार काल सीचाणां. १
धनुषध्यानका पडछ ग्यानका, करणीमारकबाणा,

तरकस खेंची तीर चलाया, आरपार वींधाणां.
अनहदनाद गगनधुन गाजे, वाजे नीत नीसाणां,
दिइमंदिरमें दीपक प्रगट्या, भींतर सुरज भाणां.
दिलभींतर एक दर्पण देख्या, पछमघाट पिछाणां,
रमताराम सामसब दरसन, उनदरपणमेंदेखाणा.
घट भींतर सतगुरु शब्दकी, नेचल विकतीखाणा
कोट करम अपराध अपारा, शब्दे सबे धोवाणा.
सुरा साधु लडे लगनसों, कायर कूड कमाणा ।
मोजम सारा पटा प्रेमका, सदगुरु हाथ लखाणा.
सतगुरुए सतशब्द सुनाया, माहारोग मेटाणा,
जनबिहारी सतगुके चरने, वण नांणे वेचाणा ७

(४९) पद राग कल्याणनी होरी.

हरि उमंग होरी लाल हरि उमंग होरी ।
खेलत सखीयनके संग, हरि उमंग होरी. दोढ.
सुंदर वनराय सकल, यमुना त्रट मोरी ।
सुंदर आवत सुगंध फूलनकी फोरी ॥ २ ॥

वाजते मृदंग ताल, गावत मिल गोरी ।
नाचत निरतत रसाल, तान तोरी तोरी ॥३॥
नंदके लाल भरी गुलाल, सबहीनकी जोरी।
दारत अखीयनमें आय, सकल दोरी दोरी, ४
सुरनर मुनी मग्न भये, निरखी जुगल जोरी ।
सांवरी सुरत मधुरी मुरत, लीनो चित चोरी ५
वृजकी नार मानी हार, बोलत मुख थोरी ।
प्रभुको आय परत पाय, बिहारी करजोरी. ६

(५०) पद राग मेवाडी तथा काफीनी होरी.

चलो देखन जइयें होरी, चलो देखन जइयें
गोरी. टेक.
चंग मृदंग बंसुरी बाजे, सब मिलत गावत होरी
करत ख्याल व्रजबाललाल मिल,
आनंद आय बढ्योरी, कहा कहुं सजनी मोरी.
चलो देखन. १
व्रंदाबनकी कुंजगल्यनमें, केसर कीच मच्योरी,

उडत गुलाल अरुन भये अंवर,
तनको ताप गयोरी, कछु नही जात कयोरी.
चलो देखन. ॥ २ ॥
किनहुंक जन्मही जोगेश्वरको, भगवो वेष धर्योरी,
करत वकोर सोर सब मिलके,
कामकाज विसर्योरी, एसो एक खेल रच्योरी.
चलो देखन. ॥ ३ ॥
एक एक ग्वाल संग एक गोपी, करन केल जोरी
जोरी,
विचमें दास बिहारीजुको ठाकर, नेंननमाही
वस्योरी,
खेले व्रषभान कीसोरी, चलो देखन जइयें गोरी.

(५१) पद राग कडवो.

आतमाराम ते सर्व रुपे रपे,
अनुभवी होय ते मर्म जाणे ।

एक अद्वैत आनंदघंन ब्रह्म छे,
वेद वेदांत जेहनें वखाणे. ड्ढोढ. ॥ १ ॥
जे निराकार निरगुण निरावे वछे,
तेज साकार थइ करे कीला ।
स्वे रमाडे रमे तेज तेने विसे,
विस्तरी आप विज्ञान लीला ॥ २ ॥
जेम हतुं कनक वली तेज कुंडल थयुं,
कनक कुंडलतणे रूप फाव्यो ।
तेमज आ वस्तु ते विस्व थइ विस्तर्यों,
अणछतां नामनें रुप लाव्यो ॥ ३ ॥
नामनें रुप कोय रंग जेनो नथी,
नामनें रुप आरंग तेहनां ।
कर्म कोई धर्म आचर्ण जेने नथी,
कर्म नें धर्म आचरण एहना ॥ ४ ॥
जिम रवी कीरणते रुपछे रवितणुं,
अर्क विन कीर्ण एको न होये ।

तिम चैतन तें रुप चिद्रुपनुं,
जीव जेने कहे शीव सोये ॥ ५ ॥

सकल श्रवणे करी सांभले श्रीहरी,
सकल चरणे चिदानंद चाले ।
रूप द्रष्टी धरी जुए लोचन भरी,
सकल कार्यतणे मध्य माले ॥ ६ ॥

वेद कार्य कहे रूप कारणतणो,
अवर बीजो नथी एम जोता ।
प्रोछ पोतातणी प्रीछता एणीपरे,
वस्तुरूपे थयां द्वैत खोतां ॥ ७ ॥

एज अनुभव सदा एणीपरे प्रीछसे,
ते तेणे काल तद्रुप थासे ।
दास बिहारी कहे सकल संशय दहे,
जन्मनें मर्णनो भर्म जासे ॥ ८ ॥

(५२) पद राग आरती.

आरती कीजं व्रजराज कुंवरकी ।
कृष्ण कृपाल लाल गिरधरकी ॥ १ ॥
पेली आरती पल पलमांहि ।
नटवरकी छबि विसरत नाहि ॥ २ ॥
दुसरी आरती दूर न नेरा ।
हाज हज़ूर कृष्ण प्रभु मेरा ॥ ३ ॥
तीसरी आरतीहे तदरूपा ।
आदि अंत मध कृष्ण अनुपा ॥ ४ ॥
चोथी आरती चौदिसि माहि ।
कृष्ण विना कछु खाली नाही ॥ ५ ॥
पांचमी आरती स्वर्ग पाताला ।
निसदिनं खेलतहे नंदलाला ॥ ६ ॥
जनबिहारी कहे जलथलमांही
केवल कृष्ण ओर कछु नाहि ॥ ७ ।

(५३) राग एज.

आरतो सदगुरु संतकी कीजे,
चरनकमल चितमाए धरीजे ॥ १ ॥
पेली आरती परगट पाया,
सदगुरु संतरूप हरिराया ॥ २ ॥
दुसरी आरती दीया निज ज्ञाना,
मनका सकल मिटया अभिमानां ॥४॥
तीसरी आरती तारनहारा,
दूबत कर ग्रहीलीया हमारा ॥४॥
चोथी आरती चितपरच्याया,
जन्ममर्णका संक मिटाया ॥ ५ ॥
पांचमो आरती पल क्षणमाहि,
लेत खबर कछु वेरन लाहि ॥ ६ ॥
देवा सदगुरु सुखके दाता,
राखलीया मोहे जमपुर जाता ॥ ७ ॥

सदगुरु संत परम हितकारी,
जनबिहारी कहे जाहुं बलीहारी ॥८॥

(५४) पद राग सारंग,

एकनो एकरे माहावाक्यनें विचारतां एकनो एकरे
त्वं ततनें त्यागी करो, असीनो विवेक ॥१॥
स्वपनमाहे राय थयो, रंकने स्वरुप ।
जागतां जंजालं टल्यूं तुं पोते तदरूप ॥२॥
अर्कनें आभासे भास्युं मरेचीनुं वार ।
भर्मे भास्यो तेछे मिथ्या आत्मअर्क सार ॥३॥
अणछतानें अणछती ते जाणो जक्त रीत ।
आदर्शमां एके नथी छे कलीमां कलपीत ॥४॥
एक ब्रह्म सदा सत्य अवर नही कोय ।
आदि अंत मध्य बिहारी स्वे स्वरूप सोय ॥५॥

(५५) राग समयानुसार.

में ज्यौं कात्यौं मगना,
मो बिनुमें ज्यों कात्यों मगना ।

तुरीयातीत परमपद केवल,
तत्वरूप हम तगना ॥ दोढ ॥
पंच प्रपंच नहि जिनही पद ।
काल करम नहि काया,
कनक देव देवी त्यां कहीयें ।
जीव ईस नहि माया ॥ २ ॥
वाच अवाच नहि कोइ वस्तु,
परस विना हम परसे ।
हे नहीके बिच खेल हमारा,
दरस विना हम दरसे ॥ ३ ॥
विमल विवेक अनेक एक बिनु,
करनहार बिन कीना ।
विना आप निज आपा दरसे,
बिना चीन हम चीना ॥ ४ ॥
जाननहार विना सा जान्या,
बिन पिछानसो पाया ।

नेंन बिन्या निरख्या सो निजपद ।
उर अनुभव बिन आया ॥ ५ ॥
इह अनुभव अनुभव बिनु अनुभव,
कहनहार बिनु कहना ।
मननहार बिनुताहि मनन कर,
रहनहार बिनु रहना ॥ ६ ॥
में नहि तें नहि ता बिनु ते नहि ।
एसें अकथ कहानी ।
जेसें मुक मिसरीको निज मुख,
स्वादन सके बखानी ॥ ७ ॥
लक्षालक्ष बिना अवलंबन, सान शब्द नहि कोई,
जनबिहारी ज्योंकात्यों निजपद,
स्व संवेद हम सोई ॥ ८ ॥

(५६) राग एज.

प्रातसमे सदगुरु छब सुंदर, करहु मनन मन मेरा,

ज्योंकात्यों निजरूप जथारथ, तबही प्रकासे तेरा.
दोढ ॥ १ ॥

परंधाम परब्रह्म परात्पर, अज अखंड अविनासी,
सो मूरत मेरे सतगुरुकी, पिंड ब्रह्मांड प्रकासी. २

चैतनमय जगजीव चराचर, लीलाइह रचलीने ।
लखचोरासी मनहु लोष्टमय, चंमक चैतनकीने ॥
आपही व्याप आप अपनेमहु,
आपहीको उपजावे ।
मनहूंसिंधुसोइसतगुरू जग, नाना तरंग रचावे ॥
मूरतमेक मनोहर मह्रूय, जब सतगुरूकी जाने ।
जनबिहारी तबही तिनपद महु, उलटी आप
त्यां अलपाने ॥

(५७) राग एज.

अचरज बात कहानी संतो,अचरजबात कहानी ।
अहोयाही किनआगे कहीयें, नही मानत
अज्ञानीरी ॥ दोढ ॥

विंध्यापुत सकल संसारा, कहत सुकादिक ज्ञानी
मृगत्रारीके वारधीमाही, डुबतहे बिन पानीरी ॥
जेवरी नाग डस्यो जगसारो, मुरख पंडित मानीरी
मिथ्या गुरुगारोडी मिलके, करतसो निरविष
प्रानीरी ॥ २ ॥

मिथ्या पूरुष पुनीगंद्रवपुरमें, वास कीयो ते
थानीरी
ससकासिंगको धनुष बनायो, खेलतहे मेदानीरी ३
विंध्यासुत जब रुदनकीयो तब, गगन पुष्प
दीयो आनीरी ।

खेत चनेमें हस्ती खोयो, खोजत होत हेरानीरी ।
कोकहे साचजुठ कोउकहही, द्वेविध बोलतबानोरी
जनबिहारी सारोविध समजे, माहामंगल
विज्ञानीरी ॥ ५ ॥

(५८) पद राग कडखो.

तुं तारा रुपनें जाण जुक्ते करी,
अणछतो मेल अहंकार तारुं ।
सकल मानीनता जांण तुं मनतणी,
जेहने मानीरयो हूं ने मारुं. दोढ.

तुं तारा रुपनें जाणजे एणीपरे,
देह विषे कोण हुं क्यांथी आव्यो ।
कोण आ देहतो कोण अंते हशे,
मान मिथ्या मधे क्यांथी लाव्यो ॥१॥

जे तुं आदे हतो तेज तुं छो मधे,
अवर बीजो नथी अंत जोतां ।
तत्वज्ञाने करी जाण तुं तत्वने,
आप अद्वैत छो द्वैत खोता ॥ २ ॥

नभादी पंचमां भुतनो निर्मयो,
देह जड असतदुख षट विकारी ।

आदि अंते नथी मध्यमा न्रुत छे,
तुं नहि स्थुल तज भ्रात भारी ॥ ३ ॥
प्राण मन बुधि इद्रिय सत्रहतणो,
सरीर सुक्षम ते तुं न होये ।
कारणादी वपु द्रश्य छे ताहेरा,
तुं सदा सर्वदा साक्षी सोये ॥ ४ ॥
जेमनो तेम तुं सचिद्दानंद छो,
तुं भुली तुजने केहने ध्यावे ।
माहेरा मुखमां जीभ छेके नथी,
ते पुछतां तुने लाज नावे ॥ ५ ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति विषे तुंज छो,
कालत्रय तीष्टतीति सत्य माटे ।
कालत्रय अवस्था परस्पर व्यभिचरे,
तुं न व्यभीचरे नानत्व ठाटे ॥ ६ ॥
आद ने अंत मध कालत्रय अवस्था,
तेहतणो प्रकासिक तुंज पोते ।

आपनें आप अप्रीय नहि कदाचित,
तुं चिदानंदघन केहने गोते ॥ ७ ॥
देशनें काल वली वस्तु परीछेदथी,
रहीत तुं आतमा सुखरासी ।
सदगुरु शास्त्र श्रुती आपने अनुभवे,
सुद्ध निर्द्वंद्व तुं स्वे प्रकासी ॥ ८ ॥
स्याइमा वरण नहि वरणमां स्याई छे,
मृतकापणे भाजनन भासे ।
जनविहारी कहे जाणई युक्तिसुं,
अणचव्युं आप तेतो प्रकासे ॥ ९ ॥

(५९) पद राग कडखो.

ब्रह्म जाण्या विना बापडा जीवनें,
कर्मनो भर्म केदी न जाये ।
जेम सदाकाल उलेचतां सुपडे,
अंधारूं कांई ओछो न थाये ॥ टेक ॥

सहस्त्रजुग सिक्तानें पीलतां घाणीयें,
तेलनी रेल केदी न आवे ।
अंबु विलोवतां आज जामे नहीं,
श्रम करी जन्म सारू गमावे ॥ १ ॥
अस्मपर अंबुनी धार वरसे सदा,
त्रणांकुर पुष्पवेली न जामे ।
गगनमां गुणवतो पसारे पाणनें,
सुं आवे मुष्टीमां तेज ठामे ॥ २ ॥
कुकसा कुटतां कण न हाथे चडे,
पीपासा जांजुवारे न जासे ।
गुंज फल ढेरनें आगमाने कपी,
सीत संताप ते केम नासे ॥ ३ ॥
तकृनां पानथी त्रपतीनां उपजे,
बेडी बारासनी केम तारे ।
ओशना उदकथी ओषधी न उपजे,
तेम ते कर्म सुं कारज सारे ॥ ४ ॥

जोग जगदान तप तीर्थवृत बहू करे,
कासी करवत लीये पिंड पछाडे ।
कर्म नें धर्म सहकाम बहू आचरे,
भ्राति छुटे नही भेद पाडे ॥ ५ ॥
वरणाश्रम नेह काम तपसा वडे,
भक्ति अनन्य ईश्वर आराधे ।
रिदे अघओघ ते तूल सम परजले,
प्रेम परिपूरणता प्रगट वाधे ॥ ६ ॥
विवेक वैराग षट संपति मुमुक्षुता,
षट विधी श्रवणनें मनन करवुं ।
निदध्यासन साक्षात पोतें सदा,
षटविधी समाधी ध्यान धरवुं ॥ ७ ॥
कृपा सतगुरूवडे ब्रह्मपद जाणीये,
करमनुं भरम ते नास पामे ।
जनबिहारी सोयं प्रगट परमातमा,
विघन शंशृत्यनुं सर्व वामे ॥ ८ ॥

(६०) पद राग एज.

सदगुरुसिष्यप्रति श्रुतीनी सांख दई,
वेदवेदांतनां वचन भाखे ।
सत् सोयं ज्ञानमय अनंत ब्रह्म आत्मा,
तेज त्रयकाल तुं रिदय राखे. दोढ,
प्रगट परमात्मा पिंडमां प्रिछवुं,
जड एह देह तेहनो प्रकासी ।
भूत पंचप्राण मन विषेथी वेगलो,
अनवय सर्वमां रह्यो वासी ॥ १ ॥
विष्टी समष्टि तत्वं नहि तुज विषे,
देशनें काल वस्तु न होये ।
सजाति विजाति स्वगत नहि संभवे,
भेद परिछेद त्रय त्यां न कोये ॥ २ ॥
चार कलेवर थकी पार परमातमा,
अवस्था चारथी दूर वरते ।

चतुष्टयस्थल थकी दुर आघेरडो,
अनुभवे गम्य विचार करते ॥ ३ ॥
वरणाश्रम अभिमान नहि जेहनें,
नातनें जातमां ते न आवे ।
षटदरशनतणां खेलथी वेगलो,
अणच्यव्यु आप अद्वैत कावे ॥ ४ ॥
आदि मध्यांत परिब्रह्म पूरण सदा,
उतपति स्थिति नें प्रलय पारे ।
त्रिगुणातीत अक्षर क्षरपर सदा,
सर्वदा स्वत्र्लभ गुरुगम विचारे ॥ ५ ॥
कनिष्टाधिकारी कर्म अर्पन करे,
मध्यमा ते करे अनन्य भक्ति ।
उतमाश्रवननें मनन निदध्यास धर,
स्वयं साक्षातकर अन्मठ्यरक्ति ॥ ६ ॥
मुक्त अनुभवे परिब्रह्म पोतें हवो,
वेद महावाक्यनो भेद पामी ।

जनविहारी कहे वंद नित तेहनें,
सिष्य सोयंरुप जाणी नमामी ॥ ७ ॥

(६१) पद राग गरबी.

सतगुरु करुणांरे कीधी, अनुभव बुध दया करी दीधी
संशय सगलुंरे टलीयुं, आतमज्ञाने आ मन गलीयुं,
साधन चारेरे पामी, करुणां कीधी अंतरजामी ।
श्रवण मनन चितरे कीधुं, निदध्यासे मारु मन रीधुं
साक्षातकारेरे पोते, पूरण वस्तु एक उद्योते ।
त्वंपद तत्पदरे त्यागी, केवल असिपदमां अनुरागी.
जीवन इश्वररे भासे, अनंत ब्रह्मांडे आप प्रकासे।
सोहं हंसोरे होई, भिन्न न भासे क्यारें कोई ॥
आनंद उपनुरे अंगे, साचा सतगुरुजोने संगे ।
भवदुख सगलुंरे वाम्यु, क्षेम धाम पूरण पद पाम्यु.
अमृतसागरेरे नाई, सतगुरु चरणकमल लपटाई,
नित्यप्रत करीयेरें सेवा, कहे जन बिहारी जय
गुरुदेवा ॥ ६ ॥

(६२) राग एज

व्यास वखाणेरे हो तेने,
आतमज्ञान यथारथ जेने ॥ १ ॥
हरिबिन अन्यनरे हो भासे,
सर्व अक्षर सोइ प्रकासे ॥ २ ॥
कुंडल कनक नरे वेरो,
एवो उपनो अनुभव घेरो ॥ ३ ॥
मृतीका भाजनरे एके,
तंतु वस्त्र एक विवेके ॥ ४ ॥
वारी वीचीरे जाणे,
तरणी कीरणी एक प्रमाणे ॥ ५ ॥
थंभ पुतलीकारे देखे,
अग्नि उष्णता एक विसेषे ॥ ६ ॥
खांड खीलोनारे जोते,
वायु वंटोल एक ब्रह्म खोते ॥ ७ ॥

लोह हथीयारेरे निरखे,
पूरण ब्रह्म परसपर परखे ॥ ८ ॥
अन्वय वितरेकरे होई,
तेनो साक्षी हुं छुं सोई ॥ ९ ॥
एक अखंडीतरे आपे,
जनमन मरणन पुन्यन पापे ॥१०॥
अनुभव आंखेरे जोते,
सदचिद आनंदमां चित प्रोते ॥११॥
जन बिहारीकेरे जाणो,
घट घट प्रगट रुप प्रमाणो ॥ १२ ॥

(६३) पद राग आसावरी.

सुं करवाने आव्यो संसारीयामां,
सीया रामजीको नाम रिदे न धर्योरे. दोढ.१
जाके चरन शरन सुख उपजे,
ताको सुमरन क्यों न कर्योरे ॥२॥

जाको अंक संक नही मनमें,
बोलत हे अभीमान भर्योरे ॥३॥
रात दिवस रडवडतोनें भमतो,
देव द्वारे डग न भर्योरे ॥४॥
खासो मार न पार उतरसो,
जाको दिल दुबधासे भर्योरे ॥५॥
कहे बिहारी जिन प्रभुको न भजीया,
वाको कारज कोइ न सर्योरे ॥६॥

अथश्रीदानलीला प्रारंभ.

सरस्वती सारदाराणी, आलो मुख अमृतवाणी
कर जोडी कीरत मागु, पाए गणपतिने लागुं.१
प्रभु परिब्रह्मन्य देवा, अकल अखंड अभेवा ।
नेति नेति वेद गावे, ब्रह्मादिक पार न पावे. २
तेणे अवतार धरी, लीला व्रजमांहे करी ।
जेणे मामा कंसने मार्यो, भुमीनो भार उतार्यो३

तेनी गाउं दाणलीला, करी जेणे व्रजमां क्रीला
प्रभुजी प्रात समे, नित उठीनें जमें ॥ ४ ॥
यसोदाजी एवुं जाणी, बोल्या हीये हेतआणी ।
उठो मारा लाडका लाला,वारी वारो जाउं वाला
जागो वारी जाउं तमारी, मीठडा लउं मुरारी,
जागो लालजी लटकाला, मनोहर मोरलीवाला
उठो मिठा दातण दउं, वालाजोनां वारणा लउं,
जागो प्रभु प्रात भयो, रजनीको तिमर गयो ७
पक्षी वनमांहे बोले, दाले दाले भमरा डोले ।
जुवो गायु गोठीया लाव्या,तमने तेडवा आव्या.
वाला तारा नामने वारो, अडावो धेनुं सवारी ।
गायूं घरे बाधीयुं काना, पुकारे वाछरू नाना ॥
दउं दही दूध ज जागो. आलुं जे मुखथी मागो ।
ज्यारें रही रजनी थोडी, उठ्या त्यारे आलस मोडी
यशोदाजी लीधा तेडी, भावे हृदयामां भेडी ।
दीधा दातणनें जारी, मुखडा धोत मुरारी॥११॥

कोडे अस्नान कराव्या, आभुषण अंग धराव्या।
पीताम्बर शोभता पेरी, नीला पीला सावसोनेरी
वली विधविधनां वागा, पीताम्बर पेरवा लागा।
सोभे शिर पाघडी चंगी, लटके मांये कलंगी ॥
तेमां जड्या नंगज मोती,जेनी माहे जलके जोती।
तिलक विसाल कर्यो, माथे रूडो मुगट धर्यो ॥
कानमां कुंडल डोले, गणां पाये गुगरा बोले।
बाजुबंध बेरखा बांयें, मणी नंग जडेया मायें ॥
हाथे कडा हेमना हसेरे, वींटी आंगलियें दसे।
रूडो बाजोठ रुपानो, मणी नंग जडेयो नानो ॥
दीधो बाजोठनें ढाली, माथे मेली हेमनी थाली।
माताजी मावने पीसे, भावे भोजन बत्रीसे।
यसोदाजी जमण लाव्या,राधाजीनां श्याम सिराव्या
प्रभु लीयो पान सोपारी,मेलो मुखमाहे मुरारी।
सवारो स्याम सिरावी, धुतारे धेंन अडावीं ॥
गायुं लइ गोपीयुं आवे, भावें करी धेंन भलावे ॥

वालाजीनें वांसली हाथे, गणां गोवालीया साथे
बलभद्र सोभता संगे, चाल्या वन रमता रंगे ।।
वालो वन चालता भाली, गोपीमही वेचवाचाली,
मली त्यारे सरवे सखी, घणुं मन माहे हरखी
साळू अंग सोभता पहेरी, मयारी गोकल केरी ।
पहेरी पाये कडला कांबी, वेणी शिर ललके लांबी
तेमा नंग फूल संवारी, गुंथ्या कोइ भातना भारी ।
सेंथा सिंधोरसो भरी, ललाटें बिंदका करी ।।
वाले मारे दुरथी हेरीरे, मैयारी गोकलकेरी ।
उभी रहो व्रजनी नारीरे, मैडा माथे दाणछेभारी
कोण तुं लुंटवा वारोरे, आवो केम थयो अटारो
कानुडा करम मोडोरे, हैडानां हारसुं तोडोरे २५
मनोहर मै मढोरोरे, ठगारा ठामसुं फोडोरे ।
चत्रभुज चुनडी ताणीरे, मटुकी भोंय पछाणी
जोजो तमे पार छैयानारे, तोडे नित हार हैयाना
कानुडे कंचवो फाडयोरे, पोतानो मन रमाडयो

तेंतो लीधी लाज अमारीरे,सांजे सर्वे वातछे तारी
सांजे हरी आवजो वेलारे, भंगावुं हुं पासरा पेला
चालो सखी रावनें जइयेंरे, यशोदा माने कैयें ।
सर्वे सखी रावने चालीरे,मली पांचसात साहेली
आंगणीयें निंदनें उभीरे, गोपी सर्वे वात विलोधी
माताजी काननें वारो, न मेले केडो अमारो३०
दाडे दाडे केटलो कैयेंरे, अमें नही गाममां रहीयें
गामना गोवालीया तमेरे, मैयारा कंसनां अमें.
अमें जाइ कंसनें केसुरे, लुटावी आगडीयें लेसुं
तेने माटे वारजो तमेरे, हवे नही सांखीयें अमें
यसोदानो कानजी रूडोरे राधाजीनें अमर चुडो
साजे हरि आवजो वेलारे, रमाडुंहुं रासमां पेला
निरंतर व्रजनी नारीरे, वाला जुवे वाट तमारी ।
गोपीवरछो गणनामीरे,वालो विहारीदासनास्वामीरे

इतिश्री महात्मा बावाश्री बिहारीसाहेब कृत दानलीला,
भजन, पद आदि काव्य संपूर्णम् ॥

॥ अथ सद्गुरुस्वामीश्री क्षेमसागरके पदप्रारंभ. ॥

(१.) पद राग आशावरी.

सद्गुरु संत हरि एक जाणी,
मन कर्म वचने मलीयेंरे ।
तन मन धन आपोयुं अरपी,
ब्रह्मसागरमां भलीयेंरे. टेक.
देह देहनां कृत जे सगला,
व्योम कुसुमनां जेवारे ।

विधि निषेद्ध वरणाश्रम आदी,
ए आतममां एवारे ॥ २ ॥
सर्वस ए ए अरपण एने,
ए अनुभव उर आणोरे ।
अव्यय अजन्मा अंतरजामी,
पार परांत प्रमाणोरे ॥ ३ ॥
चर अचर चैतनमय सरवे,
चार खाण चोरासीरे ।
सर्वांगे स्वेस्वामी मारो,
करे विलास विलासीरे ॥ ४ ॥
सूत्रमणी जेम सर्व सूत्र छे,
जलतरंग जलजाणीरे ।
साकरनुं श्रीफल ते साकर,
जे पांरी ते पाणीरे ॥ ५ ॥
ज्यां जेवो त्यां तेवो तेस्वे,
निरखे निज आणंदेरे ।

गुरु बिहारी पदरज प्रतापनें,
क्षेमदास नीत वंदेरे ॥ ५ ॥

(२) राग एज.

गुरू ज्ञानोनें गोविंद जाणी,
सुध भावे सेवीजेरे ।
माहावाक्यनुं मनन करीने,
लक्ष यथारथ लीजेरे दोढ. ॥ १ ॥

अल्प सर्वनुं मान उछेदी,
द्रढ विचार चित धरीयेंरे ।
ईस जीव उपाधी तजीनें,
कैवल्यमां स्थित करीयेरे ॥ २ ॥

मन अहंकार बुधीदस इद्रिय,
जे जड चैतन करतारे ।
साक्षीरूप सर्वनो स्वामी,
आप अद्वैत अकरतारे ॥ ३ ॥

सरीर स्थुल माहाकारण सुधी,
लींग चारनो लेखोरे ।
ससक श्रंग विंध्या सुत सरखा,
परम धाममां पेखोरे ॥ ४ ॥
जेमनं तेम यथारथ प्रगटयुं,
खोळणहारो खोतेरे ।
वाच अवाच थकी जे अळगो,
ते परमातम पोतेरे ॥ ५ ॥
द्वैताद्वैत विकार न जेहने,
आप विनानो आपेरे ।
खेमदास मिश्चे निजपदमय,
गुरूपदरज प्रतापेरे ॥ ६ ॥

(३) राग चूरण.

जाननहार पिछान्या जानी,
मान्या वें जान्या. दोह.

जो कछु जान सो सकल जानकी,
ए अति स्वे उर आन्या ॥ १ ॥
व्यापक आप अमाप अखंडीत,
प्रगट प्रमान प्रमान्या ॥ २ ॥
इह जड देह इंद्रिय चैतन्य करी,
लोहचुंबक नीरतान्या ॥ ३ ॥
श्रुति संमृती गीता उपनिषद ।
वचनातीत वखान्या ॥ ४ ॥
गुरु बिहारी पदरज उर धरकर,
क्षेमदास भय भान्या ॥ ५ ॥

(४) राग एज.

बेरबेर बलेहारी गुरुपर वारीवे वारी. टेक.
देखी दीन मलीन दुखीत अति,
बिपति सकल विदारी ॥ २ ॥
करी आतम उपदेश कृपानिध,
जक्त भ्राती सद जारी ॥ ३ ॥

सानुकुल सदगुरु भये मेरे,
संस्रत सकल निवारो ॥ ४ ॥
प्रगट पोत होई भवजलधिको,
तुरत लीयो मोही तारी ॥ ५ ॥
खाना जात क्षेम हर्षीत चित,
वंदे चरन बिहारी ॥ ६ ॥

(५) ॥ पद राग धोळ. ॥

भूली निरगुन ब्रह्मनें सगुण थयो,
धरि विधविध केरा वेस वस्तु विलसी रयो,
चोलो पेर्यो ते तत्त्व चोवीसनो,
ते पण वस्तु विन्या नही लेस ॥ १ ॥
क्या कृपणका हीर काळो कुबडो,
संमृथ सूर क्यां रूप वीलास ।
क्यांक दीन दूखीत अति दूर बलो,
क्यांक दाता परम दयाल ॥ २ ॥

नट भेष ते धरे बहु भातना,
नटभेष ते भीन न होय ।
वाघा वस्त्र ते विविध प्रकारना,
पट तंतु विना नही कोये ॥ ३ ॥
वृक्ष मिसरीनुं ते मिसरी महिं,
साखा मुल फुलफल पान ।
रसमय रसरूप रमत रमे,
निरखे निज स्वेरुप निदान ॥ ४ ॥
दया परम करी क्षेमदासनें,
मिल्या गुरू बिहारी ब्रह्मरुप ।
तेणे समसा करी स्व संवेदनी,
ततकाल थया तदरुप ॥ ५ ॥



अथ ब्रह्मनिष्टमहाराजश्री ईश्वररामजीके अनुभवी

पद भजन प्रारंभ.

(१) पद राग एज.

पाम्यो पाम्यो उतम अवतार, भजन कर भावेरे
तारे करवुं एज उपाय, जेणे भव नावेरे. टेक.१
तारे मुखथी केवुं राम, रेवुं निसकामेरे ।
सुं वलगी रयो वाला, काला हाड चामेरे ॥२॥
तुं तो लालच मकर लगार, काया माया काचीरे
सुं मानी बेठो मुरख, सोणानी वात साचीरे ३
तुंतो सोंढमवरवोंणी जान, मान क्युं मारूरे ।
तें जे मानी लीधा मनमायें, तेमा नथी तारूरे ४

एवी करजे काने सार, सीखामण मारीरे ।
एम केछे ईसरदास, जोनें विचारीरे ५

(२) राग एज.

आव्यो आव्यो उतम अवतार, अचानक तारेरे ।
तेमां भावें करी भगवान, भजीलें सारेरे ।
दोढ ॥ १ ॥
तुं तां थामा सकटनो स्वान, नही हाथ तारेरे ।
सूं भार उपाडे भूर, लागी खोटे लारेरे ॥ २ ॥
आगल नथीरे पोपांनो राज, काज कर तारूरे ।
तुंतां भातुं कर भरपूर, मेली हूं मारूरे ॥ ३ ॥
तुंतां खरचीलेने खूब, दीधुं छे दयालेरे ।
जाणे अरकतणा ते तूल, उडी जासे कालेरे ॥४॥
सूं रातो रंग पतंग, दीवस चार चटकरे ।
कहे ईसर मेल आजार, मेली माथे मटकरे॥५॥

(३) राग एज.

तुंतां आलस मकर अजाण, करीले कमाईरे ।

पाम्यो उतम आ नर देह, भजनकर भाईरे ।

दोढ ॥ १ ॥

तारी पलपल जाये छे पूर, आयु अभागीरे ।

माटे आंख उघाडी आधार, जोने जागीरे ॥२॥

तारे माथे भमे छे भूर, दूर म जाणेरे ।

एवो काल कराल करूर, चेतीले टाणेरे ॥३॥

माटे करजे साचो सनेह, सदगुरू साथेरे ।

तारे तुरत तर्यानो उपाये, रच्यों छे नाथेरे ॥४॥

एवुं जडपी लेजे जरूर, उपदेश आप्योरे ।

एम मानी इसरदास, भय भय काप्योरे ॥५॥

(४) राग एज.

मारे माथे करजो मेर, सदगुरू स्वामीरे ।

जाणी निजजन मन वच काय, अंतरजामीरे ।

दोढ ॥ १ ॥

गुरूजी धरूरे अंतरमाये, ध्यान तमारूरे ।

मानी महासुखरूप सदाये, वचन उर धारूरे २

देजो चरनकमलनी सेव, देव दयालुरे ।
तमें नेह निभावो नाथ, परम कृपालुरे ॥ ३ ॥
गुरूजीरे जो सदा अंगसंग, अभंगप्रीत पालोरे ।
तमने देखुं जलथलमायें, भरमभीत टालोरे॥४॥
मारी वेली करजो वार, सरण सुखकारीरे ।
एम किंकर ईसरदास कहे छे पुकारीरे ॥ ५ ॥

(५) पद राग लावनी.

गुरू देवा पदवंदन करहू,
धरहू ध्यान मन वच काये ।
मंगल भवन अमंगलहारी,
सुखकारी मम होउ सहाये दोढ ॥ १ ॥
पदतल मृदुल अरूण अंबुज इव,
मधुकरवत मन होउ मेरा ।
मोक्षसुगंध लहो निसिवासर,
चेतचतुर चित होऊ चेरा ॥ २ ॥
राजत रेख रूचीर पदपंकज,

कुली स कमल अंकुसआदी ।
चितवत चार पदारथ प्रापतें,
रिधीप्रद सिधिप्रद अणिमादी ॥ ३ ॥
पृष्ठिस्थाम रसताम दाम इव,
मनहु मदन मन आकरषे ।
पदजज्योति जनमन मलहारी,
द्युतिकारी दिनकर करसें ॥ ४ ॥
असरन सरन हरन भयभारी,
भववारी तारक पोतं ।
तन मन धन कुलबान प्रानकर,
ईश्वर अनुभव नित्यनौतं ॥ ५ ॥

(६) राग एज.

सुनहुं अरज आरत हरना गुरु,
शरन सुखद साहेब देवा ।
देहु दया करी यह वरदान!,
अनुभव पदपंकज सेवा ॥ १ ॥

सतमत रतगत आन प्रवृत चित,
नित्यप्रत थीत वृत तव पदमें ।
सुठिवर सुखद समन संश्रतश्रम,
असत व गुनगाउं गदगदमें ॥ २ ॥
जलथल सकल भुवन भरपूरी,
तव भीन नहि भासत आना ।
ज्ञान विज्ञान समान भान भव,
भ्राति शांति बिनु श्रम नाना ॥ ३ ॥
कोह मोह मद द्रोह कुटील खल,
मलरासी नासी जावे ।
विवेक वैराग शांति सुची समता,
ममता मद सद अलपावे ॥ ४ ॥
किये उधार अवतार धारकर,
अपार ईश्वरसम अधमं ।
मन वच काय उपाय आन तज,
भज सदगुरु पद सुख सददमं ॥ ५ ॥

० (७) राग एज. ✓

श्रीगुरुदेव सेव मन वच तन,
अन्य साधन त्याग न करके ।
जुगल कमलपद विमल धवल द्रढ,
चितवत गत नित प्रत धरके ॥ १ ॥
मृदू मंजुल अंजन गुरु पदरज,
आंजत सुजत अविनासी ।
कीये तिलक गुणगण वसकरणी,
हरणी सकल कलीमल रासी ॥ २ ॥
द्रसत द्रगनि करी हरि परी पूरन,
उरण बुधि सद अलपावे ।
प्रबल कुटील खल काल कठिन मन,
विकट निकट तब नव आवे ॥ ३ ॥
जप तप वृत सतसाधन अगणीत,
सबकर फलकल खलु पावे ।
गुरुपद पद्म पराग रागकर,
शिरधर उरवर परसावे ॥ ४ ॥

बिनु श्रम गोपद ईव भव तरही,
नर करही गुरूकर ध्याना ।
कहे इश्वर संशय मत करहू,
गुरुदेवा कर एह बाना ॥ ५ ॥

(८) राग एज.

सदचिद आनंद सुखसदनं गुरु,
मदनादी मद सदकदनं ।
वदन मनोजल जावन निरखत,
हरखत हिय जनघन नदन ॥ १ ॥
असजन धन्य धन्य सेवन अनुछिन,
पुन पुन मन तनकर करही ।
निधन सकल दुख निमीष एकमहु,
पुनरपी खलु भव नव परही ॥ २ ॥
सनमुख देव सकल सुखसंपति,
रिधि सिधि श्रम बिनु सब आवे ।
अपर अमित जगसाधन करफल,
कलगुरु सेवत सदपावे ॥ ३ ॥

सुधबुध मुक्तस्वभाव सनातन,
अमल अजर अज अविनासी ।
अव्यक्त अचिंत्य अनामय अव्यय,
धनदेवगुरू घटघट वासी ॥ ४ ॥
श्रुतिकर सार सिखावन सुनमन,
अनरत मतकर मितमेरा ।
कहे ईश्वर निरभय नितव्रत तुं,
गुरूदेवा पदकर देरा ॥ ५ ॥

(९) राग एज.

रामचरन गत कर रतरे,
मन रामचरन गत कर रतरे ।
विसद विमलकल सार सीखावन,
सादरसुनीमानहूसतरे दोढ ॥ १ ॥
जो पद पद्म मनोज अरीउर,
राजत पंकज रिव सुखदं ।
जिहपदरज परसत मुनीपत्नि,
गतिपाई तजी तनुदुखदं ॥ २ ॥

मुनीजनधन जीवन संतनकर,
प्रानानिर्धाय जानी सीयरे ।
प्रेमपलोटत लावत उरमहुं,
शांतिकरति तापन तीयरे ॥ ३ ॥
धरम धुरंधर भरतभाव करी,
स्वारथ तज सेवन कीयरे ।
कीनसुहावन पावन कानन,
विचरन करवर अवनीयरे ॥ ४ ॥
अगनितसत साधन गनमनरे,
सबकर फल पावही स्दरे ।
अनुदिन ईश्वर तज आलस भज,
सुखदराम पंकज पदरे ॥ ५ ॥

(१०) राग एज.

नरतन कर फल यह कलरे,
मन नरतन कर फल यह कलरे ।

तजहूं आनछल भजहू रामपद,
मान सिखावन यह भलरे दोह ॥ १ ॥
पदरज परसत उरल अधमतनु,
मुनीपतनि गती सदपाई ।
दंडककानन पावनकारी,
वंदत विधी भव सुरसाई ॥ २ ॥
छुवतचरनदुदभीकरअस्थी,
उडिगएश्रम बिनु त्रण न्याई ।
नखनिगरत सुर वंदत सुरभरी,
अघनासन जनसमुदाई ॥ ३ ॥
जिहपद धाइ मुगतकीये मरीचीहि,
सुरचिसरिर पाइ सदरे ।
गयो निजधाम निकर मुनी वंछित,
जयजयजय सुरनर वदरे ॥ ४ ॥
जोपद पद्मप्रछालन कर नर,
ढीमर कुल पावन कीनो ।

इश्वर अवराधन कर जुगपद,
सद तव ताप निधनतीनो ॥ ५ ॥

(११) राग एज.

कसन रामगुनगाउं मनरे,
कसन राम गुनगाउं ।
पाइमनु जतन व्याप विषयरस,
कसलेहू असलाउ दोढ ॥ १ ॥
रविकर वारिरिव भवसुख सब,
रंच करत मतकर चितरे ।
जिमिघन छाया नटकर माया,
ज्यों स्वपने कर सुत वितरे ॥ २ ॥
असजीय जानी भज घनुपानी,
सुखखानी अघकर हानी ।
सारद सेष महेष मुनीजन,
अनघन रटत अमीत ज्ञानी ॥ ३ ॥
आइ अचानक काक तालीवत,

बन्यो जोग जबहि तेरेहि ।
तब सब काज करीलेसजग होइ,
कहतहों वरवच टेरे ॥ ४ ॥
ईश्वरदास कहत नर तनकर,
यही लाभहि अन नाही ।
रघुकुल कमल दिवाकर रटहूं,
कटहूं काल क्रम कठिनाही ॥ ५ ॥

(१२) राग एज.

रूचीने राम पदमाहि जाकी,
रूचिने राम पदमाहि ।
असखल मल आलय अति मुरख,
भार अवनितल ताहि. टोह. ॥ १ ॥
अधम सिरोमणी फणी बिनुमणी इव,
विहरत जगत विहालु ।
विवसकाल बिनुकाल हाल अस,
कोकरहिंसक प्रतिपालु ॥ २ ॥

निरखत नाक संकोरत नरकहि,
 वरषहि विपुल अंगारा ।
कुटिलकीट तनुधरि करि परही,
 रोदत करत पुकारा ॥ ३ ॥
जनमत मरत धरत तन अगनित,
 फिरत चोरासी मांह ।
जलचर थलचर नभचर नाना,
 करिखल अधम कमाहि ॥ ४ ॥
बिनुहरि भजन सजन संगत बिनु,
 भवश्रम कबहूके जाहि ।
ईश्वरदास कहत सठहठ तज,
 भजहु राम सुखदाई ॥ ५ ॥

६ (१३) राग एज.

श्रीगुरू क्षेमचरन जुग चितवन,
 अनुदिन मन करहू मेरा ।
होये मनोरथ सिध सबविध तव,
 पुनरपी खलु भव नथ फेरा. दोढ. ॥१॥

अतिपद तलकल कोमल कमलेव,
विमल वलभ अतिसय मेरे ।
ध्यान धरत चुमत चित सुखकर,
निरखत द्रग निरहो नेरे ॥ २ ॥
पदज पद्मली जलकत रविकर इव,
जिह उर मुकर परहि जाहि ।
अहं मम तिमर हरत तिह आसु,
पांसु अमित तीरथ न्याई ॥ ३ ॥
पृष्टी स्याम सुखधाम कामप्रद,
सजल जलद इव सुखदाई ।
परसत शिरसद अनेक जनम अघ,
बिन सतवारन कछु लाई ॥ ४ ॥
इह उपदेश यथारथ सुनहुं,
अनरत मत करहु चितरे ।
ईश्वरदास निचोरकयो इह,
निगमसार मानहु सतरे । ॥ ५ ॥

(१४) राग ध्रुज.

करहु कृपा अब एसी श्रीगुरु,
करहू कृपा अब एसीरी ।
तव पदपंकज प्रीति बढे नित,
चंद चकोरहि जेसीरी. दोढ. ॥ १ ॥
गान करहु तुमरे गुन स्वामी,
ध्यान तुमारो उर धरहूं ।
नाम तुमारा लेहु निरंतर,
नेंन करी निरखन करहू ॥ २ ॥
पावन करि परिकरमा करहू,
हाथ न पांव पलोटोंरी ।
सीस धरी पद त्राण तेहारे,
यों भव भय सद मेटोंरी ॥ ३ ॥
मनसंकल्प करहि नित तुमरो,
बुधि निश्चय तुमरो करही ।
चित चितवन नितकरहि तुमारो,
अहंपन अहं सेवक धरही ॥ ४ ॥

इह सेवा मम सुफल जीवन हित,
देहु दयाकर गुरूस्वामी ।
ईश्वरदास कहत करजोरी,
वारवार पद शिरनामी ॥ ५ ॥

(१५) वधामणानी काफी, कच्छी.

जान भजीयजा आया, जेडयुं मूंजे जान भजी
अजा आया दोंढ ॥ १ ॥
प्रीयलगन था परदेई प्यारा, मेरम मनभाया २
नेणें करी हरिरूप नेयारीयां, छाकवडीअ छाया ३
कुकरम कोटीजनमजा जेडयुं, पलमें परलाया ४
मेर नजरकरि नाथ निवाजो, ईश्वर शिरनाया ५

(१६) राग एज.

निरखी ठरेआ नेंण साजनसंत निरखी ठरेआ
नेंण दोढ ॥ १ ॥
अखड्यनमिंजओतारा उनके, डीयां मलभावेभेण
विईत्रालंभहांणे गुजज्यु नीगाल्यु सुणाइधा-
मुजासेंण ॥ १ ॥

कींयनीछडोआंहांणे छेडो तिनजो, मेरम महा
सुखदेंण ॥ ४ ॥

ईश्वरजीवन मुहिजो जगमें, संतचरणजी रेंण ५

(१७) राग एज.

साजनसंतआया, जेडयुं मूंघर साजण संत
आया दोढ ॥ १ ॥

जाकर दरशन देवन दुरलभ, चाहत रघुराया
धन धन भाग्य भवन धन मेरो, जीवन फलपाया
अघनासन दरसन जिह देहकर, श्रुति अस-
यश गाया ॥ ४ ॥

देहु सुजनजन इह वरदानु, रहो मम उर छाया
तन मन धन अरपन कर ईश्वर, चरनन शिर
नाया ॥ ६ ॥

(१८) राग एज.

आज भवन मेरो जीवनधन,
आज भवन मेरो दोढ. ॥ १ ॥

दीयो दर्शन हरिजन करूणांकर,
मिटी गयो भव फेरो ॥ २ ॥
पुन्य भाजन जन पंकतिमाहि,
कीयो मोये अति मेरो ॥ ३ ॥
खलु खलकाल करम माया कर,
अब नहि होउं चेरो ॥ ४ ॥
निरभय नाथ निवाज दीयो मोये,
संतचरन डेरो ॥ ५ ॥
ईश्वर सरन पर्यो अब सजन,
मेर नजर हेरो ॥ ६ ॥

० (१९) पद राग काफी.

पूरव प्रीत पारी गुरूजी मेरे,
पूरव प्रीत पारी दोढ ॥ १ ॥
दीन जाणीनें दया मन आणी,
शिरपर कर धारी ॥ २ ॥
जनम मृत्यु जल करी परिपूरण,
भव अर्णव भारी ॥ ३ ॥

निजपद नाव चढाई मोकों,
तुरत लीया तारी ॥ ४ ॥
श्रीगुरू क्षेम चरनरज उपर,
ईसर बलेहारी ॥ ५ ॥

० (२०) राग एज.

मेर करी मोपें, गुरूजी मेरे
मेर करी मोपें दोढ. ॥ १ ॥
काल करम नहि भय मायाको,
कहत हों पद रोपे ॥ २ ॥
जगत जंजाल विकट बिन श्रमही,
जारी दीया जोपे ॥ ३ ॥
दीया उडाई अज्ञान सकारय,
तत्वमसि तोपें ॥ ४ ॥
नहि अरूणी ईश्वर गुरू देवपें,
कोटीक शिर सोंपे ॥ ५ ॥

(२१) राग एज.

मेर करी मनमें, गुरूजी मेरे
मेर करी मनमें दोढ. ॥ १ ॥
सदचिद आनंदकंद अनोपम,
दरसायो तनमें ॥ २ ॥
त्रय विध ताप संताप सकल श्रम,
खोइ दीया क्षिनमें ॥ ३ ॥
सब घट अनुगत एक अखंडमें,
जल थल वन घनमें ॥ ४ ॥
कहे ईश्वर गुरू देव प्रासादतें,
कृत कृत्य धन धनमें ॥ ५ ॥

(२२) राग एज.

करवर गुरूकर ध्यान, मनरे तुं
करवर गुरूकर ध्यान दोढ. ॥ १ ॥
अरचन वंदन सेवन सुमरन,
अरपन आतम ठान ॥ २ ॥

गुरु मम जीवन प्रान आधारा,
गुरुबिन गति नहि आन ॥ ३ ॥
नखसिष मानहूं मूरति गुरूकी,
ब्रह्म कैवल भगवान ॥ ४ ॥
मान सीखामण सार सुखद यह,
तो ईश्वर कुलवान ॥ ५ ॥

(२३) राग एज, कच्छीभाषा.

छो गोली वझीं बार, वालंभरे तुं
छो गोलीं वझी बार दोढ. ॥ १ ॥
जा नभ तुहिजे जिंधमें वसेथो,
मे नणलेंसे खणी न्यार ॥ २ ॥
प्रीतम छो परदेश वझींथो,
दिलमें करतुं दीदार ॥ ३ ॥
तोमें मोमें सभमें साहेब,
विलसी रयो वणकार ॥ ४ ॥

घमघममें धुन धिलभर केरी,
इश्वर करतुं विचार ॥ ५ ॥

(२४) पद राग प्रजनी थाली.

तमे आरोगो अविनास सनातन स्वामीरे,
तमें व्यापक विस्वाधार अंतरजामीरे टेक. ॥१॥
वाला सादर लेजो संभाल आतुर आवोरे,
प्रीतुं भावतणां भोजन प्रेमे करी पावोरे ॥२॥
जेम आव्या वनडामाये पंचालीनें पासेरे,
वाला विलंबन कीधो कांई संभाल्या दासेरे॥३॥
वाला एम आवोनें आधार जिमाडुं जुगतेंरे,
तमनें अरप्या तन मन धन, विविध रस विगतेरे४
वाला छपन भोग छतीस विंजन विध विधनारे,
तमें भावतणा भगवान आरोगो अधुनारे ॥५॥
वाला सरव भावे छो सदाये स्वामी अमारारे,
अमें कालागेला करतार तोये ते तमारारे ॥६॥

वांले मेर करी मनमायें निजजन जाणीरे,
वाले प्रेम कर्या परसाद पीधा टाढा पाणीरे ॥७॥
वाला करता रेजो मेर अरजी अमारीरे,
एम कहे छे ईश्वरदास अबला तमारीरे ॥८॥

(२५) राग भज.

समज मनश्री गुरूदेव सेवोरे, लाभते जनम धर्यानो लेवो।
मान सीखामण मेरम मारा, मान मुकी देवोरे दोढ॥ १ ॥
मानो मूरत सतगुरु साहेबनी, परिब्रह्म छे पोते।
आंखुं वोंणां जांधला ते, अलगा रया गोते ॥२॥
एक वस्तु बे नाम धराव्या, कर हाथनी गोडें।
प्रत्यक्ष मुकी पामरा, पछी परोक्ष रया दोडे ३
गौब्राह्मण प्रतिपालक गोविंद नहि गुरुनो जोडे
जीवतुं मुकी जनावरां पछे खोखा रेया खाडे ॥

हाथें करी तमें हाड मथाओ मानी लेजो मनमा ।
कहे छे ईश्वर एवुं निश्चे निरखो गोविंद गुरु तनमां.

(२६) पद राग तोडी.

छोडदे गुमाना स्याना भजो भगवानारे,
छोडदे गूमाना. टेक. ॥ १ ॥
काल काहे खाना ज्याना,
राजाराना सुलताना, माटीमें मिलजानारे ।
नही थिरथाना आगे करना पयाना,
मानीले मस्तानारे ॥ ३ ॥
जारीदे जलपाना नाना,
कर काना गुरुज्ञाना, समज सेतानारे ॥४॥
वन्या हे अब टाना, ईश्वर मत हो अयाना,
धरीले हरि ध्यानारे ॥ ५ ॥

(२७) राग एज.

करना क्या मेरा मेरा, तिलभर नही तेरारे,
करना क्या मेरा. टेक. ॥ १ ॥

कालका हे हेराफेरा, नेनुं आगे नेरा नेरा,
सुमर सवेरारे ॥ २ ॥
कयो तोइं वेसकेरा, चेत चित चेराचेरा,
दुर हे तेरा डेरारे ॥ ३ ॥
उतम अवतारा तामें करिले साहेब प्यारा,
होवेगा निवेरारे ॥ ४ ॥
अपारा संसारा प्यारा, तरते न लागे वारा,
फिरि नावे फेरारे ॥ ५ ॥
पकर ईश्वर बेरा गूरु ज्ञानी भवकेरा,
तरेगा सुखेरारे ॥ ६ ॥

(२८) राग एज.

अबतो अचेत मत होना हो मेरे भाइरे,
अबतो अचेत मत दोढ ॥ १ ॥
माता पिता भाई जूठी जगत सगाईरे,
तज त्रण जेसे ताइरे ॥ २ ॥

२३

परेओखीआइ कोइ करेना सहाइरे,
हरि सुमर सदाईरे ॥ ३ ॥
करिले कमाई साची लगन लगाईरे,
तेरी होवेगी भलाईरे ॥ ४ ॥
मानी ले मनमांहि ईश्वर दीनी है सजाइरें,
वेला जातहे विलाइरे ॥ ५ ॥

(२९) राग एज.

दिलभर दम एक खाली नही खोनारे,
दिलभर दोढ॥ १ ॥
जातहे जमारा सारा पानीकेसें पूर प्यारा,
क्या सुख सोनारे ॥ २ ॥
तनका तमासा केसा, पानीका पतासा जेसा,
क्या होंस होनारे ॥ ३ ॥
आदम हें नाम तेरा, मानीले तुं मनमेरा,
देख कोनका हे कोनारे ॥ ४ ॥

कहत ईश्वर आज करिले अपना काज,
हरि चरनन चित प्रोनारे ॥ ५ ॥

(३०) राग रासडानो.

करता सुरतीनो सार विचार,
जीवोजी जाता रया दोढ ॥ १ ॥
जडमूलथी कापीनें काढया,
लइनें तत्व मसी तरवार ॥ २ ॥
क्षण क्षण अणछता थाता उभा,
करता वेर वेर लबार ॥ ३ ॥
गारूं देतां ते गम नव राखता,
कर्ता भुक्तानो करता पुकार ॥ ४ ॥
त्रन सरीर सहीत सधावेया,
लइनें पोतानो परिवार ॥ ५ ॥
गुरू करूणाथी ईश्वर कहे,
काढेया मारीनें सतपेजार ॥ ६ ॥

अथ सदगुरू लालरामजी महाराजकृत गुरू स्तुति.

पद १ लावनी.

श्रीगुरू ईश्वर देव दयानिधी,
शरनागत जन सुखकारी ।
संशय शोक नसावन पावन,
मोक्ष करन भव भयहारो दोढ.
दे असी निज उपदेश ज्ञानगुरू,
संश्रती मुल सकलहारी ।
ईस जीव बीच भेद छेदकर,
उपदेशात जन अधिकारी ॥ १ ॥
बोलत वचन सुधाकर वतनित,
सीतल मृदु अंमृतवारी ।
सरन सुखद पालक गुरूपद रज,
अधम उधारन ब्रद धारी ॥ २ ॥

गुरू गोपाल विचार अखंडीत,
राम रटन कर रतधारी ।
सोहं शब्द उचारन अहनिशा,
बोध करनकी गति न्यारी ॥ ३ ॥
जग मंगल मुरति अति प्यारी,
गुरू ईश्वर कर अवतारी ।
लाल बाल निजदास पास गुरू,
भवजल तुरत लीयो तारी ॥ ४ ॥

(२) राग एज.

धरमन ध्यान सांन सदगुरूकी,
क्युं मद मस्त फिरतमानी ।
ईश्वर रामनाम रट निसदिन,
पलमें पार परत प्रानी दोढ.
भवदव दाह दहत खलु खर मन,
जरत परत भव बिनुपानी ।

नही उपदेश सुमत संतनकर,
एह अचरज बड हेरानी ॥ १ ॥
समजत नही मति मंद अभागी,
कुड कपटकी होइ खानी ।
माया मोह फिरत अध अंधे,
क्या मोया जगहे फानी ॥ २ ॥
नहि कछु अपना हे सच सपना,
समज सार गुरूकर ज्ञानी ।
मरम यथारथ समज सेयाना,
चरन कमलकी हये बानी ॥ ३ ॥
खेल खरेखर सदगुरु सेवा,
बीज मंत्र मन ले मानी ।
ईश्वररामचरण अंतर धर,
लाल काल कर भय भानी ॥ ४ ॥

अथ महाराजश्री ओधवरामजी विरचित भजनपद प्रारंभ.

(१) रा. लावनी.

सुखदायक गुरुसदन शान्तिके,
सुमरत सब दुख सदहानी ।
सदगुरुसम नहि सकल लोकमें,
निजानंद सुखके दानी. टेक.
सुधासिंधुको भेद बतायां,
अखिल आपदा अलपानी ।
इंद्रादिक पदकी नहि आसा,
मिटे सब मनकी ग्लानी ॥ १ ॥
मायारचित लोक सब मिथ्या,
नामरुप सब हे फानी ।
दीव्यबोध असदेत निरंतर,
उपददेशत अनुभव बानी ॥ २ ॥

एक ब्रह्म अद्वैत अखंडित,
नभवत सब एसें जानी ।
समता पदमें सदा बिराजे,
सुरता भई जिनकी स्यानी ॥ ३ ॥
सीलवान सीतल समदरशी,
आतमवेता निरमानी ।
ओधवदास सदा अंतर धर,
लालराम सदगुरु ज्ञानी ॥ ४ ॥

(२) राग एज.

मनमद तजकर सजकर साधन,
सबहु सदगुरु सुखपावे ।
विविध आपदा करी परिपूरण,
श्रमबिन सदभव तरी जावे. दोढ. ॥१॥
जप तप तीरथ योगयाग पुनी,
अनसनवृत मुनी दरसावे ।

तिनकर फल भाषत भव नाना ।
गुरुसेवा सम सो नावे ॥ २ ॥

याचत गुरु पदरज हरिहर अज,
शिरपर धर उरु उमगावे ।
सुक सनकादिक शेष सारदा,
सब सदगुरूके गुणगावे ॥ ३ ॥

गुरु छबि दमकत दिव्य कान्तिकर,
मनमरदन अति सरमावे ।
सद्य मिटत संताप दरसते,
पूरन सुखको परसावे ॥ ४ ॥

बडे भाग्य प्रगटे जब जिनके,
सो गुरुके पदको ध्यावे ।
लालराम गुरुके पदसेवन कर,
ओधव दुख विरमावे ॥ ५ ॥

(३) पद राग पीलु.

भजन बिना क्युं वखत गुमावे,
अवसर एसो फेर न आवे. दोढ. ॥ १ ॥
गरभवासमें कीया करारा,
भुल गया अब सरजनहारा ॥ २ ॥
जन्म मरणका भयहय भारी,
तातें सुमरी लीजें मोरारी ॥ ३ ॥
काम न आवे सुत वित दारा,
मायाका सब जूठ पसारा ॥ ४ ॥
ईश्वरका आराधन कीजें,
दास ओधवका मानी लीजें ॥ ५ ॥

(४) राग एज.

संत समागम अहोनिस कीजें,
जन्म मरणके वंधन छीजें. दोढ.
संत विना सुध को न बतावे,
भवसागर जलमें बहीजावे ॥ १ ॥

संत समागम सो अतिनीको,
रुप जनावत हे हरिजीको ॥ २ ॥
मोहनि साथे संतज तावे,
निज आतम अंतर दरसावे ॥ ३ ॥
संतमकी महीमा हे भारी,
दास ओधव कहे मिलत मोरारी ॥४॥

(५) राग एज.

प्रभु पूरण हे अपने मांही,
ज्ञान विहीने देखे नाही. टोढ.
कासी प्राग हरिद्वार रामेश्वर
वृंदावन कहे हें सर्वेश्वर ॥ १ ॥
देश विदेशमें यों भरमाने,
हरि अंतरमें सो म नहि जाने ॥ २ ॥
मृग नाभीमें हे कस्तुरी,
हरि हिरदेमें त्यौं नही दुरी ॥ ३ ॥

ओधवदास कहे उरमा देखो,
नामरुप को मिथ्या लेखो ॥ ४ ॥

(६) राग एज.

वाच्यज्ञानसें मोक्ष न पावे,
भवसागरमें आवे जावे. दोढ.
पानी कहेसें मिटत न प्यासा,
इष्ट मिले बिन मिटत न आसा ॥१॥
तातें गुरूगम तत्व विचारो,
मुल शब्दमें सुरता धारो ॥ २ ॥
माया ममता त्रषना त्यागो,
राम निरंजनमें अनुरागो ॥ ३ ॥
भवतरनेको भेद बतायो,
कहे ओधव आशय दरसायो ॥ ४ ॥

(७) पद राग काराइडो

सुरता स्वरूपे धाररे, मनवा मोह तजीने,
सुरता स्वरूपे धार. दोढ.

भवसागरनो अंत न आवे,
विषयवासना टाररे, मनवा मोह. ॥१॥
तन धन जोबन काम न आवे,
ममता मेल निवाररे, मनवा. ॥ २ ॥
आजकालमां जावुं पडसे.
जगजीवन दिन चार, मनवा. ॥ ३ ॥
ओधवदासनी मानि सिखामण,
कामादीक अरीमार, मनवा. ॥ ४ ॥

(८) राग एज.

भजन विना न उधाररे, मनवा हरितणारे,
भजन विना न उधार. दोढ.
तन मन धन कुलबान करीनें,
राजी कर किरताररे. मनवा. ॥ १ ॥
जन्ममरणनुं कष्ट निवारे,
श्रीहरि सरजणहाररे. मनवा. ॥ २ ॥

दुख आवे त्यारे एज उघारे,
भवसंकट हरनाररे. मनवा. । ३ ॥
दास ओधव कहे राम भजीले,
जीवन तारुं सुधाररे. मनवा. ॥ ४ ॥

(९) राग आराधि.

अंते संत विमुख नरभव भटके,
भव भटके उंधे शिर लटके. टेक.
जमना दुत ज्यारे मारे जटके,
संत विमुख दुख चित चटके. अंते. ॥१॥
संत समागम करता इयां अटके,
परलोकमां पछी शिर पटके. अंते. ॥२॥
निंदक नरने नरके कीट घटके,
हायवोय करीनें शिष पटके. अंते. ॥३॥
हांसी खेल मुरखा करे मटके,
ओधवदास कहे जमरा देसे फटके, अंते. ४

(१०) राग एज.

साचा संत सुरा ते वास ने करे,
गगने करे निर्भय थइ विचरे दोढ.
नुरत सुरत वारी हंसमां धरे,
सहज समाधी लागी त्रपुटी परे, साचा. १
अदभुत आनंद पीयुसें जरे,
पान करी तनसुध विसरे साचा. २
देह अभिमानी नरने जमडा हरे,
समरथ संत देखी काल डरे साचा. ३
ओधवदास कहे हरिनें उरमां धरे,
तारे बीजानें संतो पोते तरे. साचा. ४

(११) पद राग परज.

धरजे धरजे हरिनुं ध्यान, धीरज मन आणिरे।
मृगजल जेवो आ संसार, एवुं निश्चे जाणीरे दोढ.
स्वारथ सारूं करे सौ स्नेह, जगतनी ए रीतीरे
विश्वनाथ विषे चित धार, पूरणकर प्रीतीरे १

समजी लेवुं चतुर सुजाण, माया ठाठ खोटोरे ।
एनें जातां न लागे वार, पाणी परपोटोरे २
आ छे चंचल चपला जेम, आयु आस्थिर तारीरे ।
अंते जावु एकाएक, हरिले संभारीरे ३
अेवुं समजी चेत अचेत, प्रभु स्मरण करवुंरे ।
एम कहे छे ओधवदास, बीजुं परिहरवुंरे ४

(१२) राग एज.

रहेजे रहेजे सदानंदमांय, सुबोध विचारीरे ।
सदचिदआनंद आदेअंत, स्वरूप संभारीरे टेक.
जीव ईश्वरमां जे भेद, मायाथी भासेरे ।
असीपदनो करतां विवेक, अद्वैत प्रकासेरे ॥१॥
आत्मजोती सदा सुखरूप, अखंड अनादीरे ।
अेनें जोतां मिटे जंजाल, कहे वेदवादीरे ॥२॥
अंतर बाहेर सौमां एक, प्रभुनें जाणोरे ।
अविनासी करी अपरोक्ष, ब्रह्मानंद माणोरे ॥३॥

ज्ञानीगुरूथी लइनें ज्ञान, आपापणुं टारोरे ।
एम कहेछे ओधवदास, स्वरूपे सुरति धारोरे ॥४॥

(१३) राग एज.

सरणे राखो गुरु दीनदयालारे,
सेवक जाणी आपो निज सेवारे ।
भवदुख भंजन पालक स्वामी,
गंजन गर्व निरंजन देवारे. टेक.
संसारसागर दुस्तर भारीरे,
तेने देखी डर्युं मन माहरे ।
ज्ञान नावपर नाथ चढावी,
पार करो प्रभु धीरज धारूरे ॥ १ ॥
देवी देवता सगा संबंधीरे ।
स्वार्थ साथीमें सर्वे जोयारे,
विना प्रयोजन संत पुरूष छे ।
पर उपकारे जेनां मन प्रोयारे ॥ २ ॥

आप सदा छो इष्ट अमारारे,
अहोनिस अंतरमां धारूरे ।
स्मरण श्रीगुरूदेव तमारूं,
लागे मुजने बहू सारूरे ॥ ३ ॥
मातपितादिक भ्रातनें भगनीरे,
कुल कुटंब प्रभु सौ त्यागीरे ।
कहे ओधव गुरूदेव आपने,
चरणे रयु मारूं मन लागीरे ॥ ४ ॥

(१४) राग एज.

नाथ निरंजन नेणे निरख्यारे,
सुरता अंतर सुख पामीरे ।
कर्म भर्मनी कल्पना छुटी,
विषमता सर्वे वामीरे दोढ.
अगम मार्ग एछे एवोरे,
विरला जन कोइ त्यां फावेरे ।
आधार विना जेम खेल छे नटनो,

ख्याल चूके तो मरजावेरे ॥ १ ॥
जीवत मरवुं उलट चडवुंरे,
मीनमारग दुर्गम भाइरे ।
शिरना साटा जे कोइ करसे,
माणे मोज ब्रह्ममां जाइरे ॥ २ ॥
वाच्यज्ञानना जेछे विलासीरे,
अंतरनी गति सुं जाणेरे ।
अरक उजासनें उलुक न देखे,
ब्रह्मानंद सुख केम माणेरे ॥ ३ ॥
नुरतनें वारीरे सुरत संभारीरे,
शब्द सोधीरे खोले दसमी बारीरे ।
ओधवदास कहे लाल प्रतापे,
तापर हुं जाउं बलीहरीरे ॥ ४ ॥

(१५) राग रामगरी.

राम भजो रूडी रीतथी, सुख निजानंद लेवा ।
अंतर टारो आपदा, करो हरि गुरूनी सेवा टेक.

वाच्य विलासने परिहरी, ध्यान समयने वीतो ।
कामक्रोधादि वेरी मोक्षनां,सुभवैराग्ये जीतो ॥१॥
पुर्ण परिब्रह्म रामनें, जुओ वेद विचारी ।
सद चिदआनंद रूपनें, अंतरमां संभारी ॥२॥
गज गनिकानें भीलडी, पापी अजामेल जेवा ।
भजन प्रतापे उघर्या, अधम हता ते केवा ॥३॥
भजन महीमासुं कहु, शेष पारन पावे ।
ओघवदास कहे हरिभजो, फरी जन्म न आवे ४

(१६) राग एज.

मान मुकीनेरे मानवी, सदगुरू शरणे रहेवुं ।
कुडकपट त्यागी करी, चरणोमां चित देवुं दोढ.
अनेक जन्मनां लेखजे, गुरू करूणाथी त्रुटे ।
अंतरमां आनंद उपजे, कालकर्म भय छुटे ॥१॥
गुरू ते ईश्वररूप छे, भेद भाव न आणो ।
ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप छे, एवा वचन प्रमाणो ॥२॥

देवी दानव देवता, भूत प्रेत जे सेवे ।
समर्थ गुरू छोडी करी, लक्षचोरासी लेवे ॥३॥
हरिजन एवुं विचारीनें, पाखंडने परिहरजो ।
ओधवदास कहे प्रेमथी, सदगुरूने अनुसरजो ४

(१७) राग एज.

अखंड स्वरूपी आतमा, मनवाणीमां नावे ।
नेती नेती करी अस्तवे, वेद पार न पावे दोढ.
ऋषिमुनी सौ तेनें कहे, नाम रूपथी न्यारो ।
अकल अनादी अनंत छे, बावन वर्णथी बारो १
द्रष्य पदारथ मानजो, रजु भुयंगनी रीते ।
एक अखंडीत ब्रह्म छे, जुवो विचारी प्रीते २
वृक्षछाया वृक्षरूप छे, बालबुधि भिन माने ।
अनुभवी संत विवेकथी, कार्य कारण करि जानें ३
स्वपन पदार्थ स्वप्नमां, द्रष्टारूपज जाणो ।
ओधवदास तेम विश्वनें, ब्रह्म अभिन्न प्रमाणो ४

(१८) राग एज.

उलट फरीनेरे गोतजो, वस्तु छे निजघरमां ।
बहार गोतेथी नहि जडे, जागी जुवो
अंतरमां दोढ.

कस्तुरी मृग नाभीयें, गोते वनमां घासे ।
अज्ञानी तेम आथडे, सर्व प्रकासी पासे ॥१॥
ससी चाहे जेम सीतनें, भानु तेजनें चाहे ।
तेम चाहे छे ब्रह्मने, जोया विना पोता मांहे ॥२॥
गुरुगम सार विचारजो, बेसी निरंजन स्थाने ।
समदम साधन सा नें, सोह नें धरो ध्याने ॥३॥
द्वैत भरमनो भासते, एक घडीमां नासे ।
सद चिदआनंद आतमा, ओधव उरमां प्रकासे॥४॥

(१९) राग धनाश्री.

मननें मारनहार, जगतमां मननें मारनहार ।
लाखो करोडोमां कोइक दीसे,
जोयुं फरी संसार जगत दोढ. ॥ १ ॥

जन्मोजन्मनुं ए छे वेरी,
योगी यती जीतनार–जगत. ॥ २ ॥
तीव्र वैराग्यनें तत्व अभ्यासे,
विरला वस करनार–जगत. ॥ ३ ॥
ओधवदास कहे कायर नरथी,
कदी नहि डरनार–जगतमां. ॥ ४ ॥

(२०) राग एज.

ईष्ट छे ईश्वरराम अमारा,
इष्ट छे इश्वरराम दोढ.
तत्ववेता सीतल सुखरासी,
शान्त स्वरूप तमाम, अमारा० ॥ १ ॥
संत सीरोंमणी सुखना सागर,
शीलवान निहकाम, अमारा० ॥ २ ॥
कंचन लोष्ट सम करि जाने,
विषयोथी उपराम, अमारा० ॥ ३ ॥

एवा गुरूपर मन माने ओधव,
चित पामे विश्राम, अमारा० ॥ ४ ॥

(२१) राग एज.

नरदेहनो लाभ लेवोरे, हरिजन प्यारा दोढ.
मन विषयोथी वारी, धीरज अंतरमां धारी ।
ईश्वर जांणी गुरूनें सेवोरे, हरिजन प्यारा. १
लक्ष निशाने देजो, परीब्रह्मनें गोती लेजो ।
आवे नहि फरीथी अवसर, एवोरे, हरिजनप्यारा.
सर्वेश्वर सौना स्वामी, अविनासी अंतरजामी ।
ज्ञाने अंतरमां गोती लेवोरे, हरिजन प्यारा. ३
संत समागम करजो, हरिनें अंतरमां धरजो ।
ओधव आनंद मलसे तेवोरे, हरिजन प्यारा. ४

(२२) राग भैरवी.

रहे नहि राजा राना, एकदिन
छोड सबे चल जाना दोढ.

खेल मुसाफर हे दो दिनका,
आखिरमें मरजाना. एकदिन ॥ १ ॥
बाजीगर जेसी सब रचना,
तिनमें क्या भरमाना. एकदिन ॥ २ ॥
आदम तेरा नाम मुसाफर,
क्या करना अभिमाना. एकदिन ॥ ३ ॥
जुठा हे जंजाल मुसाफर,
सुमर प्रभुकुं स्याना. एकदिन ॥ ४ ॥
दास ओधव कहे मिलना कठिन हे,
एसा अमूल्य टाना. एकदिन ॥ ५ ॥

(२३) रास सातवार.

सीयल विभुषण धारो, बेनां सउ
सीयल विभुषण धारो ।
रात दिवस रदे खटको राखो,
कुमतिबाइनें निवारो. बेनो.

साखी.

आदी ते आलस तजी, धरो हरिनुं ध्यान ।
मरयादाथी चालसो, तो मलसे भगवान ।
अंतरथी इरषानें त्यागी मृदूल वाणी उचारो.
बेनो सौ. ॥ १ ॥

साखी.

सोमे सुद्ध विचारथी, सजि सुभ गुण श्रंगार,
मुकी ममता माननें, तरत भजो किरतार.
कुड कपटनें काढजोरे अलगा, साथें काढी
कारीयारो. बेनो. ॥ २ ॥

साखी.

भोमे भीड पडे कदी, जाय कदाचित सीस,
टेक टकावी राखसो, रक्षक छे जगदीस.
भीडभंजन प्रभु बिरद संभारी, उधारसे टेक
राखनारो. बेनो. ॥ ३ ॥

साखी.

बुधे बुधी सुध करो, दियो दीनोनें दान,
जो देसो तो पामसो, समजण धरजो कान.
आवो ते अवसर फरी नही आवे, दान आपो
हाथ टारो. बेनो. ॥ ४ ॥

साखी.

गुरुए गुरु ज्ञानी करी, करो सदा सत्कार,
करुणालय करुणा करी, कहेसे तत्व विचार.
श्रवण मनन निदध्यासन करोनें, त्रिविधी
तापनें निवारों. बेनो. ॥ ५ ॥

साखी.

सुके शब्द विषे धरी, सुरत नुरत निसान,
अडोल वृत्ति राखीनें, भुलो तन अभिमान.
नाम रुपथी भी न हरि जाणी, टारो अविद्या
पसारो. बेनो. ॥ ६ ॥

साखी.

सनीयें सउमां देखजो, सुधर छे भरपूर,
भेद भावना परहरी, अंतर देखो नुर.
प्रेम मगन थई हरिगुण गासो, थशे सफल
जनमारो. बेनो. ॥ ७ ॥

साखी.

उपदेश आप्यो प्रेमथी, वेद वचन अनुसार,
हेते हरिजन सांभलो, टलसे आ संसार.
ओधवराम कहे वासना निवारी, आत्मारामनें
संभारो. बेनो. ॥ ८ ॥

(२४) भजन.

भाव धरी हरि गुरु संतनें रीजाव्रेर,
आपदा टारे मुलथीरेजी. टेक.
भाव विनां नव उधरे, कोटी करे उपाय ।
भाव विना भक्ति करे, मलीनता केम जायरे. १

स्वाति बिंदूमां छीपनें, प्रेमतणो नहि पार ।
साचा मोती उपजे, जेनुं मोल अपाररे २
चकोर चाहे चंद्रनें, मेघनें चाहे मोर ।
प्रीती एवी राखजे, पामीस परिब्रह्म ठोररे ३
मन वाणी कर्मे करी, तजो कपट अभिमान ।
हरि गुरु संतनें सेवजे, मलसे तो भगवानरे ४
प्रीतिवश हरि संत छे, प्रीत विना न रीजाय ।
कहे ओधव एम जाणजे, प्रेमथी कारज थायरे.

(२५) राग भजन.

आवो अवसर एळें जायरे,
भजीले हरि हेतेथीरेजी. टोढ.
गर्भवासमां कोल दई, भुली गयो सुं भान ।
कर सुमरण किरतारनुं, न कां थइश हेरानरे. १
गयुं बालपण खेलमां, योवन नारी संग ।
व्याधीमां वृधपण गयुं, तोय न लाग्यो रंगरे २

मात पिता सुत भामनी, कोइ न आवे काम ।
अंते जावुं एकलुं, साथे सीताराम ३
गइ पल पाछी नही मले, करि ल्यो चेति कमाई ।
कहे ओधव हरिनें भजों, अंतर राखी सचाईरे ४



अथश्री नारायनदासकृत पद प्रारंभ.

गुरू स्तुति.

राग सोरठी.

श्री सदगुरू साहेब छो अंतरजामीरे गुरूदेवा,
स्थावर जंगम सरवेना छो स्वामीरे ।
नित करूं सेवा. टेक. ॥ १ ॥
सदचिद आनंद रूपें रयाछो व्यापीरे गुरूदेवा ।
आप अनाव्रत आनंदकंद अमापीरे,
नित करुं सेवा ॥ २ ॥
त्रिगुणातीत अद्वैत अखंड असंगीरे गुरुदेवा ।
मन बुधि चित गोपार अपार अलिंगीरे.
नित करूं सेवा ॥ ३ ॥
निर्गुण गुणमय आतमपदना भोगीरे गुरूदेवा ।
सर्वातीतं सरवेनां संजोगीरे, नित करूं सेवा. ४

सुखकारी सुखरुपे सुखनां सिंधुरे गुरुदेवा।
श्री सदगुरू साहेब छो सौनां बंधुरे,
नित करूं सेवा ॥ ५ ॥

आप अरुपी रुप धरीनें आव्यारे गुरुदेवा।
सर्वे सेवकना मनमांये भाव्यारे, नित करुं सेवा ६
महामंगल मनोहर मुर्ती वनमालीरे गुरुदेवा।
सुंदरवदन कमल जोयुं छे भालीरे,
नित करुं सेवा ॥ ७ ॥

अमृत द्रष्टे अनेक जंत उधार्यारे गुरुदेवा।
शरणागतनां सर्वे कारज सार्यारे
नित करुं सेवा ॥ ८ ॥

जन्म धरीनें हरि पदमां चित जोडयुंरे गुरूदेवा।
काम, क्रोध, मद, मोह, ममतानें मोडयुंरे,
नित करुं सेवा ॥ ९ ॥

विषय तजीनें सतसंग कीधुं साररे गुरुदेवा,

जेणे उपनो आत्मब्रह्म विचाररे ।

नितकरुं सेवा ॥ १० ॥

सील संतोषी शुभ गुणनां छो सागररे गुरुदेवा,
आतमवेता अनुभवना उजागररे ।

नितकरुं सेवा ॥ ११ ॥

प्रेम नेम शुभ भावतणां अनुरागीरे गुरुदेवा,
भक्तिज्ञान वैराग्यतणी लय लागीरे,

नितकरुं सेवा० ॥ १२ ॥

विवेक विचारे सारासार विचार्युंरे गुरुदेवा ।
निर्गुण पद निश्चे करीनें निरधार्युंरे,

नितकरुं सेवा० ॥ १३ ॥

आतमज्ञाने आप विचारी जोयुंरे गुरुदेवा ।
अहंकार अहंता अंतरथी खोयुंरे,

नितकरुं सेवा० ॥ १४ ॥

बाह्य द्रष्टि त्यागी अंतरगत आणीरे गुरुदेवा ।

२५

मुख बोल्या श्रीजयसच्चिदानंद वाणीरे,
नितकरुं सेवा० ॥ १५ ॥

एकांते बेसीनें आप विचार्युंरे गुरुदेवा ।
सर्वे पंच प्रपंच थकी मन वार्युंरे,
नितकरुं सेवा० ॥ १६ ॥

नामरूप गुण कर्म शुभाशुभ त्यागीरे गुरुदेवा ।
त्वंतत् त्यागी असीपदनां अनुरागीरे,
नित करुं सेवा० ॥ १७ ॥

ब्राह्मी स्थिति उपजी छे तेणीवाररे गुरुदेवा ।
जेणें करीनें भास्युं ब्रह्माकाररे,
नित करुं सेवा० ॥ १८ ॥

देह छते थया विदेह पदनां वासीरे गुरुदेवा ।
धन मारा सदगुरु साहेबजी सुखरासीरे,
नित करुं सेवा० ॥ १९ ॥

विहारीनां चरनकमलनें नमामीरे गुरुदेवा ।

नारायणदासे पूरण पदवी पामीरे,
नित करुं सेवा० ॥ २० ॥

(२) पद राग बिहाग.

सीयाराम चरन परवारी,
जाउं में बेर बेर बलिहारी टेक ॥ १ ॥
पद रज पावन सोक नसावन,
गौतम नारि उधारी ।
पतिके श्राप उपल भइ आपे,
सो रघुवीर सुधारी जाउंमें० ॥ २ ॥
सोइ वृतांत सुन्यो जब केवट,
पात्रमें पांउं पखारी ।
लइ चरनांमृत पान कीये तें,
कुटंब सहीत लीये तारी जाउं० ॥ ३ ॥
रावण कुंभकरण घननादा,
सो द्विज मखके अहारी ।

ताहि निपाती मोक्ष पठाये,
सो कहत पुराण पुकारी. ॥ ४ ॥
अधम अजामेल गजगनिका सो,
निज पदके अधिकारी ।
कोळ किरात व्याध खल रासी,
ताको संकट टारो ॥ ५ ॥
भवउदधीमें जहाज हरिपद,
जाइ बेठत नरनारी ।
कहे जन नारायन सतसंग,
सदगुरु लेत उधारी, जाउं में० ॥ ६ ॥

(२) राग एज.

सीयाराम चरन सुखदाता,
जगतमें पालक ज्यौं पितु माता टेक.
कनक कसीपु प्रहलाद पिडायो,
तब नर हरि करी त्राता ।

महाभारतमें इंडा उगार्यां,
सो संत ग्रंथ गुन गाता जगतमें० ॥ १ ॥
वाली मारी सुग्रीव बचायो,
राम लक्ष्मन दोउ भ्राता ।
बंधुके वेर विभिक्षन व्याकुल,
ताहि करी सुख शांताः ॥ २ ॥
दुष्ट दुशासन जब पट ऐंच्यो,
नगन करनकुं गाता ।
पंचालीकी प्रभु पण राखी,
बेगही आये विख्याता ॥ ३ ॥
डुबत जल गजराज उगार्यों,
जाणी भक्तिको नाता ।
परिक्षत पावक प्राण बचायो,
सो संत मुख सुनी बाता ॥ ४ ॥
सीताराम चरन अति पावन,
वंदत शेष विधाता ।

जननारायण नितचित सुमरो,
प्रेमें पदजलजाता ॥ ५ ॥

(४) राग एज.

देखो संतो ब्रह्मसागरकी लहेरी,
यामें कोन पुरुष कोन महेरी दोढ.
कोटी ब्रह्मांडहि उपजत छिनमें,
एसी सांमृथ हेरी ।
कोटिस्थतिकोहु काल रहत हे,
कोटि होत प्रलेरी देखो० ॥ १ ॥
रज उपजाई सत्व प्रतिपाले,
तामस नास कर्योरी ।
उत्पती स्थिती लय होत गुन नितं,
निर्गुणकी गत ठोरी ॥ २ ॥
देव दनुज मनु जगत उपजत,
पक्षी पन्नग कयोरी ।

अग जग पूरण है परमातम,
आपही आप भयोरी ॥ ३ ॥
आत्म उदधी सदा परिपूरन,
गटत न बढत न योरी ।
कहे जन नारायण सुखसागर,
ज्यौंका त्यौंही रयोरी ॥ ४ ॥

(९) राग एज.

अहो याही आत्म राम पिछान्या,
सोहं सब घट पूरन जान्या टोढ.
आगम द्रष्टी अरु गुरु वायक,
निज अनुभव अनुमान्याः ।
श्रुति स्मृती पुरान निकोमत,
ले करके भ्रम भान्याः अहो० ॥ १ ॥
अंतःकरण इद्रियको अधीष्टा,
सोमें प्रगट प्रमान्या ।

पंच पचीसही को प्रकाशिक,
ठीक करी ठहरान्याः ॥ २ ॥
तीन अवस्था त्रधा अभिमानी,
लिंग त्रधाजु कहान्या ।
पिंड ब्रह्मांड द्रस्यमें द्रष्टा,
इह विचार उर आन्या ॥ ३ ॥
बाह्याभींतर हे परिपूरन,
वेद पुरान बखान्याः ।
श्री सतगुरुहि प्रसाद नारायण,
निज स्वरुप गुनगान्याः ॥ ४ ॥

(६) पद राग धनाश्री.

मन मान सीखामण मारीरे,
जुओ अंतर आप विचारीरे टेक.
आरे संसार सुपनवत जाणी,
प्राणी मेल अहंकार अहंकारीरे मन० १

विषयभाव विसारी मनथी,
  लीजें आप उघारीरे   मनमान० २
साधुजननुं संग करीनें,
  लीजें कारज सारीरें   मन० ३
ब्रह्मनिष्टी ब्रह्मविद सदगुरुनी,
  सेवा कीजें सारीरे   मन० ४
नारायन सतगुरु प्रतापे,
  तो जाहूं बलिहारीरे   मन० ५

(७) राग एज.

परमातम सुमरो प्राणीरे,
  महारसनें लीजें माणीरे दोढ.
सतगुरु संतरू शास्त्र सुमृती,
  वेद पुरान वखाणीरे   ॥ १ ॥
श्रवण मनन निदध्यास करीनें,
  जुक्ते साक्षात जाणीरे   ॥ २ ॥

अहर्निस एहि विचार करीनें,
अनुभव अंतर आणीरे ॥ ३ ॥
आप अखंड अक्रिय अनामय,
निर्गुण छे निरवाणीरे ॥ ४ ॥
नारायण निर्मल निज आतम,
प्रणमुं जोडी पाणीरे ॥ ५ ॥

(८) पद राग काफी.

सत स्वरुप संभार, सोहं सोहं स्मरण सुमरो,
सत स्वरुप संभार दोढ.
अयें बालक तुं केसरीसिंहजो,
छड अजाजीलार सोहं० ॥ १ ॥
महावायक जो मनन करीनें,
निगम नजरसे न्यार ॥ २ ॥
त्वं पद तत् पद त्याग करीने,
असीपद अंतर धार ॥ ३

त्वंपद जीव ईस ततपद अथ,
असीपद ब्रह्म विचार ॥ ४ ॥
नारायन सतगुरु प्रतापे,
उतरे भवजल पार ॥ ५ ॥

(९) राग एज.

अयेंतुं आत्माराम तनमन
न्यार तपासी. अयेंतुं० टेक.
सुर्गुन साखी अंयें सकलेश्वर,
आप रुपी अनाम. तनमन० ॥ १ ॥
केर जाणे तो विना तोके,
तुं निरगुण निस्काम. तन० ॥ २ ॥
ब्रह्मैवाहं मन बुधीनाहं,
कर सुमरन निस जाम, तनमन० ॥ ३ ॥
तुं निहसंग निरामय निरमल,
नारायन निज धाम. ॥ ४ ॥

(१०) पद राग घोळ.

तेनी जुक्ति जाणे जन कोए,
हेली रस अनुभव उमग्यो उरमां. टोढ. १
रस अगम अगोचर आत्मा,
रस अरुप अखंडित होये ॥ २ ॥
रस सुरनरं मुनी जाणे नही,
रस ग्रंथनिराख्यो गोये ॥ ३ ॥
रस भागवत गीता वेदें कथो,
उपनिषद आनंद सोये ॥ ४ ॥
रस हरिहर अज सनकादिके,
जाण्यो माण्यो वखाण्यो जोये. ॥ ५ ॥
रस मनबुधी साखी बावनबारो,
रसद्रस्थ प्रपंच न होये. ॥ ६ ॥
रस अनंत ब्रह्मांडे पूरण सदा,
जेम सागर व्यापक तोयेः ॥ ७ ॥

हवुं कमला दरद केनी आंखमां,
तेतो द्वैत प्रपंच मोये. ॥ ८ ॥
महा पुरुषनी द्रष्टी पारसमणी,
देखे कांचन पदवृति प्रोए. ॥ ९ ॥
नारायण अनुभव रस आतमा,
सदगुरु कयुं निगम निचोई. ॥ १० ॥

(११) पद राग गरबी.

सचदानंद स्वे स्वरुप जाणजोरे,
वालो व्यापक पिंड ब्रह्मंड दोढ. ॥ १ ॥
इछे आनंद स्वरुपी आतमारे,
अविनासी एक अखंड. ॥ २ ॥
लोक चौदे पूरण परमातमारे,
कोये खाली नथी अणुखंड ॥ ३ ॥
मनबुध्धि इंद्रि प्राणनो प्रकासी छेरे,
जग प्रकासीक जेम मारतंड ॥ ४ ॥

शिवशक्ति रूपे स्वेतेज छेरे,
करि आपही आपमां मंड. ॥ ५ ॥
नेति नेति श्रुति जेहनें स्तवेरे,
नित नारायन क दंड. ॥ ६ ॥

(१२) राग एज.

सर्व साक्षी सदैव स्वे आतमारं,
मन बुधिनें चित अहंकार दोढ.
घट द्रष्टा घटात् भिन्न जाणजोरे,
देह द्रष्टा तथा देहधार. ॥ २ ॥
घट मठनें महदाकाश छेरे,
परीपूरण भींतिर बार. ॥ ३ ॥
तोये भांडे रवि जेम भासेयोरे,
तरणी जळ भाजन पार. ॥ ४ ॥
नारायन वेद वदे सदारे,
एक एवं न संशय लगार. ॥ ५ ॥

(१३) पद राग.

कर सतसंग सदा संतनको,
कर सतसंग सदाय.
पूरन ब्रह्म पिछानपरे,
कर सतसंग सदाय दोढ. ॥ १ ॥
गुरुके चरन कमल शिरनामी,
नासत बडी बलायः ॥ २ ॥
आगम निगम पुरान सुने नित,
त्रिविधि ताप विलायः ॥ ३ ॥
तन मन धन गुरु चरनें अरपे,
भ्रांति भरम नसायः ॥ ४ ॥
जन नारायन सास उसासें,
गोविंदका गुन गायः ॥ ५ ॥

(१४) राग एज.

आतम आप विचार चराचर,
आतम आप विचार ।

सचिदानंद स्वरूप सदाये,
आतम आप विचार दोढ. ॥ १ ॥
जड असत्य दुख उपाधी तजता,
भज चैतन स्वेसारः ॥ २ ॥
द्रष्टा कारज जग सब मिथ्या,
यह अनुभव उर धारः ॥ ३ ॥
पुरुष पुरातन प्रगट परातम,
परसत पावे पारः ॥ ४ ॥
कहे जन नारायन गुरुगमसें,
मन चंचलको मारः ॥ ५ ॥

(१५) पद राग काफी हुसेनी.

श्रुतीसार सदगुरुके बैंनां, सोइबेनांरे,
स्वपद सद देना, श्रुति. दोढ.
अनुभव आंखी खुले पलकाहो,
पूरन पद निज आप लखाहीः ।

जल थल व्यापक हे सबमांही,
चित चैतन उपजत चेना. श्रुति० ॥ १ ॥
तब कछु भेद भरम नहि भासे,
पूरनपद निज आप प्रकासे ।
अति अगाध उदधी सम आसे,
घहरी दसा मिटही घेना ॥ २ ॥
स्वंतत पिंड ब्रह्मांड उपाधी,
मिथ्या जानि सब त्यागी व्याधी ।
सोहं कला आतमकी साधी,
बिन भेषज निरमल नेंना. ॥ ३ ॥
सुक सारद नारद गुन गावे,
सेश महेशही पारन न पावे ।
नारायन निजरूप रहावे,
पावे पद निरमल एना. श्रुतिसार॥ ४ ॥

(१६) राग एज.

जपो जाप सर्वोतमस्वामी-सदस्वामीरे-
विघन सकल वामी-जपो दोढ.
सास उसास भजन नितकीजें,
हरिके चरन कमल चित दीजें।
प्रेम धरी परमामृत पीजें,
पुरुषोतम पदवी पामी. जपोजाप० १
जहां नही चंद सूर आभासे,
केसे पावक करही प्रकासे।
जाइ गयो फिरि जगत न वासे,
सकल परम मम तद धामी. ॥
देह इंद्रि मन बुद्धि तें पारा,
महं तत्व नाहि अहंकारा।
माम प्रकर्ती पुरुष आधारा,
पुरुषोतम निरगुन गामी. ॥ ३ ॥

पिंड ब्रह्मंड स्वतंतर भासे,
क्षति जल पावक पवन आकासे ।
ब्रह्म सत्य कल्पीत सब भासे,
सब घट पूरन नही खामी. ॥ ४ ॥
नेति नेति करि निगम बतावे,
अपने अनुभवहीमें आवे ।
नारायन पूरन पद पावे ।
त्रिगुन रहीत निरगुन नामी. ॥ ५ ॥

॥ अथ महात्माश्री सेवारामजी कृत पद प्रारंभः ॥

(१) पद राग ढोलो.

प्यारा मिठा बोलणाजी,
नीके बेंन वखाने प्यारा बोलणा प्यारा. टेक. १
सतगुरु साहेब सोसत वस्तु, निश्चे अलख अभेवा ।

धार स्वरुप सो प्रगट भयेहे, एहो देवन देवा ।
जिज्ञासुके बोध देवनको, जेसें घन उदारा. २
जीव शिवकी करत एकता, श्रुति वायक ल्यावे ।
तापर बहू प्रमाण देतहे, स्वय स्वरूप द्रढावे ।
निसदिन ए परमारथ साधत, सोहं ब्रह्म उचारा.
शब्दब्रह्म परब्रह्मके वेता, ब्रह्मरुप सुखरासी ।
शिष्यके संशय सकल निवारन, ज्ञान भान प्रकासी;
आप सुखी सुख देत ओरही, एसा गुरु हमारा.
जीवनमुक्त जक्तमें विचरत,विषय सो व्यापतनाही
जेसें जलमें कमल वशात हे, रहत अलेप सदाही ।
सेवाराम नमाम नमामी, पुन पुन वारंवारा.

(२) राग एज.

साचे मेरे साहेबाजी चरन शरन में
तेरो हाजीहा—साचे. टोढ. ॥ १ ॥
कृपाद्रष्टमुं राखो स्वामी, हमरे शिर कर धारो ।
भवसागरमें बहि जात हूं, तातें तुम अवतारो ।

खेंच लगावो अपनी उरते,काटो करमही काचे:
संत जनाकी संगत देवो, गुरु चरणे अनुरागा;
विवेक विचार अंतरमें उपजें, विषयनतें वैरागा,
द्रढ मन होय तब कथा प्रसंगमें, महारंगमें राचे;
सील सबर संतोषक्षमा सुच,शमदमदया अधिकावे
धीरज शांति सुधीमत आर्यव,निरमल बुधसुहावे
गद गद प्रेमे गुनतोही गावुं, तेरे सनमुख नाचे
भाव भक्ति परतीत प्रीत पुन. श्रद्धा दान करीजें
नम्रतता द्रढ विश्वासु बुद्धि, ज्ञान गरीबी दीजें,
हाथ पसार प्रभु तुमरे आगे,सेवाराम एह जाचे.

(३) राग वधामणानो.

भेट्या संत दयालारे,
जाग्या भाग्य विशाला. दोढ. ॥ १ ॥
करी कृपा चरणे संग मिलायो,
जानीसो अपनो बालारे. ॥ २ ॥

भवसागरतें खेंच लीयोहे,
केश पकड ततकालारे. ॥ ३ ॥
दुबत राख लीयो जन अपनो,
पतित पावन ब्रद पालारे. ॥ ४ ॥
अमृत वचन सुनाये मनोहर,
सेवा राम कीनो न्यालारे. ॥ ५ ॥

(४) राग एज.

संत मीले सुखकारीरे, भई कृपा भारी. टोंढ. ॥१॥
आज अनोपम दिवसज प्रगटयो,
महा मंगल वरतारीरे. ॥ २ ॥
धन धन भाग्य हमारेरे सजनी,
परस्या संत सच्यारीरे. ॥ ३ ॥
दर्शन देखत हुयारे वधाणां,
उलटया प्रेम अपारीरे. ॥ ४ ॥
सेवाराम संत चरण रज उपर,
वार वार बलेहारीरे. ॥ ५ ॥

(५) पद सामैयो.

कांइ दुर्लभ हरिजननो संग,
रूडो ते संत मिलावडो. दोढ. ॥ १ ॥
जीरे संत सभा सीतल सदा,
सभा मांहे रमे रणछोड.
अडसठ तोरथ त्यांकनें,
कांइ वंदे उभा कर जोड. ॥ २ ॥
जीरे ज्ञान कथे अनुभव आणे.
मांये साची ते रसनी प्रतीत.
आदे अंते मधे संत छे,
तांसुं बांधी पूरवनी प्रीत. ॥ ३ ॥
जीरे वेगे त्यां विष्णु पधारेया,
मारे सरेयारे वैकुंठना काम.
महीमा जाणयो माहंतनो,
मन पाम्यो ते पद विसराम. ॥ ४ ॥

जी रे संत चिंतामणी जाणवा,
मारे साधु साची कामधेन.
रिध सिध नें सुं कीजीयें,
सेवाराम वाळी पदरेंन. ॥ ५ ॥

(६) जनुनी जीवोरे गोपीचंदनी. ए राग.

समज समज मन मांहेला, करले शुध विचाररे;
असत अनातम त्यागीयें, सत आतम उर धाररे;
एडो अवसर फिरी नां मिले,
हरि हरि मानखो जनम फिरी कब मिले. टोढ.
सोहं आतमरामहे, बोले सब घट मांही रे,
ए गुरुको उपदेशहे, हरदम सुमरो ताही रे. २
वाद विवाद न कीजीयें, रहीयें भजन परिपूररे,
काम, क्रोध, लोभ, मोहते,सदाये वसवो दूररे. ३
विषय विकार सब परहरी, जागी जपजो मुराररे.
ज्ञान गुरुको चित लेतो, उतरो भव पाररे. ४

एहि सिखामण सारहे,हिल मिल करो संत संगरे;
सेवाराम सुनी चितडे धरो, लागे आतम रंगरे. ५

(७) राग एज.

राम भजन कर प्रीतसुं, हरि हरि
हरिको भजन कर प्रीतसुं. टेक. १
गुरु वचने नित चालीयें, आपा सकल निवाररे,
ज्यौं सदगुरु कहे त्यौं करो,तो उतरो भवपाररे.
बाहेरतें उलटी करी, अंतर करो अभ्यासरे ।
गुरु मिलि आप विचारीये,तो पावो अविनासरे;
वृथा वचन न बोलीये, मन वृत साक्षी होयेरे४
जो कछु मन संकल्प करे,वारी चैतन चित प्रोयेरे
इन विधि सुमरन श्यामको,कीजे लगन लगाइरे;
सेवाराम भव बंधन मिटे,तुरतही मोक्षपद पाइयेरे

(८) राग पहाडी.

मनडेतुं जीणे जीणे मारग चाल. टेक. ॥१॥
थुल बुधि सगली परहरीये,छोड खुधीयको ख्याल;

अंतरद्रष्टी सुक्षम करिके, देखो गुरुगम नाल.२
तबतें जानें रूपही अपना,आतम तत्व विशाल;
सेवाराम सुख होये अखंडा,अपनी तुं आद संभाल,

(९) राग एज.

मनरेतुं भुलो भूलो कहेडे गुमान. टेक ॥१॥
यह संसार रहेनको स्वपनो, भासे निंद अज्ञान;
धन जोबन सुत त्रीय कुटंबा, सर्वे मिथ्या जान.
तातें सुमरो साहेब अपना, सत एको भगवान,
सेवाराम निज आतम ओलखो,ए सतगुरुकीसान.

(१०) राग एज.

मनडे तुं सुधबुध हीयडे धार. टेक. १
मलीन वासना सकलही त्यागो,करहो ज्ञानविचार,
आन अलापन कीजो कबहुं,रामही नाम पुकार.
मुरख संगतें गोसा पकडो, सुमरो सिरजनहार;
सेवाराम चैतन चित राखो,निरमल यह सतसार.

(११) राग एज.

मनडे तुं रामही नाम आराध, दोढ. १
सेव सदा धर प्रीत निरंतर, पार ब्रह्मके साध. २
अहनिंस नित सतसंगमें रहीये, उरतें छोडी उपाध.
संत बतावे वचन विवेका, वाकी बुधी अगाध. ४
सवाराम संतनिके संगतें, लागे ब्रह्म समाध. ५

(१२) राग एज.

मनडे तुं कर सतगुरुसें प्रीत. दोढ. ॥ १ ॥
परमहेतु जगमें गुरु जानो, ओर न एसो मित. २
निजही स्वरूपसो निकट बतावे, देत पूरण परतीत.
साच वचन उपदेश करत हे, जाते होवे जीत. ४
सेवाराम सदगुरु सुखदाता, जाकी निर्मल रीत. ५

(१३) राग एज.

मनडेतुं नित नित गोविंद गाये. दोढ. ॥ १ ॥
एह अवसर फिरी हाथ न आवे,
नाम निरंतर ध्याये. ॥ २ ॥

प्रेमभाव उर अंतर राखो, हरि सुमरन चितलाये.३
भगवत नाम भवजलको बेडो, निश्चे तोये तराये.४
सेवाराम हरदम प्रभु जपीयें, होवे अंत सहाये.५

(१४) राग एज.

मनडेतुं ग्रहु गुरुको परबोध. टेक. ॥ १ ॥
नित्यानित्य विवेक जो कीजें,लीजें स्वरुपहीसोध.
ज्ञान खडग ले भीतर जुजो,मारो कामही क्रोध.
सदगुरु शब्दे अंतर खोजो, अपनी वृति निरोध.
सेवा राम सत आतम चीनो,तब मानु तोये जोधे.

(१५) राग एज.

मनडे तुं हरि चरणे अनुराग. टेक १
आलस उंघसो सकल निवारो,चैतन पदमे जाग.
ज्ञान विचार हृदे रहावो, पारब्रह्म लयलाग. ३
आतम अनुभव तबते प्रगटे, द्वैत जावे सबभागे.
सेवाराम सो तबही तेरे, दूर होवे दिलदाग. ५

(१६) पद राग असा

हुं वारी पुनि बल बल जाउं मेरे,
सदगुरु साहेब प्यारेजी. हांरे मेरे सदगुरु टेक.

परब्रह्म जोइ अज अविनासी ।
चिदघन रूप सुते परकासी ॥
निराकार निरबान अलेखा ।
सोइ सदगुरु देव हमारेजी ॥ २ ॥

परापार परमातम कहीये ।
शुद्ध स्वरूप सदोदित हइयें ॥
अगम अगाध अजोनी अनंता ।
सोइ सदगुरू आये, वपुधारीजी ॥ ३ ॥

चैतन ब्रह्म अखंड अनादी ।
रूप न रेष न जाकी आदी ॥
वरणचिन्ह तेंपरे बिराजे,
सदगुरु ज्ञान दातारे जी ॥ ४ ॥

नेति नेति करि वेद बतावे,
शिवब्रह्मादिक जाकुं ध्यावे।
सेवाराम जे संत आराधे,
सदगुरु अपरमपारेजी ॥ ५ ॥

(१७) राग एज.

में याचक तेरे द्वारे आयो गुरु भक्तिदान
मोहि दीजेंजी गुरुभक्ति, दोढ. ॥ १ ॥
तुम समर्थ सदगुरु प्रभु मेरे,
में हुं तुमरे चरन निचेरे।
अपनो जानी करो अब एसी,
गुरु दुरमततें रख लीजेजी ॥ २ ॥
चरण कमल तुमरे नित सेवुं,
गद गद रसना नामज लेवुं।
श्रद्धा प्रीत सरस रिदेहोवे,
गुरु प्रेम भाव मन भीजेजो ॥ ३ ॥

सील संतोष क्षमा सुचि समता,
धीरज शांति उत्तम विधि नमता ।
आतम स्थिती दीजें गुरुदेवा,
अटल दान नव छीजेजी ॥ ४ ॥
विवेक विचार सार मत राचुं,
ज्ञान विज्ञान तुमैंपें जाचुं ।
सेवाराम प्रणवे गुरु स्वामी,
एही कृपाद्रष्ट मोहि कीजेजी ॥ ५ ॥

(१८) पद राग गरबी.

रुडुं दर्शन पाम्यो महासंतनुरे,
अनुग्रह थयुं भगवंतनुरे दोढ. ॥ १ ॥
कांइ रुडीरे थानार मुने दोसतीरे,
काढो लीधी संसारमां चोसथीरे ॥ २ ॥
प्रभु मेर करो घणी मूं परेरे,
ज्यारें सीस नमाव्युं चरण उपरेरे ॥ ३ ॥

मारा नेण निरखीने सफल थयारे,
शब्द सुणी श्रवण दुखडा गयारे ॥ ४ ॥
कहे दासनोदास सेवाराममछेरे ।
मारा संत स्वरूपने प्रणाममछेरे ॥ ५ ॥

(१९) राग एज.

सुखे संत दर्शन आवी भेटीयारे ।
हैडे लागीनें मारा दुख मेटीयारे. टेक. १
दइ हेत मल्या संत भावसुरे ।
पाई अंक मिला बहू चावसुरे ॥ २ ॥
बोल्या अमृत वाणी मेघ धारसोरे ।
त्रिधा ताप तपत जेसें ठारसीरे ॥ ३ ॥
सइ वात वखाणुं संत हेतनीरे ।
ब्रह्मभाव बांधी भव सेतनीरे ॥ ४ ॥
दंडवृत करे शेवाराममछेरे ।
नमो नमो नमस्ते नमाममछेरे ॥ ५ ॥

(२०) राग एज.

संत वइने आव्या मारे आंगणेरे ।
तेनें वारे वारे जाहुं भामणेरे. दोढ. ॥१॥
मुंने कृपा थइ भगवंतनीरे ।
ज्यारे परसी चरणरज संतनीरे ॥ २ ॥
मारा भाग्य पूरवनां जागीयारे ।
जारें हैडे वाला संत लागीयारे ॥ ३ ॥
सत सोहं स्वरुप भगवानछेरे ।
बीजुं नथी को संत समानछेरे ॥ ४ ॥
सेवाराम वंदत करजोडहीरे ।
हरिजन अमारे शिर मोडहीरे ॥ ५ ॥

(२१) राग एज.

वाला संत मारे घरे आवीयारे ।
रूडा राम सनेही मन भावीयारे. दोढ. १
ब्रह्मानंद मघन लयलीनछेरे ।
त्रिधा ताप थया जेना छीनछेरे ॥ २ ॥

२७

ब्रह्म विदोते ब्रह्मरूप छेरे ।
जीवन मुक्ता ते संत अनुप छेरे ॥ ३ ॥
जेनी श्रुति परिब्रह्ममां वसीरे,
निजबोध स्वरुप मांग्या धसीरे ॥ ४ ॥
सेवाराम वंदत शीसनाइ केरे,
संत चरण हृदेमें वसाइकेरे ॥ ५ ॥

(२२) पद राग सोरठ.

आनंदमें घर कीना, संतन आनंदमें
घर कीना टोढ.
त्रष्णा मेट भये बिन त्रष्णां, ज्ञान गुरुको चीना.
पांचोए चोर प्रबल घट भींतर, संगतिनाको छीना.
हरदम दममायें चैतन रेना, मन पवना वसकीना.
आपही आपसुं बोलणलागे, मीनको मारग लीना.
राजस तामस सात्विक उपर, चोथे पद लयेलीना.
चोथे पदमें अमृत वीयरी, प्रेम कटोरा भर पीना.

आठोए पहोर मगन मनमायें,परमार्थपर धीना.
सेवाराम हरि ह्रदेमें वसेया, रोंम रोम रंगभीना.

(२३) पद राग बिभास.

याचक जनद्वार आयो, स्वामी गुरुदेवा ।
कृपाके निधान देजो, चरन कमल सेवा. दोढ.
शांति सील सबर तोष, नम्रण खमण नेहा,
प्रेम प्रीत भाव भक्ति, मागत हुं एहा. ॥२॥
विवेक विचार सार, उतम बुधि जाचुं.
आर्यव अक्रोध मति, राम रंग राचुं. ॥ ३ ॥
शम दमादी दान देहूं, श्रद्धा सत भावा,
ज्ञान ध्यान अचल होए, आतम स्थित पावा ४
तेरे तो भंडार सुभर भरेहें दयाला,
सेवाराम चहत भीख, नजर कर निहाला. ५

(२४) राग एज.

मैं अनाथ शरन स्वामी, अपनो अब कीजो.
डूबत भव सागरमें भुजा पकड लीजो दोढ. १

राग द्वेष कंठाद्रे, मन मनोरथ नीरा,
तरंग अमित त्रष्णा पुनि आस वधत वीरा.॥२॥
वडवानल चिंता चित, भरम भमर होई,
अविद्या तहां उडता अज्ञान गाज सोई. ॥३॥
काम क्रोध लोभ मोह, मत्स्य भारी,
दंभ रंभ आदि आन, जंत हे अपारी. ॥ ४ ॥
श्रीगुरु दयाल मोहे, खेंची लीजो काढी,
सेवाराम पार करो, चरन नाव चाढी ॥ ५ ॥

(२५) राग एज.

श्रीगुरु कृपाल लाल, बालक हुं तेरा;
भावेत्युं पाल वृद, जानी निज चेरा. टेक. १
में चोराशी कूप गेडयो, लीनुं आय बुडिया;
लोभ सहित लार उपर, मुख पसारी जुडीया.२
तले काल व्याल पडयो, सूजत नही ओई;
राति दिवँस उंदर आयु, कतरतहे सोई. ॥३॥

एसें अंधेरे कूप माहि, काढो गुरु देवा;
प्रेम डोरी पाइ खेंची, लीजें तत खेवा. ॥ ४ ॥
चरन कमल सेवा द्रढ, दीजें मेरे स्वामी;
सेवाराम शीस नाई, करत हे नमामी. ॥५॥

(२६) राग एज.

ज्ञान नेन हीनमें, अंधलो दुखारी.
गढ चोरासीमाहि पड्यो,सूजत नहि बारी. दोढ.
भ्रमत भ्रमत अनेक जन्म, बादिहि बिलाने,
कोटरांग हाथ फेरी, द्वारतें भुलाने. ॥ २ ॥
मोक्षद्वार मनुष देह, प्रापति जब होई ।
खुजली विषयवाशना, सु लागी रही सोई. ॥३॥
सु विचार हाथ छोड, खननें मन दीनो ।
एसेंही उलंगी वल्यो, द्वार नाही चीनो ॥४॥
स्वामी गुरूदेव मेरे, ग्रही हाथ लीजें ।
सेवाराम शरन राख, चरन सेवा दीजें. ॥५॥

(२७) राग एज.

जगत बीज वासना, निवार गुरु मेरी ।
अबकी बेर राखो मोही, शरन ग्रही तेरी. टेक.
कबहू ले पताल धसी, कीयो नरकगामी ।
कबहू ले आकास उडी, स्वर्ग भोग हामी. ॥२॥
कबहूं नारी कबहुं पुरुष, वासना भ्रमाए ।
कबहू पसु पक्षी आदि, जोनीमें रमाए. ॥३॥
जेसें जंदा माकडो, पिनाई हाटहाटा ।
तेसें इन मोहि फेर्यो, विषय सुगम घाटा. ॥४॥
दीनके दयाल गुरु, बंधतें छुडावो ।
सेवाराम दासकों जुं, फांसको मिटावो. ॥५॥

(२८) राग एज.

सुनो पुकार श्रीगुरू, सहाय सदा कीजें ।
त्रष्णा निवारडाकनी, उधारि दास लीजे टेक.
त्रिलोकि राजपाई तोबी, त्रपति नहि होती ।
उंडो उदर अभर भूखि, नयनभरी जोती ॥२॥

सर्व जीव रांधनें पकावने लगाए,
सात सायर पान करे, तदपीन अघाए ॥३॥
लबरका करत जोभ, बहुरी चाप चाटे,
निचनि पिशाचनीसु मोहि हीय काटे. ॥४॥
संतोष दात भेजिके सु, पापनी प्रहारो,
सेवाराम शरन राख, ब्रदको संभारो. ॥५॥

(२९) राग एज.

उदे प्रताप आपनो, गुरू दयाल कीजे ।
महा विकट कटक काटि, जटक पटक दीजें दोढ
मोहराय कीजु फोज, महा विषम भारी ।
काम क्रोध लोभ आदि, बडे अहंकारी. ॥२॥
हरष सोक राग द्वैष, दंभ रंभ आदि ।
मत्सर उदमाद त्रिगुण, तापत्रै विषादी. ॥ ३ ॥
पक्षपात मान सान, आपदा अज्ञाना ।
अरीदलए घेरी आयो, ताहितें बचाना. ॥ ४ ॥

विवेक फोज साथ देहु, वेरी सब मारे ।
सेवाराम राम आंण, फेरी देउ प्यारे. ॥५॥

(३०) राग एज.

राख राख शरन मोहि, श्रीगुरु दयाला,
काल व्याल तें बचाइ, काटि माया जाला. दोढ.
अविद्यारूप होई मोहि, माया बंध कीनो ।
कर्मजाल मांहे घेरी, जीव नाम दीनो. ॥२॥
देहमानी आप मिथ्या, अहं बुद्धि धारी ।
मोह मगन होई रह्यो, विषेको विकारी. ॥३॥
जन्म जन्म छूटे इन, दीने बहु छोभा,
कालके अधीन पर्यो, तुटी गइ सोभा. ॥ ४ ॥
सदगुरु पुकार सुनो, तुमहो ज्ञान दाता ।
सेवारामकुं छोडाई, अबही करो त्राता. ॥५॥

(३१) राग एज.

अखंड बोध आतमा, अक्रय अनादी जोई, ।
सदचिद आनंद रूप, सदगुरू हे सोई दोढ. ।१

परंब्रह्म परमधाम, परमातम जानो;
परापार परम पुरुष, सतगुरू प्रमानो ॥ २ ॥
निर्गुन निराकार प्र , नामरूप न्यारा:
सोई गुरु सगुन बनि आये अवतारा. ॥ ३ ॥
निरंजन निरवान नाथ, कैवळ अविनाशी;
गुरु रुप देह धरी, प्रगटे सुखराशी. ॥ ४ ॥
जाको वेद नेती नेति, गावत शीरनामी:
सेवाराम सोइ गुरु, मेरे अंतरजामी. ॥५॥

(३२) राग एज.

श्री गुरु दयाळ कीजुं, आरती करीजें;
प्रेम प्रीत राख रिदे, भावसो भरीजें दोढ. ॥१॥
भाव थाळी माहि धरो, दीपक सुध भावा;
भाव घ्रित सीची बाटि, भावकी बनावा. ॥२॥
भाव चोखा चंदन भाव, भाव तिलक चरचो;
भाव धूप खेव आगे, भाव राख परचो. ॥३॥

भाव घंटा जालर भाव, भाव गीत गावो;
भाव चरन सेव स्वामी, भाव सीस नावो.॥४॥
भाव सकल सूजआनी, भाव करो पूजा;
सेवाराम भाव सुफल, अवर त्याग दुजा. ॥५॥

(३३) राग एज.

श्रीगूरुदेव बडे महाराजा,
लोक परलोक मेरी राखो लाजा. टोढ १
मेरे अवगुन चित नही आनीयें,
अपनो बिरद बडाई गनीयें ॥ २ ॥
जनम जनम बहू कर्म कहाये,
बकसी लेहू मोहि श्रीगुरूराये. ॥ ३ ॥
मात उदर सुत पाद चलावे,
सुत अपराध मन मात न ल्यावे ॥४॥
खाड सर्प जल अग्नितें राखे,
मात पिता सुत हित अभिलाखे. ॥५॥

तेसें पालहुं श्रीगूरू मेरा,
सेवाराम जनचेरनी चेरा. ॥६॥

(३४) राग एज.

सतगूरू साहेब स्वामी मेरे,
जाचतमें द्वारही तेरें. टोक. ॥ १ ॥
तो दर स्वाली बहू वरषाने,
आतम लाभ पाइ त्रपताने. ॥ २ ॥
जे जे आये गये नहीं खाली,
हरि हीरा निधी ताहि दिवाली. ॥ ३ ॥
जनम जनम तिन खाते तूटे,
धर्मराय के करजहुं छूटे. ॥ ४ ॥
खोलि दिलावो कृपा भंडारा,
भाव भक्ति निज नाम उचारा. ॥ ५ ॥
चरन कमल सेवा द्रढ दीजो,
सेवाराम शरने रख लीजो. ॥ ६ ॥

(३५) पद राग ढोलो.

आये संत साजनारे करके अपनी किरपा,
आया साजन आया. दोढ ॥ १ ॥

ब्रह्म विचारी परम विवेकी, भगवत पदके वासी;
निसप्रेही निहःकाम निर्मल,जगतें रहत उदासी;
सोल सबर के मंदिर सुंदर, परमानंद उर छाया.

शांत सरोवर दिलके दरिया, ज्ञानवान सुखदाई;
सबके मित्र सत्रु नहि जाके, धीरज उर अधकाइ;
भाव भक्तिके पातर पूरन, हरि चरने रंग लाया.

प्रेम महा रसपान कीयो हे, ऊतरत नाहि खुमारी;
आतम अनुभव के भंडारा, द्वतीया बुद्ध निवारी;
सकल शिरोमणी जीवनमुक्ता, वेद पुरान निगाया.

जाके दरस परस सुख उपजे, जनम मरण मिट जाए;
एसा हरिजन अंगन आया, भाग बडे दरसाए;
सेवाराम पद वंदत ताके, कर जोडी शिरनाया.

(३६) वधामणां. कच्छी भाषा.

मुंजे मनजा मानेल आया,
मुंजा सजण दिलजा मेडु आया ।
मुंजा सजण हुं बडा हरष वधामणा होजो.टोढ
राम पियारा संत सनेई रामा, अंदर बाहेर मिठा;
चित चोखा मन उजाला रामा,से मूं नेणे दिठा.
चङ्गा चङ्ग उनीजे चितमें रामा,रङ्गण रामजे रता;
तोड निभाइयन नेयडां रामा,वेद पुरान दीन पता.
आतमज्ञानी अनुभवी रामा, भाव भक्तिसें भीना;
निहकामी प्रेमी बडा रामा,जग बंधण सभ छीना.
लखण लाखीणे निपरीये रामा, दिस्यो दिस्यो
तिन जीआ;
सेवाराम रसधा प्रीतसें तिनजा पेर धोयेति पीया.

(३७) राग एज.

आंउं बल बलहारी वंञां मुंजा सजन,
आंउ सधके सोसो वारी;

मुंजा सजन हिलमिल गाओ नित सामया होजी.दो
मिल्या सेई मोहबतीराम, जिन दिठडे आंउ ठरां
मेर करे आया जडें रामा, पाप वेया सब परा.२
गालीयुं सुणाइयें उनपार जियुं रामा, छोडिनि
दिलज्युं गंढयुं;
पार लंघाइन पातणी रामा रेडे रसायिन मंढयुं.
सबनीजा मित्र साधु जन रामा,पर उपकारी बडा
पालक सरणे सदा सुरहा, कीय छडीनसें जडा.
पाण सुखी सुख दीन बेंहन रामा, दया रखन
दिल घणी;
सेवाराम एडा संत संनुरा,थियां तिनपेर निपाणी.

(३८) पद राग जोग.

मांवट संत अचन तां कुलबान वझां,
तां कुलबान वंझां तां सदकेती वंझां मांवट.टेक
आसणअखडय नमें उनके आंउंडीयां.
पेर धोयो प्रीतसां जे कर छाल पीयां;
चरखो चुर फुरजो भेरे भूअते भझां ॥ २ ॥

चलमुं चाक करे हुका हरष भरीयां,
भात्यन भात्यनजा खेंण खुश्यनसें करीयां,
खाराय खुश करे फोफल फोटासञां ॥ ३ ॥
पलंग बिछाय प्रेमजा, भावी असाण भला,
सुमारे सेजतें जव्हपं जुलजला,
ओर्या अंधरज्युं साणन गाल्ह्युं गञां ॥ ४ ॥
चित चोखा साधु अडा, लखणें लालता;
मोहबत मांण भर्या, नसे नाम मता,
सेवाराम डिसां तिनज्युं वाटुं अंजां. ॥ ५ ॥

(३९) राग एज.

मूंघर मेर करे इंधा संत जडे,
इंधा संत जडें वारो वर घोतडें दोढ. ॥ १ ॥
पाहें जीबानी जांणी कंधा बाज घणी,
जोडे जगाइं धम मुहीजा सधर घणी;
वेई वचन वठी धासे भाव वडें. ॥ २ ॥

मिठा समुद्र सदा, आइन सुभर भर्या;
जीथे कयोथा अचन सुकडाथीनें हर्यां,
भर भैरां नव सायो था छडी न अडे. ॥ ३ ॥
धिल भहार उदार सेइ संत वडा,
सरने पेइयन जा सेंथा खणनलडा,
तोड निभांई पाणसां सेइनी नगडे. ॥ ४ ॥
तिन जे दरसनजी आए मतलब हीए,
कडें आणे मेडींधो महाराज कीयें,
सेवाराम चवे डेजो संगसडे. ॥ ५ ॥

(४०) राग एज.

एडा संत मिलनडी जेडयुं आंउता कुलबानी. दोढ
ब्याइ बोडे हल्या पोता पद निरवानी ॥ २ ॥
विषय निरासी रहन उदासी,डिसो सब जग फानी;
गुण न गहीरा वड वडेरा सेमूं धिलजाजानी. ४
सेर सरमभर जलणां, सेवाराम सुखदानी. ५

(४१) राग एज.

जे कर छाल थीयाडे जेडयुं धर संतन पाणीयारी,
चंपी करीयां चरननजी डीयां अंगण बोआरी. २
चाकर उनजी आंउं थीयां, करीयां टेल संभारी ३
नरमल नेही राम सनेही, संत सदा गुलयारी ४
सदाये सुरहों संग संतन, सेवाराम बलेहारी ५

(४२) राग एज.

जागी जपज मुरार भलोयारवे,
दाढी तलब करे. टोढ.
ही अवसर फरि हथ न इंधे,
सुमरण कनेसे सुमरजथींधे;
संत सेवा उरधार भलोयारवे,
मनमें प्रीयता धरे. ॥ १ ॥
रोज वंञी सतसंगमें भाई,
वरताइंन तीय वरत सदाई;

छड मनजो अहंकार,
पलकमथी जपरे. ॥ २ ॥
समरथ संत वडा सुख दींघा,
ब्रह्मानंदमें तोके निधा:
विजतुं मथन भार भलोयारवे,
तुंही जो कारज सरे. ॥ ३ ॥
सेवाराम शरन प्रतिपाला,
संत सदामन परम दयाला;
ततीय वजंधाठार, भलोयारवे,
ठारी वरी नवरे. ॥ ४ ॥

(४३) राग एज.

सतगुरु संत रीजाय भलोयारवे,
मोघा वेंधे मरी. टोढ.
संतनमें आये राम मुरारी,
बिये ढुंढम मनतुं अहंकारी ।

प्रापतर्थींधेइतायें–भलोयारवे,
रमताराम हरी. ॥ १ ॥
मोक्ष इंछातोके होय अंधरमें,
हलो विंजतुं संतमंधरमें ।
भक्तिभाव बढाये भलो यारवें,
खटधे खेप खरी. ॥ २ ॥
संतवचन मुख बोलीयन जेइ,
जडपे गिन मन तुरत तुं तेई ।
निज आतम दरसांई भलोयारवे,
वेंधे द्वैत टरी. ॥ ३ ॥
सेवाराम संतन जे संगमें,
हथोहथ हरि इंधे बगमें ।
नफे कमी न काय भलोयारवे,
पोंधे ढार ढरी. ॥ ४ ॥

(४४) राग एज,

समजी करकां समाये,
  दीठे दुखडा गणां. दोढ.
कोटि कल्पतोके भुलंधे हुवडा,
  लख चोरासी जा फेरा पीयडा ।
वरी मरम घर आये भलोयारवे,
  रुलधे रइन मणां. ॥ १ ॥
काल माया हथ हाण विकाणे,
  वानु थीयडो तुं विगरज नांणे ।
हांणे धकाज मखाय भलोयारवे,
  भुगजें जींय चणां. ॥ २ ॥
जो तुं चाये आपना छुटकारा,
  सेव सदा संत हरिके प्यारा ।
हरि समरण चितलाये भलोयारवे,
  सुखसां लधीएरणां. ॥ ३ ॥

सेवाराम चवे मन मेरा,
राम राम जप सांज सवेरा ।
मिठडे राम थया भलोयारवे,
गोरज पाणपणां. ॥ ४ ॥

(४५) राग एज.

जीवन प्राण आधार भलो यारवे,
रमता राम रटो, दोढ.
सीकसची साण पेर भरीं धे,
तन मन राम चरणमें दींधे.
डस्यो डसणहार भलो यारवे, दीधे मोक्षपटो १
रखी दर साहेबजो भारी,
कर कारज साखी राम विहारी
तडें पंचघीसार, भलो यारवे, बाजी तुरत खटो
हाल हलीमीय सांण प्यारा,
ग्यान गरीबी पकड मिंजारा,

तो बेडा तुहीजा पार भलो यारवे,
दुरमति दुर सटो. ॥ ३ ॥
सेवाराम पलो गल पाये,
राम प्यारा तुं गिनज मनाये,
संतन साण गुजार भलो यारवे,
होथर मछड मटो. ॥ ४ ॥

(४६) राग एज.

कुडल नाए काकलरे आयल सचल राम सुंजातो
वो कुंडल नांये काकल दोढ ॥
भटक्यों भटकन भवमें सांई वे,
रातोएं दीयतां रूलनरे- आईयल ॥ १ ॥
संगन केयो साधजो सांईवो,
मोघन मिंजतां मिलनरे- आईयल ॥ २ ॥
रस न चख्यों रामजो सांईवो,
भोगन मिंजतां भूलनरे- आईयल. ॥ ३ ॥

सेवाराम चवे भर्म भूछ्या सांईवो,
के के सूर सलनरे— आईयल. ॥ ४ ॥

(४७) राग एज.

सतगुरु सार लधीरे आईयल वेंधे जमपुर वायौं,
वो सतगुरु सार लधी, दोढ ॥
रास दनाउं रामजी सांईवो,
अमर नाम निधीरे— आईयल. ॥ १ ॥
दुर केयां वो दिलमें सांईवो,कुड कपट कुबुद्धि.२
मेर केयों वो मुंमथे सांईवो, सीतल सीर थधी.३
प्रीत लखायों पांईजी सांईवो,
सेवाराम सुबुधिरे— आईयल ॥ ४ ॥

(४८) राग काफी.

वंजे जोबन पूर सरारह लेयो हिन जगमे,
अस्थीरं कोए न रेयो दोढ. ॥
करकी चंगाईयु मेट मंघायुं,
वाट वटाउडो तुंज अंईयें ॥ १ ॥

खणी गुण मुंचारण बंध गंठडी,
कम इंधे सा परलोक मए. ॥ २ ॥
आलस उंगन वार परे,
जप राम नाम सुखसार एही. ॥ ३ ॥
तोके जीय गुरुदेव चेयो कनमें,
तुंतां तींय करीयें त मोक्ष लयें. ॥ ४ ॥
सेवाराम शरणवो सतगुरु जे,
भवसागरमें तुंतां नवएं. ॥ ५ ॥

(४९) राग एज.

छाके भार उठाईयें खणी शिरतें,
छडे ढार एंकार विकार भरो-दोढ.
हिन देह अभीमान मुठा केतरा,
जेहि नरक वधा नकर्या नवरी. ॥ १ ॥
ओचो गात्र करे हलेया जगमें,
तेंजो काल भंजे कंध लाए घडी. ॥ २ ॥
कुड लुचाइयुं को करीयें तो,
मोंघा पवधे मारवरी. ॥ ३ ॥

अणहुंधो छो तुं आप सदाइ,
जते तिते पूरण आए हरी. ॥ ४ ॥
सेवाराम सुफल थींधो फेरो,
जे नाम जपींधे हुं थइ हरी. ॥ ५ ॥

(५०) राग एज.

हल साध संगत देह मोबतसें,
मन तोके भलाइ थींधी घणी. दोढ.
सुमत इछींधा कुमत कटिंधा,
अंधर दासिंधा धूंज धणी. ॥ १ ॥
संत वचन सत सत मंजजे,
असत वचनकी न चोंधाखणी. ॥ २ ॥
संत मोलमें तुं सुख पांइधे,
अखंड आनंद तोके इंधो भणी. ॥ ३ ॥
सेवाराम चवे सतसंगतमें,
निरमल मत तोजी इंधी छणी. ॥ ४ ॥

॥ इतिश्री सेवारामजीके पद सपूर्णम ॥



अथ श्री सद्‌गुरु स्तवनमाला प्रारंभ.

अनुष्टूप वृत.

चैतन्यं शाश्वतं शांतं, व्योमातीतं निरंजनं,
नादबिंदु कलातीतं, तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१॥
सर्व श्रुति शिरोरत्न, विराजित पदांबुज,
वेदांतांबुज मार्तंडं, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥२॥
अज्ञान तिमिरांधस्य, ज्ञानांजन शलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नम. ॥३॥
गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरुदेवो महेश्वर,
गुरु देवं परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नम. ॥ ४ ॥
ध्यान मूलं गुरु मूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदं,
मंत्र मूलं गुरु वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा. ।५।

अखंड मंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरं,
तद पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरूवे नम. ६
नगुरो रधिकं तत्वं, नगुरो रधिकं परं,
गुरो परतरं नास्ति, तस्मात् संपूज्यते गुरु. ७
अखंडानंद बोधाय, शिष्य संताप हारिणे,
सचिदानंद रूपाय, रामाय गुरुवे नम. ॥ ८ ॥
अज्ञान मुल हरणं, जन्म कर्म निवारणं,
ज्ञान वैराग्य सिध्यर्थं गुरु पादोदकं पिवेत्. ।९।

मंदाक्राता वृत.

ब्रह्मानंदं परम सुखंदं. केवलं ज्ञान मुर्ति,
द्वंदातीतं गगन सद्रशं, तत्व मस्यादि लक्ष्यं,
एकं नि·यं विमलम चलं, सर्वधी साक्षीभूतं;
भावातितं त्रिगुण रहितं, सदूगुरुतं नमामि १०

सोरठा—

वस्तु गते सो एक, यामे कछुए भिन नहि;
हरि गुरु संत विवेक, नाम मनोहर मुर कहे. ११

छंद नाराच.

हरि गुरुजु एक हे, विवेक सो विचारजे;
करी कृपा कृपालकी, जु आपको उधारजे ।
लहेजु भेव ज्ञानको, अज्ञान अंतरां तजे ॥
अखंडरूप आतमा, भलीजु प्रीतसों भजे. १२
न दूरहे नजीकसो, न नोल प्रीत रंगहे ।
न स्वेत श्यामको कहे, न बाल वृद्ध अंगहे ॥
न पारहे अपारको, न वैखरी पिछा नही ।
सदा असंग आतमा, परात पार मानही. १३
क्यो परात पारहे, लखेन कोइ भेवको ।
अनामयं अचिंतहे, द्रश्यो न जात देवको ॥
अगाघ संतको मतो,कह्यो न जात क्यों कहे ।
यथामती जु भाखहीं,लख्यो न जात क्यों लहे १४
गुरूजबे कृपा करे, तबेसु तत्वको लहे ।
मिटे अज्ञान आनको, दुरीतको दुरी दहे ॥

लखेजु साच सारको, असारको न धारही ।
ग्रहोजु ज्ञान केवलं, अज्ञानको निवारही. १५
लख्यो स्वरूप ब्रह्मको, चराचरंजु देखही ।
भिन्नाभिन्नं न भावहे, न काहुको उवेखही ॥
हरी हरीजु दर्शही, हरी विना न आनहे ।
हरी हरी जपे सदा, हरी हरी सु ध्यानहे. १६
हरी हरीजु बोलही, हरी हरी सु ध्यावते ।
हरी हरी बखानहे, हरी हरी सु गावते ॥
हरी हरी जु चिंतवे, हरी हरी सु मानते ।
हरी हरी जु वंदही, हरी हरी पिछानते. १७
अचींत रूप आतमा, स्वरूपसो धरे सदा ।
वृती अडोलवारधी, न काहुपें चले कदा ॥
तपे रवी निदानको, कछू न उष्ण लागही ।
मतो अपार ज्ञानको, जुताहि कोन त्यागही. १८

प्रमाणिका छंद.

न काम क्रोध लोभ हे, न सोभको असोभहे ।

न मोहद्रोहको करे, न भेद भावनां धरे. १९
सबेजु द्वैत त्यागही, नसंग दोष लागही ।
तजे न वेंद आम्नना, करे न मन कामना. २०

दोहा.

ज्ञानि गुरुको वंदीयें, जुगल जोरिके पान ।
रवि हरतज्यों तिमिरको, गुरु हरे अज्ञान. २१
प्रापति जे परिब्रह्मकी, जाके वचन तें होय ।
ताकी पदरज परसियें, गुरूसम आननकोय. २२
जिनहीके अज्ञानकरि, भासत माया भास ।
सत्यस्वरूपके ज्ञानतें, दीसे ब्रह्म विलास. २३
ज्ञानीके उपदेशतें, मिले परिब्रह्मराय ।
देवा गुरू धन धन्य हे, बंदन योग्य सदाय .२४
प्रथम करों करजोरिके, चरनकमलकी सेव ।
विघन हरे मंगल करे, जयजयजय गुरुदेव. २५
जो परही गुरु चरनमें, सो तरही तनखेव ।
सो फिर उदर न आवही, जयजयजयगुरुदेव. २६

गुरु बिन संशय ना मिटे, गुरुबिन मिलेन मेव।
गुरु बिन ज्ञानन उपजे, जयजयजय गुरुदेव. २७
ज्ञानी गुरू प्रसादतें, परी भजनकी टेव।
लागी लगन लोचन खुले, जयजयजय गुरुदेव.२८
परापार परिब्रह्म जे, अकल अखंड अभेव।
तिन वपुधरी करूणा करी,जयजयजय गुरुदेव.२९
धरे ध्यानगुरू देवको, ध्यावे अंग अवेव।
सो पावे महा मुक्तिसुख, जयजयजय गुरुदेव. ३०
भयो प्रकाशहिं ब्रह्मको, गयो सकल अहमेव;
अंतर उदयो आतमा, जय जय जय गुरुदेव ३१
गुरु सोई परिब्रह्म हे, गुरु निरंजन एव;
विहारी पद वंदन करे, जय जय जय गुरुदेव ३२

चोपाइ.

नमो नमो गुरुदेव गुसांई, मे आयो तुमरी सरनाई;
तातें करो विनय करजोरी,
नाथ यथामति सामृथ मोरी. ॥ ३३ ॥

पश्चिम खंड धरा कच्छ देश,
तहां सदगुरू देह धर्यो नरेश;
इमला गामसु थानकवासा,
जहां सुख पावे संत निवासा ॥ ३४ ॥
तहां प्रगटे गुरु साहेब देवा,
पूरन ब्रह्म अखंड अभेवा;
यादव कुलमें भये अवतारा,
जीव अनेक उधारनहारा. ॥ ३५ ॥
जन्म धर्यो जीवनिके कारन,
ताको सदगुरु आये तारन;
मात पिता कुल कुटुंब प्रवारा,
ताको सदगुरू तारनहारा. ॥ ३६ ॥
धन धन मात पिता धन बंधु,
जा घर प्रगटे करूणा सिंधु;
धनसो नगर वसेजा मांही,
तामें लोक वसे धनताही. ॥ ३७ ॥

धन धन शिष्य करे जो सेवा,
ताप र कृपा करे गुरुदेवा;
सेवक संग रहेसो धन हे,
जाको रातदिवस दरशन हे. ॥ ३८ ॥
धन धन भुमी जहां विचरही,
ता भुमिको पावन करही;
जो कोइ चंदन पुष्प चढावे,
तो प्रियता मनमें नहि आवे ॥ ३९ ॥
जो कोइ कुटील वचन मुख दाखे,
ताको दोष हृदे नहि राखे;
सीतल शांत सदा स्थिरमाना,
ब्रह्म विना देखे नहि आना. ॥ ४० ॥
ब्रह्मभाव करि ब्रह्म पिछान्यो,
ब्रह्मरू आप एक करि जान्यो;
तातें ब्रह्मरूप गुरु देवा,
अकल अखंड अनंत अभेवा. ॥ ४१ ॥

जो निर्गुन निर्भेद निरंजन,
सो मेरे गुरु भवदुःख भंजन;
एक अजन्मा जो अविनासी,
सो मेरे सदगुरु सुखरासी ॥ ४२ ॥
एक अखंडित अकल अमापक,
सोमेरे गुरु घट घट व्यापक;
जो चिद्रुप चले नहि डोले,
सो मेरे गुरु घट घट बोले. ॥ ४३ ॥
जो व्यापक जलथलकेमांहि,
सो सदगुरु दुजाको नाहि;
तातें एक आदि मध अंत,
सदगुरु आप स्वयं भगवंत. ॥ ४४ ॥
गुरु गोविंद गुरु सोइ रामा,
एकहि रूप धर्या दोइ नामा;
देवा सदगुरु साहेब मेरा,
भेटत चरन मिटया भव फेरा. ॥ ४५ ॥

देखी दीन दया मन आनी,
करी कृपाजन अपनो जानी;
जन विहारी रुगु महीमा गावे,
सकल संतको शीश नमावे. ॥ ४६ ॥

दोहा.

व्यापक सब घट आतमा, जाको आदि अंत;
सो मेरे उर नित वसे, जय जय गुरु भगवंत. ४७
जाको गावत वेद नित, अकल अखंड अनंत;
सो मेरे निज आतमा, जय जय गुरु भगवंत. ४८
जुठा कल्पित जिन विषे, सकल चराचर जंत;
समरस लेखे सबनमें, जय जय गुरु भगवंत. ४९
सब जड इंद्रिय जिनहिंतें, व्हे चैतन वरतंत;
सोइ प्रगट परमातमा, जय जय गुरु भगवंत ५०
खोज्या जिन खांखत करी, तिन पाया निज तंत;
पाया गुरु प्रसादत्तें, जय जय गुरु भगवंत. ५१

गुन निर्गुन नहि जिन विषे, सोई सब गुनवंत;
तबसो दुजा क्यः कहे, जय जय गुरु भगवंत. ५२
एसे आतम तत्वको, जो समजे सो संत;
सो उतम हे सब नितें, जयजय गुरु भगवंत. ५३
समजा समजी त्यां सम्या, भानुभाव माहंत;
विहारी वंदन योग्य है, जयजय गुरु भगवंत. ५४

चोपाई.

इनको पठन प्रात उठी करहो,
गुरुके चरन कमल चित धरहो;
यह गुरु महिमा सुने सुनावे,
ताको फेर जनम नहि आवे; ५५

कुंडलीया.

देवा यह वर दीजियें, उपजे आतम ज्ञान:
चरन तुमारे चित वसे, धरों निरंतर ध्यान.
धरों निरंतर ध्यान, अवर इच्छा नहि कोई;

दुर्लभ यह वरदान, दया करि दीजे सोई;
कहे विहारी करजोड, सदा संतनकी सेवा;
उपजे आतमज्ञान, दीजियें यह वर देवा. ५६

अथ परंपरा गुरु पद्धती—दोहा.

सदचिद् आनंदरूप निज, नामरूप जगद्वद;
प्रथम वस्तु निर्देश यह, मंगल निज सुखकंद.
द्वितीय वंदना रूपजो, मंगल शुभ निष्काम;
मन तन धन कुलबान करि, वंदो सदगुरु राम.
तृतीय मंगला चरणजो, स्तवन रूप पुनि होय;
गुरू सब नितें श्रेष्ट हे, गुरुसम आनन कोय.
मंगलत्रययुत नमन करि, सांप्रदाय अनुसार;
परंपरा गुरु पद्धती, ताको करों उचार.

गंभीर—चोपाई.

चिदानंद सत ब्रह्म—प्रगट परमातम देवा,
अकल अचिंत अनाम, अरूप अतीत अभेवा;
आपहि अपनो शक्ति, ताहितें जग उपजायो;

थिरचरकों आधार, श्रुति नारायण गायो. ६१
नारायणके नाभीकमल, प्रगटे चतुरानन;
ब्रह्मरूप प्रतिपादक, चारों वेद परायन;
तपोनिधी प्रगटे तिनतें, मुनि गुरु वशीष्ट;
ब्रह्मभूत करुणाके सागर, सकल वरीष्ट. ॥६२॥
शक्ति मुनि प्रगटे तिनतें, परमाद भूतज्ञानी;
चिदानंदमय समरस, महा मंगल विज्ञानी;
शक्तितनय महाराज, परासर तपके आगर;
ब्रह्मलीन मन सदा, सदोदी सुखके सागर. ६३
पुत्ररूप देह प्रगट भयो, तिनतें गुरु व्यास;
वेद मथन करी ब्रह्मसूत्र, जीनकीयो प्रकाश;
भारत इतिहासादिक, अष्टादसंहि पुराना;
भक्ति ज्ञान वैराग्य, धर्म वर्णाश्रम नाना. ६४
व्यासपुत्र योगींद्र विरागी, शुक महाराजा;
सप्त अहर्निमें कीनो, मोक्ष परिक्षत राजा;

शिष्य तिनहीके गौड, पाद आचार्य जानो;
प्रगट कीयो संन्यास, धर्म बहू दिन अलपानो.
योगेंद्र गोविंदाचार्य, तिनके शिष्य;
शरनागत जन मेटनहारे, भूत भविष्य;
तिनके शंकर आचार्य, सब जग सुखकंदा;
करि दीनो प्रस्थान, जक्तमें मेटयो द्वंदा. ६६

करी दिगनिमें विजय, बोध पाखंड उडायो;
एक ब्रह्म अद्वैत, सबल मत सबनि द्रढायो;
सूत्र श्रुति स्मृति वाक्य, व्यवस्था कीन यथार्थ;
गौन पदारथ तीन, मुख्य करी मोक्ष पदार्थ.
चार शिष्य तिनके, परमादभूत अजीत अकाम;
परब्रह्म लयलीन, कहुं अब तिनके नाम,

प्रथम पद्मपादाचार्य; तम भ्राति दिवाकर;
द्वितीयसु हस्तामलक, ब्रह्म अनुभव रत्नाकर.
तृतिय त्रोटकाचार्य, शरणांगत सुखदायक;
चतुर्थ वार्तिककार, तन्न जन भजवे लायक,

प्रगट भये तिनतें दसनामी, शिष्य धुरंधर;
दूर करन मारुत सम, जग तम मेघाडंबर. ६९
तीर्थाश्रम पुनि वनारन्य, गिरि पर्वत सागर,
सरस्वती भारती पुरि, महा बुधिके आगर.
सरस्वती कुल राम, अखंडानंद गूंसाई:
सकल चरन रज, वार वार वंदों शिरनाई. ७०
संप्रदाय अनुसार, प्रतापी संत महंत:
यथामति कछुं कहुं, कहत नहि आवे अंत;
नानक दादुदेव, अखाजी सुंदरदास,
नरहर मनहरदास, रजब निजरूप प्रकाश. ७०
निरंजनी भगवानदास, शुकदेव प्रतापी:
हरसुर पुनि सहदेव, स्वामी रणछोड़ अद्यापी,
हमला महु प्रगटे, गूरू देवासाहेब ज्ञानी;
भक्ति ज्ञान वैराग्य, युक्त अनुभवकी खानी.७२
तिनके जेठिराम, विहारी सेवाराम;
बुद्धिवान गूरू रामसिंहजी क्षेम अभिराम;

गूरू ईश्वर सुख धाम, काम क्रोधादिक टारे,
प्रबल बोध उर सोध, शिष्य भव फंद निवारे.
लालराम लयलीन, लक्षगुरू सेवामाही;
निरमलमती प्रवीन, संत प्रत्यक्ष लखाही;
गुरू मोहनसुखरूप, भूप वंदत जेही भारी;
संपूरण निज ज्ञान ध्यान पूरण सुखकारी. ७४
चार जुगनिके संत, जक्त महुं पर उपकारी;
वार वार वंदो तिनके पदरज शिरधारी;
नारायन गुरु संत भेद मतियामें नाही;
कथन मात्र त्रयनाम, वस्तुतें एके आही. ७५
एसो यह अद्वैत, ज्ञान सदगुरु तें पायो;
अहं ब्रह्मास्मी अनुभव, अति अडिग द्रढायो;
वेद सदगुरु अपनो, अनुभव तीन प्रातितो;
अवर युक्ति द्रष्टात, प्रक्रियाकी बहु रीती. ७६
करी विचार बापु, ज्यौं को त्यौं निजपद पायो;
निजानंदमय स्वसंवेद, चिदघन तन छायो. ७७

कुंडलीया.

नारायन गूरू संतपद, वंदो वारंवार;
तारक भवजल ऊदधिके, दायक शुद्ध विचार,
दायक शुद्ध विचार, सार परमातम प्रापक;
अगम अगोचर अकह,रहित जो व्याप्यरूव्यापक
जनबापु सदगुरू तें पायो, रहित त्रिविध हद;
वंदो वारमवार, संत गूरू नारायन पद. ७८
रामगुरू चित राखीये, नित तव पदको नेह:
सत चरचा सत संगति, जन्म करम कट जेह,
जन्म करम कट जेह,एह निज ज्ञान अखंडित;
श्रवन मनन अति सार, पार सब होगये पंडित,
बापु कहे तुम बाप, कृपाघन पुरनकाम;
नित तव पदको नेह, राखीये सदगुरू राम.७९

अथ श्रीकृष्ण छबि वर्णन.

दोहा.

अदभुत छबि आनंदमय, मेरे जीवन प्रान;
जन विहारो कर जोरी जुग,बहुर्यो करो बखान

बहुरी करों प्रभुकी छबि बरनन.
चित मेरो लागो जिन चरनन;
यथा योग्यहे यह छबी जेसें,
कही न जात कवि बरनत कैसें. ॥८१॥
श्याम स्वरूप सुभग तन सुंदर,
व्रजाधीस व्रज नट नागरवर;
चरनन करत चारू नेपुर धुन,
होत अधीर धीर यह धुन सुन. ॥८२॥
सुंदर जुगल जानु जंघावर,
कटितट कटिमेखला मनोहर;
अदभुत उदर बीच नाभी अध,
मनहुन भ्रमर परत जलके मध. ॥८३॥
बनि विसाल उर माल मनोहर,
शुभ गुन सकल सदन सुंदर वर;
अति कपोत करकंठ विशेषा,
ताबिच रुचिर बनी त्रंय रेषा. ॥ ८४ ॥

पुनि प्रचंड भुजदंड बाहुबल,
खेद लहे जिनतें केवल खल;
रत्नजडित कर कंकन राजे,
बाहन बाजुबंद बिराजे. ॥ ८५ ॥
अधिक अधिक पलपल छबि आनन,
मकराकृत कुंडल छबि कानन;
चारु चिबुक जुगदशन पांतिवर,
नवल नासिका शूभ अति सुंदर. ॥८६॥
गुलिक जुगल गंडस्थल सोहन,
मुसकन हसन मदन मनमोहन;
चंचल चपल चारुयुग लोचन,
परम दयाल दीन दुख मोचन. ॥ ८७ ॥
रुचिर भाल गौरोचन रेषा,
बनि लिलाट बिच बिंदी विशेषा;
पेंचदार पगरी शिर शोभित,
जिन अतिकीन मदन मन क्षोभित. ८८

मनि जड़ीत शिर मुकुट मनोहर,
ताबिच लसत ललित मुक्तावर;
अंग अंग अंबर वर भूषन,
जिनके दर्श मिटे सब दूषन. ॥ ८९ ॥
कोटि कोटि मंगलमय मूरत,
सुकृत कोटि सदन यह सूरत;
अति विचित्र लीला विस्तारन,
यदुकुल जन्म धर्यो जिनकारन. ॥९०॥
अजर अमर गुन अगुन गुसैयां,
सो प्रभु चारत बन बन गैयां;
श्रुतिपुरान कौ पार न पावे,
सो प्रभु ग्वाल निग्वालह सावे ॥ ९१ ॥
जिनकों योगेश्वर नहि जाने,
सो ललनारस रूप लुभाने;
जिनको शिव सनकादिक ध्यावे,
सो प्रभु ग्वाल निसो मिलि गावे. ॥९२॥

जिनकी महीमा कहीन जावत,
तिन प्रभुको व्रजनारि नचावत;
कान कान पुनि कहत कनैया,
ले ले नाम लडावत मैया. ॥ १३ ॥
निर्विकार निजरूप दिखावन,
व्रजविहरी कीनो व्रजपावन;
अति अगाध आशय दिखरायो,
किन किन विरले संतनिपायो. ॥ १४ ॥
दीन दयाल जानी यदुनंदन,
वार वार करहो पदवंदन;
दास विहारी जानि जन अपनो,
स्वामी दूर करों जग स्वपनो. ॥ १५ ॥

दोहा.

सुखद सिंधु अवतार सब, रत्नकृष्ण बलराम;
सो वसहो मम चितसदन, ध्यानयोग्य छबिधाम.

अथ चोवीस ईश्वरावतार नाम.

गंभीर चोपाई.

जय जय आदि वराह, मीन वामन मन्वंतर;
सनकादिक नरसिंह, देनवर ध्रुव धन्वंतर;
कपिल कमठ हयग्रीव, हंस हरि नर नारायण;
रूषभदेव रघुवीर, कृष्ण परिब्रह्म परायन. ९७
बुद्ध निकलंकी व्यास, प्रथु प्रथवीके इस;
फरसुराम अभिराम, यज्ञदत्त ए चोवीस;
तिनके पद अरविंद, वंद पुनि वंदन करहों;
तिनही चरनकी रेनु, सदा मेरे शिरधरहों. ९८
पाद किरेनु प्रासाद, खुले अनुभवके लोचन;
देख्या चैतन ब्रह्म, भया जिनतें भवमोचन;
अब न परों भवकूप, रूप निज अपना पाया;
देवा गुरु दयाल, दया करि मोहि बताया. ९९

अथ गुरुस्तुति.

सोरठा.

देवा गुरू दयाल, साहेब मेरे उर सदा ।
कर्म भर्म अरू काल, उड गये जिनके कवनते.
महा वाक्यको बोध, मोहि दीयो गुरू महेर करी;
लीयो स्वरूप हि सोध, भाग त्याग लक्षणा करी.

दोहा.

पतित उधारन महा प्रभु, दयासिंधु गुरूदेव ।
सेवाराम याचे सदा, चरन कमलकी सेव. १०२
चरनकमलको ध्यान प्रभु, दीजें द्रढ उहमाहि ।
याचक याचत श्री गुरु, भीख एहि तुम पाहि.
तुम दाता त्रय लोकके, सदगुरु सदा कृपाल ।
भाव भक्ति भीक्षा चहों, दीजें दीन दयाल.
भटकि भटकि देखे सबे, देवी देव अपार ।
ऊलटे बंधनमें परे, कोइ न छुडावनहार. १०५

भ्रमत भ्रमत आई पर्यो, सदगुरुतो दरबार ।
कृपाद्रष्टि कीजें प्रभु, पकरी उतारो पार. १०६
तुम बिन हमरो को नहि, अवर वसीळो कोय ।
तातें सदगुरु राखीयें, शरन आपनी मोंय. १०७
सदा हमारे चित वसो, बिसरो न एक लगार ।
तुमपें मागुं श्री गुरु, तुमरो ध्यान उचार. १०८
तुमरे यश नित गावहौं, तुमरे गुन अरु गीत ।
सदगुरु तुमरे पादसो, उमंगे नित नित प्रीत.
कुंजी इंडा ज्यौं तजे, आप वसे परदेश ।
सदगुरु एसें राखीयो, सुरतीमांज हमेश ११०
सुरति बिना निपजे नही, शिशू इंडा गलि जाय ।
तातें तुमहि दयाल गुरु, होजो सदा सहाय. १११
प्रार्थना यह जो करी, सदगुरु धरजो कान ।
सेवाराम प्रणवे सदा, मेरे जीवन प्रान. ११२

३०

देवा दरशन दिलहिमें, पल पल दीजे मोहि ।
एक निमिष नहि भूलहों, स्वामी छबिही तोहि.
सुरत तुमारी सदगुरु, छिन एक बिसरत नाहि ।
महाललित छवि लिखधरी, मन मंदिरकेमांहि.
देवा मेरी अरजी एक, सुनियो दे करि कान ।
नेह निभेसो कीजीयें, कृपासिंधु भगवान. ११५
वाणी वचन विलासतें, नहि पावे निज भेव ।
विहारी वस्तु तो मिले, कृपा करे गुरुदेव. ११६
सेवाराम सेवा संतको, करे जु मन चितलाई ।
सो पावे महा मुक्तिसुख, यामे संशय नाई. ११७
गुरुकृपा तें पाइयें, चरनकमलकी सेव ।
सेवाराम मुख बोलीयें, जयजयजय गुरुदेव.

अथ ध्वनि.

जय गुरु देवा जेठी राम,
रामसिंह गुरु देव नमाम।

हर सुरस्वामी रणछोड राम,
परमानंद गुरु एक अनाम ।
विहारी क्षेमगुरु सेवाराम,
गुरु ईश्वरस्वामी पुंजाराम ।
अखंडानंद जय जय राम;
सद्गुरु राम पूरन काम ।
दत्त दिगंबर जय रघुनाथ,
पूरण गुरुवर स्वामी श्री मुनिनाथ ।
हरि नारायण गुरु नारायण,
द्वैत निवारण परमानंद ।
सदा शिव शंकर, भक्तजन
प्रीय पंकज लोचन ।
नारायण तवदा सोहं,
बोलो श्री द्वारिकानाथकी जय.

ध्वनि.

जय गुरु देवा जय गुरु देव,
तव पद पंकज करू मन सेव ।
जय गुरुदेवा जय रणछोड,
तव पद नमुं हुं द्वे करजोड. (२)
जय गुरु देवा जेठीराम,
तव पद पंकज कर मन धाम (२)
जय गुरु देवा सेवाराम,
रामसिंह गुरु मोहनराम. (२)
जय गुरु देवा जय गुरु श्याम,
परम प्रतापी पूरनराम, (२)
जय गुरुदेवा विहारी क्षेम,
गुरु ईश्वरपद कर मन प्रेम (२)
जयगुरु देवा ईश्वरराम,
लालराम गुरु करुणां धाम (२)

अथ श्रीगुरु ईश्वररामजीकी स्तुति.

दोहा.

...चो, परमातम जगदीश ।
... शिष्यैः प्र... जय जय सदगुरु ईश.
मनहुं अपर बिराजही, रघुपति गुरु मुनीश ।
ज्ञान दान नित देत वर, जय जय सदगुरु ईश.
पूरण काम निःकाममति, समजही रंक महीस ।
ज्ञान भान मति मान अति, जयजय सदगुरु ईश.
सदा विचारत लक्ष जो, तजि भ्रम ईश अनीश ।
पुनि पुनि भाषत शिष्य प्रति, जयजय सदगुरु ईश.
दाता ज्युं नित मुक्तिके, करूणांकर कासीस ।
शरन हरन भव भीतिभल, जयजय सदगुरु ईश.
मोक्ष कीयो ज्युं ग्राहेत, हरि ततकाल करीश ।
कीनो बंध विछेद मम, जजजय सदगुरु ईश.

निगमागम जेहि गावही, मनपर कहत मुनीस ।।
सोई लखावत लक्षजो, जयजय सदगुरु ईश.
निगमागम सब जासु उर, बसत बदन बागीस ।
रिद्धि सिद्धि रहतजु पादतल [illegible]
करजोड. (२)
निजानंद निमग्नजो, [illegible] यान वरीस .
जग मंगल कर जासु द्रग, जयजय सदगुरु ईश.
सोहत सुठी वर सुभगपट, मनहु माया धीस ।
रमत रमावत आप सब, जयजय सदगुरु ईश,
शरनसुखद भयहरन भव, अघरन धरन गिरीस ।
अशरन शरन न अपरजन, जयजय सदगुरु ईश.
महीमा अगम अगाध अति, बरनि न सकत फनीश
साम कहा एकमुख मने, जयजय सदगुरु ईश.
ईश्वर ईश्वररुप होई, लीन मनुज अवतार ।
आरय वरतर पूज्यममः निज जनकीन उधार.

॥ श्लोकः ॥

समस्त संसार विहारहीनं,
वानंद सिंधौ च सदा निमग्नम् ।
शिष्यैः प्रशिष्यैपरिसेवीतांघ्रीं,
नमामितं सद्गुरु मीश्वराख्यम १

इतश्री ईश्वरविहारीविलास सदशास्त्रे
सदगुरु स्तवनमाला संध्यापाठ
सम्पूर्णम.

